जीवन चरित्र

महात्मा
श्री भक्त फूलसिंह जी

लेखकः—
विष्णु मित्र शास्त्री

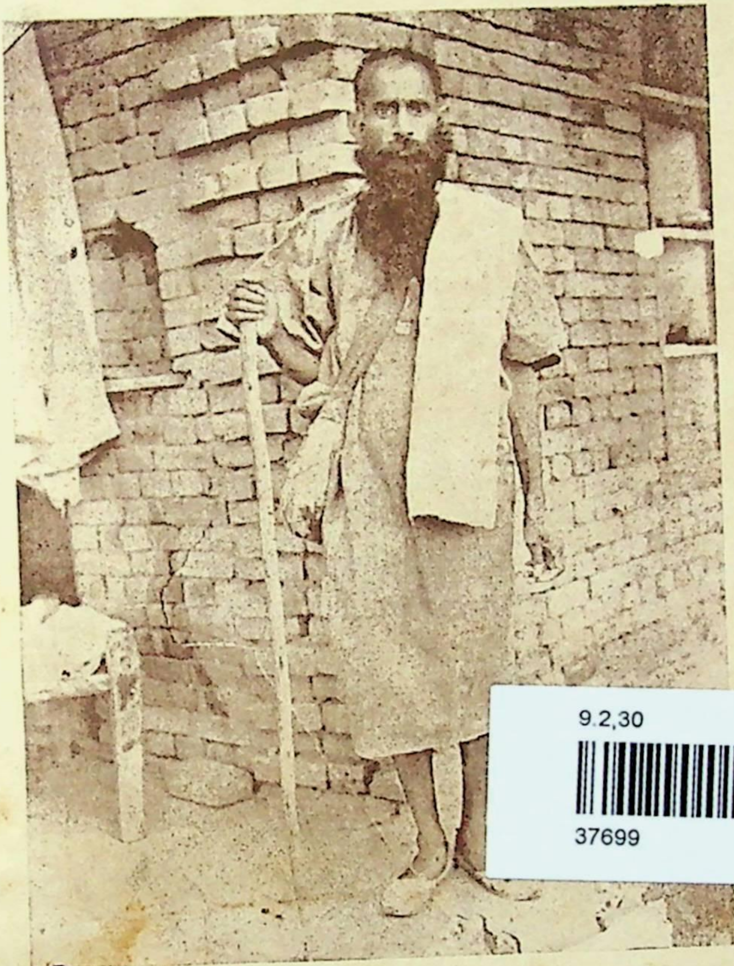
सं० २००७ प्रथम संस्करण १०००

तक)

।

मुद्रक—
रोहतास प्रिंटिङ्ग प्रेस, सावरकर रोड,
रोहतक।

अमर हुतात्मा



श्रद्धेय भक्त फूल सिंह जी

भूमिका

स्वर्गीय भक्त फूल सिंह जी की जीवनी की भूमिका लिखने के लिये चौधरी माड़ूसिंह जी एडवोकेट का रोहतक से पत्र मिला। और पश्चात् गुरुकुल भैंसवाल से उनकी जीवनी की मुद्रित प्रति भी मिली। उसे देख कर ही मैं यह शब्द लिखने लगा हूं।

भक्त जी के साथ कई काम मिल कर किये और स्वर्गीय भक्तजी से शतशः वार भेंट हुई। तथा अनेक विषयों पर विचार विनिमय हुआ। इस कारण मुझे जो यह शब्द लिखने को कहा गया मैं उन प्रेरकों का आभार मानता हूँ।

भक्तजी महता अमीचन्द जी श्री केवल कृष्ण जी आदि वत् थे। जिन्होंने अपने जीवन को आर्य समाज के रंग में रंगा और प्रथम जीवन को सर्वथा बदल दिया। श्री केवल कृष्ण जी ने तो स्वयं लिखा है:—

मेरी ज़िन्दगी ने अजब पलटा खाया !

भक्तजी ने पटवार से कार्य आरम्भ किया, यह सर्व विदित है कि पटवारी प्रायः घूस लेते हैं क्योंकि उनका वेतन निर्वाह योग्य नहीं। भक्त जी भी वैसे ही घूस लेने वाले पटवारी थे। जब हृदय में प्रकाश हुआ। तो घूस लेना ही नहीं छोड़ा अपितु अपनी भूमि बेचकर घूस का धन लौटाया यह भक्त जी की महानता को प्रगट करने की बात है। क्या घूस लेने वाले इनका अनुकरण करेंगे ?

भक्त जी ने लाला मुंशीराम जी (स्वामी श्रद्धा नन्द जी) की भांति युवावस्था में मांस भक्षण किया किन्तु सत्यार्थ प्रकाश का भक्षा सत्थं समुल्लास पढ़ कर इस निन्दनीय कार्य को सर्वदा के लिये त्याग दिया। क्या आर्य लोग इससे शिक्षा ग्रहण करेंगे ?

भक्त जी ने हरियाणा प्रांत में शिक्षा की न्यूनता को अनुभव करके उसके लिये सारा जीवन लगा दिया। जो सज्जन उस समय देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा से उदासीन थे। क्या वह महर्षि दयानन्द की दिव्य दृष्टि और भक्त फूलसिंह जी के इस कार्य को अपना कर इसे पूर्ण सफलता तक पहुचाने का यत्न न करेंगे ?

हरयाणा प्रांत में शुद्धि के मुख्य कार्य कर्ता स्वर्गीय चौधरी पीरुसिंह जी थे। उनके स्वर्गारोहण समय भक्तजी ने अपने मुखारविन्द से कहा था कि मैंने कई बातें पीरुसिंह जी से सीखी हैं उनमें मेरे विचार में एक शुद्धि भी है। क्या भक्त फूलसिंह जी के श्रद्धालु इस शुद्धि कार्य में यत्नवान न होंगे।

भक्त जी ने अछूतों के लिये आमरण अनशन किये इस समय सरकार ने अछूत पन का मूलोच्छेदन ही कर दिया है, तो भी केवल विधान से कार्य नहीं होजाता हरियाणा निवासियों को स्वयं भक्त जी का अनुकरण करके अछूत पन के रोग को भगा देना चाहिये। और सबके साथ सद् व्यवहार करना चाहिये।

भक्त जी ने घूस के विरुद्ध आंदोलन किया था इस समय भारत में यह रोग उस समय से अधिक है। इस लिये आर्य मात्र को इस रोग के उन्मूलन में पुरुषार्थ करना चाहिये।

भक्त जी का जीवन सरल था निराभिमान था हृदय में प्राणि मात्र के लिये प्रेम था दुःखियों के दर्द की आत्मा में पीड़ा थी। निः सहायों के लिये सहायता का भाव था प्रत्येक व्यक्ति को उनके इन सद्गुणों के धारण करने का स्वभाव बनाना चाहिये।

भक्त जी का जीवन चरित्र इससे पहले लिखा जाना चाहिये था। विलम्ब की बात छोड़ कर अब भी जो लिखा गया है। यह शलांघनीय है उनके जीवन से अनेकों को शिक्षा मिलने की आशा करनी ही चाहिये।

स्वतन्त्रानन्द } दयानन्द मठ
१८-१-५१

प्रारम्भिक वक्तव्य

आज से आठ वर्ष पूर्व सन् १९४२ ई० में हरियाणा प्रान्त में एक घटना सुनी गई जिसे सुनकर सारे हरियाणा निवासी नरनारी एकदम स्तब्ध हो गये। वह घटना थी कर्मयोगी महात्मा श्री भक्त फूल सिंह जी का कुछ गुण्डे यवनों द्वारा वध किया जाना। कर्ण-परम्परया ग्रामों में, समाचारपत्रों द्वारा नगरों में, यह दुःखद घटना बिजली के समान सर्वत्र फैल गई। जिसने भी यह घटना सुनी वह शोक से व्याकुल हुए बिना न रहा। बड़े २ धार्मिक एवं राजनैतिक नेता भी इस भीषण समाचार को सुनकर किंकर्तव्यविमूढ़ से हो गये। परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिसने भी प्रजा की सेवा की है, प्रजा के लिए अपने आपको अर्पित किया है, उसी प्रजा में उसके विरोधी भी पैदा हो जाते हैं। यह संसार का स्वभाव है कि किसी का अनिष्ट न चाहते हुए, सर्वदा निष्पक्ष रहते हुए भी मनुष्य के मित्र शत्रु उदा-सीन स्वयमेव पैदा हो जाते हैं। कहा भी है—

मुनेरपि वनस्थस्य स्वानि कार्याणि कुर्वतः ।
स्वयमेवोपजायन्ते मित्रोदासीन शत्रवः ।।

इसलिये इसमें आश्चर्य ही क्या है । जब दुर्जन अपनी दुर्जनता नहीं छोड़ता तो सज्जन अपनी सज्जनता क्यों छोड़े ? जो जिसका स्वभाव सिद्ध अभ्यास है वह उसके अनुसार आचरण करता है । यह सब कुछ सोचकर पक्के अनुभवी भर्तृहरि जी ने कहा—

न जाने संसारः किम्मृतमयः किं विषमयः ।

अर्थात् न मालूम यह संसार अमृत से भरा है कि विष से भरा है । दूर विदेश में जाने की ज़रूरत नहीं, यहीं अपने प्रिय भारत देश में कुछ उदाहरण देखिये जगद् विख्यात श्री स्वामी शङ्कराचार्य जिन्होंने कठोर ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके वैदिक शिक्षा के प्रचार के लिए अपना जीवन लगाया, उसका क्या परिणाम हुआ ? वे दो छद्मवेशी जैनियों द्वारा विष देकर मार दिये गये । भारतीय वैदिक संस्कृत साहित्य के पुनरुद्धारक आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द जिन्होंने अधः पतित आर्य जाति के अभ्युत्थान में महान् प्रयत्न किया, जिनका केवल भारत ही नहीं अपितु सारा भूमण्डल ही आर्य सिद्धान्तों के विषय में ऋणी है, उनको भी जगन्नाथ

नामक एक ब्राह्मण द्वारा विष देकर शान्त किया गया। ऋषि दयानन्द के परम भक्त निष्काम सेवा परायण आर्यपथिक पं० लेखराम जी, जिन्होंने आर्य सिद्धान्तों की व्याख्या द्वारा मौलवियों की मौलिक भूलें बताकर आन की आन में कुरान की शान मिट्टी में मिला दी उनको भी कपट वटुवेश में छिपे यवन वन दहन ने सहन न किया, झट विकट छुरे की झपट से जीवन लीला समाप्त करदी। आर्य पथिक के प्यारे सहारे, ऋषि दयानन्द के परम शिष्य, सामाजिक सुधार के अग्रणी वीर पुरुष हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जिन्होंने पिछड़े हुए अछूतों अशिक्षितों एवं यवनों की शुद्धि के लिए अपने जीवन की बाज़ी लगादी उनको एक नालायक अब्दुल रशीद की गोलियों का शिकार होना पड़ा। अभी हाल में राष्ट्र के कर्णधार समन्वयवादी कर्मयोगी स्वर्गीय श्री महात्मा गान्धी जी, जो मन वचन कर्म से साक्षात् सत्य अहिंसा की मूर्ति थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन नवजीवन सम्पादन द्वारा कारागृह में गुजारा, ब्रिटिश राज्यतन्त्र को प्रेमरज्जु से फटकारा, परतन्त्र भारत को स्वातन्त्र्य सुधाधारा से अनुप्राणित प्राचीन यशो भारत बनाकर सुधारा, उनको भी एक हिंदू कुलकलङ्क निःशङ्क भयङ्कर नरकिङ्कर नाथूराम गोडसे ने

प्रलयङ्कर गोली से ब्रह्महत्या कर देश का सत्यानाश कर दिया। यही बात हमारे चरित्रनायक महात्मा भक्त फूल सिंह जी के साथ भी हुई। जो भक्त सिंह के समान पराक्रमी होता हुआ भी फूल के समान मानवसुलभ कोमलता से विभूषित था, जिसका किसी के प्रति शत्रु भाव न था, जिसको दया अहिंसा क्षमा भक्ति सेवा शान्ति विद्या आदि मुलायम गुण विशेष प्रिय थे, जिसने अपने प्रान्त में अविद्यान्धकार को, भ्रष्टाचार को, रोकने का यथाशक्ति पूरा उद्योग किया, जिसके लिए अपना पराया सब समान थे, जिससे किसीको भय न लगता था और जो न स्वय किसी से भयभीत होता था, जिसमें दिव्य शक्ति का संचार मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए पर्याप्त था उसी भक्त महानुभाव का रातके काले अन्धेरे में कृत्रिम प्रकाश पहुंचाकर पाशविक वध करने के लिए कुछ हिंसक यवन सन्नद्ध होते हैं और वे तीन घातक गोलियों से निरपराध निष्कम्प ज्योति को निर्वाण कर अपनी क्रोधाग्नि शान्त करते हैं यह एक विचित्र दृश्य नहीं तो क्या है ? हां, उसी प्रजा में अपने सेवकों के भक्त भी निकल आते हैं। जो उनके जीवन से शिक्षा लेकर अपने जीवन को भी पवित्र बनाते हैं। बलिदान हुए महापुरुषों की जीवनगाथा लिखते हैं। दूसरों को

सुनाते हैं। इसलिये महापुरुषों का जीवन चरित्र लिखना एक बड़े पुण्य का कार्य समझा जाता है। क्योंकि भक्त लोगों का जीवन तो परोपकारार्थ होता ही है, उनकी मृत्यु से भी संसार का भला ही होता है यही संक्षेप से भक्त जीवन रहस्य है। इसी आधार पर गुरुकुल भैंसवाल की जनरल सभा ने यह निश्चय किया कि जिस महा पुरुष ने हमारे इलाके में २५ वर्ष पर्यन्त कठोर तपस्या करते हुए साधु वेश में बड़ी भारी सेवा की है उनका भी जीवन चरित्र लिखा जावे। जिससे आनेवाली सन्तानें उस महात्मा के गुणों को धारण कर सकें और प्रान्त में उन जैसे ही महापुरुष आगे भी पैदा हो सकें।

कई बार प्रस्ताव हुए। एक उप समिति भी बनाई गई जिसके ऊपर यह कार्य भार सौंपा गया परन्तु भक्त जी का जीवन न लिखा जा सका। अन्त में गुरुकुल सभा ने यह कार्य भार मुझे सौंपा। मैंने अपने आपको असमर्थ समझते हुए भी कर्तव्यवश सहर्ष स्वीकार कर लिया। परन्तु भक्त जी की जीवन घटनाओं का प्रायः कहीं भी ठीक ढङ्ग से संकलन न होने से मेरे लिये जीवन चरित्र का लिखना कठिन कार्य हो गया। मैंने यह निश्चय किया कि जैसे भी हो भक्त जी का जीवन एक

बार जनता के सन्मुख अवश्य प्रस्तुत करना ही चाहिए। यह सोचकर इसे लिखने का मैंने साहस किया। इस जीवन के लिखने में सबसे अधिक सहायता श्री पं० अभिनन्यु जी (श्री भक्त जी के दामाद) द्वारा संकलित घटनाओं से मिली है इसके लिये मैं उनको हृदय से धन्यवाद देता हूँ। अन्य सहायकों में विशेष रूप से मेरे अभिन्न मित्र बड़े स्नातक भाई विद्यानिधि जी शास्त्री व्याकरणाचार्य ने तो यथाक्रम विषयानुक्रमणी बनाने, घटनाओं के पौर्वापर्य विपर्यय को ठीक करने और भाषा को प्राञ्जल बनाने में बहुत अधिक परिश्रम किया है। यह जो कुछ बन पाया है सब उन्हीं का किया है। इस का श्रेय वस्तुतः उन्हीं को है। उन्हें धन्यवाद क्या दूं ?

मैंने भक्त जी के जीवन में बहुत सादी हिन्दी भाषा लिखने का प्रयत्न किया है जिससे थोड़ी हिन्दी जानने वाला पुरुष भी सरलता से समझ सके। किसी भी घटना को अतिरञ्जित करने का यत्न नहीं किया। स्वाभाविक ढङ्ग से सब कुछ लिखा गया है। साहित्यिक भाषा में लिखने से पुस्तक कठिन हो जाती। इस पुस्तक में आयुर्वेद शास्त्रोक्त मनुष्य के शरीर की बाल्य यौवन सम्पूर्णता किञ्चितपरिहाणि इन ४ अवस्थाओं के विभाग

से ४ अध्याय किये गये हैं । या यों समझिये धर्म अर्थ काम मोक्ष इस पुरुषार्थ चतुष्टय का क्रम रक्खा गया है । जिसमें हमारे चरित्र नायक के ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ और देहत्यागरूप सन्यास ये ४ आश्रम भी स्पष्ट हो जाते हैं । चार अध्यायों से पहिला एक अध्याय उपोद्घात रूप से लिखा गया है । इस प्रकार यह पञ्चाध्यायी यदि पञ्च भौतिक संघात का कल्याण कर सके तो मैं अपने को कृतार्थ समझूंगा । जीवन चरित्र के अन्त में मोठ गांव में हरिजनों के लिए कूंआ बनाने के समय किये गये भक्त जी महाराज के व्रत के दिनों के पत्र भी लिख दिये हैं जो कि विशेष महत्व रखते हैं । साथ ही भक्त जी की मृत्यु के पश्चात् कतिपय धार्मिक राजनैतिक नेताओं के पत्र तथा भक्त जी के भक्तों व शिष्यों के उद्गारों को भी स्थान दिया गया है ।

यह संक्षिप्त अथवा विस्तृत जीवन चरित्र आपके सामने है । इस में मेरी सफलता या असफलता का प्रश्न ही नहीं उठता । यह तो आपके पढ़ने की चीज है । मैं आशा करता हूँ कि आप इस पुस्तक को एक बार आद्योपान्त अवश्य पढ़ेंगें । इससे यह लाभ होगा कि भक्त जी के जीवन में घटी घटनाओं से आप अपने लिए

कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। मैंने तो उस महात्मा के यशोगान से अपने को पवित्र कर ही लिया। आपके सामने उनके जीवन चरित्र को प्रस्तुत करके अपना ऋण कुछ कम कर ही लिया। अब आपके लिए अवसर है। आइये 'जीवन चरित्र पढ़िये' पढ़कर लाभ उठाइये। भगवान करे इस पुण्य जीवन चरित्र से सब लोगों का कल्याण हो ॥ सत्या नः सन्त्वाशिषः ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिच्चापदापदम् ॥

—विष्णु मित्र विद्या प्रभाकर

—×÷÷÷×—



विष्णु मित्र (लेखक)

विद्या प्रभाकर, शास्त्री, साहित्याचार्य

प्रथम अध्याय

उपोद्घात

हरियाणा प्रान्त का संक्षिप्त विवरण

कथारम्भ करने से पहले यह उचित मालूम होता है कि हमारे चरित्रनायक की प्रिय जन्म भूमि हरियाणा प्रान्त के विषय में कुछ प्रकाश डाला जाय। क्योंकि इस प्रान्त की जो विशेषतायें हैं उनका ज्ञान होना भी आवश्यक है। इसमें जो महापुरुष पैदा हो गये हैं उनमें हमारे चरित्र-नायक भक्त फूलसिंह जी का भी विशेष स्थान है। इस लिये सर्व प्रथम अपने प्यारे हरियाणा प्रान्त का पर्यवेक्षण करते हैं।

सबसे पहले यह विचार उत्पन्न होता है कि इस प्रांत का नाम हरियाणा क्यों हुआ? मेरे विचार में पहले इस प्रान्त का नाम आर्य स्थान था। फिर शनैः शनैः अपभ्रंश होकर हरियाणा हो गया क्योंकि सिंध की ओर भी एक हरियाणा नाम का प्रान्त बतलाया जाता

है। वहां के निवासी किसी समय उस स्थान को छोड़कर चले आये। सुनते हैं महाराज दाहर के काल में उस हरियाणा में बसनेवाली आर्य जाति पर जुल्म किया गया जिससे तंग आकर वह उस स्थान को छोड़ यहां आ बसी और यह हरियाणा प्रान्त कहलाया। इससे कल्पना की जा सकती है कि पहले इस प्रांत का नाम आर्य स्थान था अब भी यहां के निवासियों के आचार विचार बहुत अंश में आर्यों के समान हैं। बल्कि यहां के लोगों को आर्य कहने में कोई अत्युक्ति न होगी। भारतवर्ष के सब प्रान्तों में घूमा हुआ कोई भी व्यक्ति हरियाणा प्रान्त को देख कर इसे आर्य स्थान कहने में संकोच अनुभव नहीं करेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

इसके साथ दूसरी कल्पना यह भी की जा सकती है कि ऋग्वेद में एक से मिलते जुलते ३ पद आते हैं—कौरयाण, तौरयाण और हरयाण। जैसे—

यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः॥(ऋ. ८-३-२१)

यहां पाकस्थामा कौरयाण नामक व्यक्ति विशेष जो कि गुण कर्म स्वभाव की योग्यता के आधार पर कोई भी हो सकता है, उसकी दानस्तुति की गई है। इसी लिये भगवान् यास्क मुनि (निरुक्त ५-३-१५) में इसकी यौगिक

व्याख्या करते हुए लिखते हैं—कौरयाणः=कृतयानः। जो यान बनाने वाला है वह कौरयाण कहाता है। इसी प्रकार स तौरयाण उप याहि यज्ञम् (ऋ. ३. ५१. ८) में तौरयाण की व्याख्या करते हैं-तौरयाणः=तूर्णयानः। जिस का यान शीघ्र चलने वाला है वह तौरयाण कहलाता है।

ऐसे ही—

ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे। रथं युक्त मसनाम सुषामनि। (ऋ. ८. २५. २८) में हरयाण की व्याख्या करते हुए लिखते हैं-हरयाणः=हरमाण यानः। अर्थात् जिसका यान स्वभाव से सुन्दर हो अथवा जो दूर तक यातायात करने वाला है वह हरयाण कहाता है। इससे हरियाणे की सुन्दरता पर तो प्रकाश पड़ता ही है साथ में उक्षण्यायने इस विशेषण से उक्षा अर्थात् सांडों से उत्पन्न गौ बैल घी दूधादि के प्राचुर्य की भी सूचना मिलती है। सायणादि के पृष्ठानुगामी पाश्चात्य ऐतिहासिकों ने जहां उक्षण्यायन सुषामा नामक व्यक्ति की कल्पना की है उससे तो हमारी कल्पना ही अधिक अच्छी है। विद्वान् लोग इस पर विचार करें। अस्तु.

संभव है उक्त वेदमन्त्र के आधार पर क्रिया शब्द होता हुआ 'हरयाण' शब्द कालान्तर में जाकर जाति शब्द

किं वा यदृच्छा शब्द हो गया और हरयाण से बिगड़ता २ हरियाणा कहलाने लगा। ऋ. (५. ५२. १७) में एक मन्त्र आता है—

यमुनायामधिश्रु त मुद्राधो गव्यंमृजे ॥ अर्थात् यमुना नदी के किनारे गोधन प्रसिद्ध है मैं वहीं का निवासी बनना चाहता हूं। मालूम होता है कि भारतीय यमुना नदी का नाम भी गोधन के कारण उक्तवेद मन्त्र के आधार पर रखा गया हो क्योंकि—

इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोम सचता वरुणाया। (ऋ. १०. ७५) इस नदीसूक्त में आये लगभग १८ नदियों के नाम पंजाब, यू० पी० बिहारादि प्रान्तों में प्रसिद्ध चले आ रहे हैं। जब वेद ही संसार के आदि पुस्तक थे तो उन्हीं से लेकर नदो पर्वत एवं प्रान्तों के नाम रखे गये हैं।

मनुस्मृति में इस प्रान्त को ब्रह्मर्षिदेश के नाम से स्मरण किया है। जैसे—कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पांचालाः शूरसेनकाः।

एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तरः ॥ मनु. अ. २ श्लो. २६। अर्थात् कुरुक्षेत्र। जिसे थानेसर भी कहते हैं। बाणभट्ट के संस्कृत ग्रन्थ 'हर्ष चरित' में वर्णित स्थाण्वीश्वर

नामक जनपद यही है किसी समय यह विस्तृत राज्य था मत्स्यदेश (जिसे आज वर्तमान सरकार ने भरतपुर धोलपुर अलवर आदि रियासतें मिला कर मत्स्यसंघ बनाया है। यहीं पर पाण्डवों ने बारह वर्ष वनवास करके एक वर्ष गुप्तवास किया था) पाञ्चाल (जि. बदायूं व फर्रुखाबाद) शूरसेन (जि. मथुरा आगरा आदि) ये ब्रह्मर्षि देश के नाम से प्रसिद्ध थे। यह सब मिल कर आर्य प्रान्त किंवा हरियाणा प्रान्त बनता है। इन स्थानों पर पहले ऋषि मुनियों की वेदचर्चा होती थी। सबको वैदिक शिक्षा दी जाती थी। पवित्र वेद वाणी का सन्देश इसी प्रान्त से सर्वत्र प्रसृत होता था जिससे सारा भारत देश पावन बना हुआ था। मनुस्मृति के आधार पर यह देश यज्ञिय भी कहलाता है जैसे—कृष्णसारस्तु चरति मृगो यत्र स्वभावतः

स ज्ञेयो यज्ञियो देशो म्लेच्छदेशस्त्वतः परः ॥ मनु. अ. २ श्लो. २३) अर्थात् जिस भूमि पर कृष्णसार मृग (कालेरंग का हिरण) निर्भय होकर इधर उधर स्वतंत्रता से छलांगें लगाता हो, जो स्वभाविक रूप से उसका निवास स्थान हो वह यज्ञिय देश कहलाता है। यज्ञमर्हति=यज्ञिय (पा. ५. १. १७) जहां पर यज्ञ आदि शुभ क्रिया अच्छी प्रकार हो सके उसे यज्ञिय कहते हैं। आज भी इसी प्रान्त में विशेष यज्ञसाधन पलाशादि वृक्षों, सस्य श्यामल जंगलों व काले मृगादि अहिंस पशुओं का बाहुल्य दीखता है।

संभवतः 'गोनर्द' नाम भी इसी से सम्बद्ध मालूम होता है। क्योंकि 'गोचर' शब्द के समान 'गावो नर्दन्ति यत्र स गोनर्दः' इस प्रकार अधिकरण घञन्त गोनर्द शब्द का अवयवार्थ इसी भाव का पोषक है। जहां पर गाय बैल सांड स्वतन्त्रता पूर्वक घास से तृप्त हो नाद करते हैं वह प्रदेश गोनर्द कहाता है। इस निर्वचन से स्पष्ट है कि भारत का यह प्रान्त दूध दही घी के लिये भीसदा प्रसिद्ध रहा है। महा भाष्य के टिप्पणीकार महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त जी ने तो गोनर्द को पर्वत विशेष लिखते हुए कल्पना की है कि कुछ लोग उसे काश्मीर देश में बताते हैं और कईयों के मत में वह जि. अयोध्या की तरफ है। कुछ भी हो, यदि हमारी कल्पना असत्य प्रमाणित न हो तो ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी में होनेवाले व्याकरण महा भाष्य के कर्ता पतञ्जलि मुनि भी इसी प्रान्त में पैदा हुए यह सिद्ध हो जाता है। क्योंकि वे बहुधा अपने आपको गोनर्दीय नाम से महाभाष्य में प्रकट करते हैं। जैसे गोनर्दीयस्त्वाह-अकच्स्वरौतु कर्तव्यौ प्रत्यङ्गं मुक्तसंशयौ। (महाभाष्य अ. १. पा १ आ. ६) गोनर्दे भवः=गोनर्दीयः एङ्प्राचां देशे (पा. १. १. ७५) से वृद्धसंज्ञा। वृद्धाच्छः (पा ४. २. १२४)।

इस समय तो साधारणतया जिला करनाल, रोहतक, हिसार, गुड़गांवा, सूबा देहली, मथुरा जिले का कुछ भाग और भरतपुर जींद आदि रियास्तों का समीपस्थ भाग हरियाणा प्रान्त के नाम से प्रसिद्ध है। अम्बाला जिले को छोड़कर प्रायः सारा अम्बाला डिविज़न ही हरियाणा कहलाता है। बहुत पहले संभव है इस प्रांत का अधिक विस्तार हो। इस प्रांत के पूर्व में भगवती यमुना नदी अपनी अमृतसम सरस विमल सलिल धारा से सलील कलकल निनाद करती हुई समस्त प्रांत को हरा भरा कर रही है। जिसका हरियाणा निवासी लोग जननी तुल्य सम्मान करते हैं। कतिपय श्रद्धालु तो अपनी श्रद्धानुरूप पत्र पुष्पादि यमुना माता की भेंट चढ़ाते हैं। यमुना के पवित्र तट पर ही भगवान् श्री कृष्ण चन्द्र ने बाल्य काल में अपनी मधुर बालक्रीडायें की थीं। जिनका मोहक वर्णन हिन्दी के प्रसिद्ध प्राचीन कवि सूरदास ने अपनी कविताओं में किया है।

प्रांत के पश्चिम में पटियाला संघ है जिसका निर्माण वर्तमान सरकार ने किया है। इस रियासतों के संघ में बड़े २ पराक्रमी राजा महाराजा हो चुके हैं जिनके यश से हरियाणे की शोभा द्विगुणित हो जाती है। उत्तर में जि० अम्बाला है जिसके पास ही सरहिन्द सूबे में श्री गुरु

गोविन्द सिंह के दीवारों में चुने गये दो वीर लड़के तत्का-
लीन मुसलमान बादशाहों के अमानुषिक अत्याचारों की
सूचना दे रहे हैं। दक्षिण में जयपुर जोधपुर उदयपुर
आदि राजपूत महाराजों की रियास्ते हैं जिन्होंने मुग़ल
काल में अपनी स्वतंत्रता एवं धर्म रक्षा के लिये तन मन
धन सब कुछ संग्राम की बलिवेदी पर चढ़ा दिया था।

हरियाणा प्रांत के अन्तर्गत ज़िला रोहतक में रोहतक
नगर बहुत प्राचीन है। कहते हैं इसे महाराज हरिश्चन्द्र
के सुपुत्र रोहिताश्व ने स्थापित किया था। इसी नगर में
खोकराकोट नामक स्थान है। जिसकी खुदाई सरकार की
ओर से सन् १९३९ ई० में की गई थी। जिसमें बहुत सी
सुवर्णादि धन सामग्री उपलब्ध हुई थी। किसी समय
रोहतक नगर इसी स्थान पर बसा हुआ था। तब इसका
विस्तार बहुत अधिक था। कुछ लोग इसे रोहिताश्वगढ़ न
मान कर इसका प्राचीन नाम 'रोहतीक' बतलाते हैं;
क्योंकि महाभारत में रोहतीक नाम स्पष्ट उल्लेख मिलता
है जैसे—

ततो बहुधनं रम्यं गवाढ्यं धन धान्यवत्।
कार्तिकेयस्य पयितं रोहतीक मुपाद्रवत् ॥

तत्र युद्धं महच्चासीच्छूरै मत्तिमयूरकैः (महा भारत सभापर्व
अ. ३२ श्लो.) अर्थात् जब महाराज नकुल राजसूय यज्ञ

दिग्विजय के लिए दिल्ली से पश्चिम दिशा में चलकर रोहतीक आये तब वहां मत्तमयूर गोत्र वाले क्षत्रिय राज्य करते थे, उनके साथ महाराज नकुल का युद्ध हुआ। यहां महा भारत के टीकाकार नीलकण्ठ ने रोहतीक नाम का पर्वत लिखा है जो विचारणीय है। सम्भव है किसी समय रोहतक नगर पर्वत की शक्ल में हो। इस पक्ष में महाभारत का प्रमाण उपलब्ध होने से 'रोहतीक' नाम ही युक्त प्रतीत होता है। रोहतीक से बिगड़ कर रोहतक हो जाने में तो कोई सन्देह नहीं रहता। जि० रोहतक में ही सोनीपत गोहाना और झज्जर ये तीन तहसील और हैं! कहते हैं सोनीपत को राजा सोनी ने और झज्जर को झज्जू जाट ने बसाया था। इस विषय में विशेष रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

ज़िला करनाल के इतिहास पर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि इसका प्रत्येक भाग ऐतिहासिक है। करनाल नगर को अङ्ग देश के राजा, दुर्योधन के मित्र महावीर अर्जुन के प्रतिद्वन्द्वी महाराज कर्ण ने बसाया है या उसके नाम से यह नगर पीछे से बसाया हुआ है ऐसा इसके नामकरण से स्पष्ट होता है। करनाल शब्द कर्णालय का अपभ्रंश है। कर्णालय का अर्थ है कर्ण का निवास स्थान। यह कल्पना निराधार नहीं कही जा

सकती क्योंकि करनाल नगर में ही कर्णताल नाम से प्रसिद्ध एक तालाब है। जो महाराज कर्ण का ही बनाया हुआ सम्भव हो सकता है। इसी ज़िले में इतिहास प्रसिद्ध पानीपत शहर है। जहां सन् ११९२ ई० में महाराज पृथ्वीराज चौहान तथा शाहबुद्दीन गौरी की भयङ्कर लड़ाई हुई। इसी नगर में सन् १५२६ ई० में मुग़ल बादशाह बाबर तथा दिल्ली के बादशाह इब्राहीम लोधी की लड़ाई हुई। अब भी इब्राहीम के साथ लगी उसके हाथी की कबर चलते हुए यात्रियों का ध्यान हठात् अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है। यहां 'काला आम' नाम से प्रसिद्ध स्थान सन् १७६१ ई० में हुए अब्दाली के साथ महाराष्ट्र के भीषण युद्ध की सूचना दे रहा है जो कि पानीपत से पूर्व की ओर लगभग दो मील है। इस प्रकार तीन स्मरणीय युद्धों का केन्द्र पानीपत शहर रह चुका है। मुसलमानों का परमपुनीत स्थल 'कलन्दर चौंक' पानीपत में ही है जिसमें कसौटी पत्थर के चार खम्भे लगे हुए हैं और जिसे देखने के लिए दूर दूर से मुसलमान लोग आते हैं। 'कलन्दर चौंक' हुमायूं बादशाह का बनवाया हुआ कहा जाता है। 'पानीपत' नाम कैसे पड़ा इस विषय में कोई प्रमाण न मिलने से कुछ नहीं कहा जा सकता। रोहतक के सोनीपत और करनाल के पानीपत में २६

मील की दूरी है। कुरुक्षेत्र तहसील भी जि० करनाल में है। कुरुक्षेत्र का पुराना नाम 'सीमन्तपञ्चक' है। यह बड़ा तीर्थ स्थान माना जाता है। सनातनी तो मानते हैं–कुरुक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपायते अर्थात् कुरुक्षेत्र सब तीर्थों में पवित्र एवं उत्तम तीर्थ है वहां पर किये हुए पाप का प्रायश्चित नहीं हो सकता। यह वही धर्म क्षेत्र है जहां कौरव पांडवों का जगत् प्रसिद्ध युद्ध हुआ। कुरुक्षेत्र के मैदान में भाई को भाई, पिता को पुत्र, मामा को भानजा और गुरु को शिष्य बिलकुल भुला चुका था। उस युद्ध में बड़े २ योद्धा विद्वान् केवल १८ दिन में ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर गये। आज उस प्राचीन युद्धस्थल को देखकर नाना प्रकार की विचार-धारायें उठती हैं। भगवान् श्री कृष्ण ने यहीं पर अर्जुन को सुन्दर गीता का उपदेश किया था। जो गीता समस्त वेदों व उपनिषदों का सारभूत संग्रह है जिसका संसार की वर्तमान सब भाषाओं में अनुवाद हो चुका है उस गीता की मधुर ध्वनि इसी धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र की भूमि में सुनाई दी थी जिस से अर्जुन का मोह नष्ट हुआ और पाप के विनाश के लिए धनुषबाण उठाये गए थे। जि० करनाल में ही कैथल तहसील है जो 'कपिष्ठल' का अपभ्रंश मालूम होती है। कपिष्ठल को पाणिनि मुनि ने (पा ८.

३. ६१) में स्मरण किया है। कपिष्ठल नामक संहिता को कृष्ण यजुर्वेद की एक प्रसिद्ध शाखा मुद्रित मिलती ही है। कैथल में भाई जी के नाम से प्रसिद्ध किसी सिक्ख के बनवाये हुए बड़े बड़े महल तथा एक विशाल तालाब अभी तक है। उन महलों में ही आजकल तहसील का कार्य किया जाता है।

जि० हिसार का नाम मुस्लिम नगर के आधार पर किसी मुसलमान बादशाह ने रक्खा ऐसा सुना जाता है। हिसार नगर में एक बहुत बड़ा दृढ़ किला है जो किसी प्रसिद्ध राजा का बनवाया हुआ है। इस ज़िले में भिवानी, सरसा, हांसी, फतेहपुर ये चार तहसीलें और हैं।

जिला गुड़गावां के विषय में ऐसा सुना जाता है कि महाराज युधिष्ठिर ने अपने गुरु द्रोणाचार्य को यह गांव भेंट में दिया था इसलिये पहले इस गांव का नाम गुरुग्राम था। बिगड़कर गुड़गांव या गुड़गांवा हो गया। इस जिले में रिवाड़ी, पल्वल, बल्लभगढ़, नूह, फ़िरोज़पुर झिरका ५ तहसीलें और हैं।

यह संक्षेप से हरियाणा प्रांत के विषय में कुछ वर्णन किया गया है कि क्योंकि अतीत काल के

गहन अन्धकार से आवृत्त इतिवृत्त का यथावत् वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। हरियाणे का इतिहास वीरता तप त्याग से भरा पूरा इतिहास है। वीरता के उदाहरण के लिए कौरव पांडवों का युद्ध ही पर्याप्त है। तपोभूमि कुरुक्षेत्र ही धर्म क्षेत्र बना हुआ तीर्थ स्थान है। हरियाणा निवासी लोग सज्जन सरल दानी तथा ऊंचे चरित्र के होते हैं। फैलती हुई पश्चिम शिक्षा के प्रभाव से ये बहुत कम प्रभावित हुए हैं। प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का अभिमान इनमें अभीतक विद्यमान है। सनातन वैदिक धर्म के विषय में अवान्तर मतभेद होते हुए भी अन्य भारतीय प्रांतों की अपेक्षा यहां के लोग अधिक प्रकाश में हैं। उदाहरणार्थ यहां की जनता पञ्चायती तरीके को बहुत प्रयोग में लाती है। जब किसी बात के निर्णय पर पहुंचना आवश्यक समझा जाता है तब गांव या शहर की पञ्चायत बुलाई जाती है। वह जो निर्णय कर देती है उसे सब स्वीकार करते हैं। वैदिक राजनीति भी यही सिखाती है—पञ्चजना मम होत्रं जुषध्वम् (ऋ. १०,५३, ४) अर्थात् मेरे इस मामले में पञ्चायत निर्णय करे। लौकिक कहावत भी है जहां पञ्च वहां परमेश्वर। भाषा के सूक्ष्म विवेचन करने पर यहां की भाषा कई अंशों में वैदिक संस्कृत से मेल खाती है। जैसे

यहां बोलते हैं 'वह मुझको सेधता है' इस वाक्य में 'सेधता है' का अर्थ है 'कष्ट देता है'। यह ठीक वैदिक भाषा का प्रतिरूपक है। वेद में आता है-क्रव्यादं सेध (यजुः अ १ म. १६) अर्थात् क्रव्यात अग्नि को तगकर दूरकर इत्यादि। यद्यपि अन्य प्रांतों की भाषा का मूल भी वेद में सम्भव है क्योंकि सब भाषाओं का आदि स्रोत वेद ही है, वैदिक कर्मकाण्ड के महान् विद्वान् भट्ट कुमारिल ने तो नीचीनवारं वरुणः कबन्धम् (ऋ.५.८५.३) आरङ्गरेव मध्वेरये थे (ऋ.१०,१०६,१०) इत्यादि मन्त्रों द्वारा लाट अफ्रीका आदि देशीय अपभ्रंश भाषाओं का मूल भी वेदों से निकाला है तो भी हमारे कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि हरियाणा प्रान्त की भाषा अवैदिक अनार्य अमधुर अनियमित असुन्दर किंवा उपहसनीय नहीं कही जा सकती। वह एक सीधी सादी भाषा है जिसके परुषा कोमला उपनागरिका रूप में अन्य भाषाओं की तरह तीन भेद होते हैं। जैसी यहां की भाषा सीधी सादी है वैसे यहां के लोग भी सीधे सादे हैं। ये बनावट से बहुत दूर हैं। सादगी से इनका प्रेम अभी टूटा नहीं है। प्राचीन सिद्धान्तों की परम्परा का पालन बराबर चला आ रहा है। अब कहीं २ मांस मदिरादि

का सेवन अनुषङ्गिक हो चला है फिर भी यहां के लोग स्वभावतः मनुष्य के अनुचित विकाश के विरोधी हैं। जब समय के प्रभाव से इस प्रान्त में भी आचारभ्रष्टता का प्रवेश होने लगा तो भगवान् की दया से हमारे चरित्र-नायक महात्मा भक्त फूलसिंह का पुण्य जन्मोत्सव प्रान्त के सौभाग्योदय के साथ हुआ। जिन्होंने अपने तप त्याग एवं प्रबल पुरुषार्थ से किञ्चित् पथभ्रष्ट होते हुए हरियाणे को फिर सन्मार्ग पर लाने का भगीरथ प्रयत्न किया।

—×※×※×※× —

द्वितीय अध्याय

सन् १८८५ ई० से १९०४ ई० तक

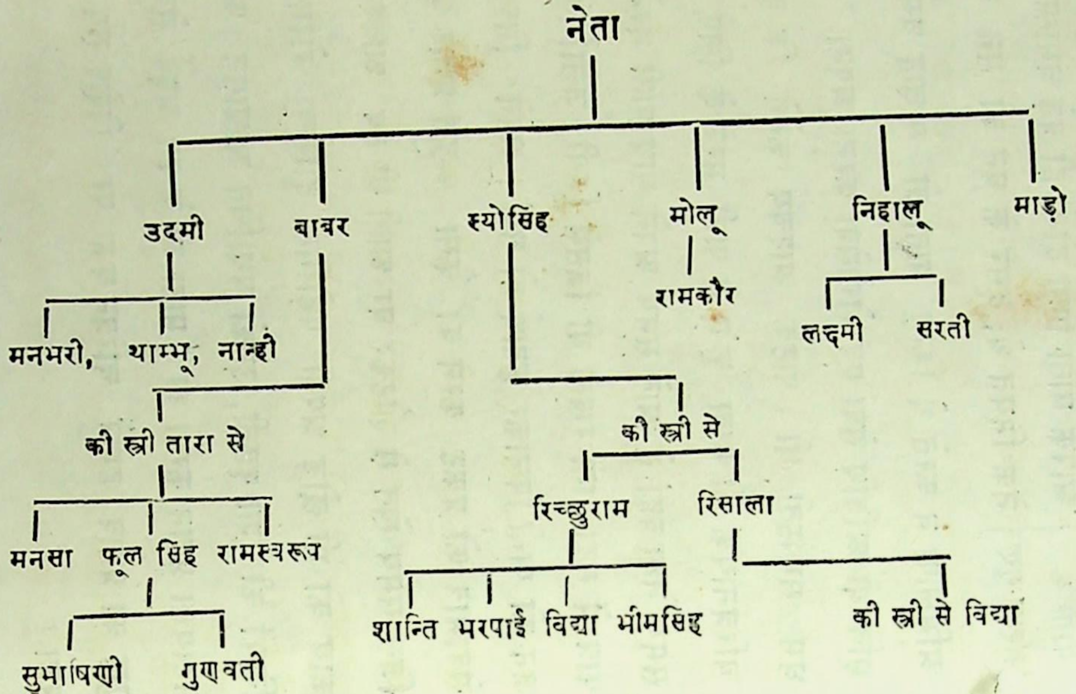
बाल्यकाल अथवा ब्रह्मचर्य आश्रम

जन्म नाम तथा गृह दशा — महाकवि कालिदास ने महाराज रघु के जन्म के समय कहा है– भवो हि लोकाभ्युदमाय तादृशाम् । अर्थात् रघु जैसे महापुरुषों का जन्म संसार के कल्याण के लिये ही होता है । ठीक उसी प्रकार हमारे चरित्रनायक महात्मा फूल सिंह का जन्म श्री लोककल्याण के लिए ही हरियाणा प्रान्त में प्रसिद्ध जिले रोहतक के माहरा गांव में २४ फर्वरी सन् १८८५ ई० को हुआ । आपका जन्म का नाम हरफूल था । आप के पिता की घर की दशा बहुत अच्छी न थी । वे एक साधारण जमींदार थे । ज़मीन की आय से घर का पालन पोषण कठिनता से चलता था यहां तक कि मुकद्मे के कारण उनको अपना घर भी बेचना पड़ गया था जिससे वे छप्पर डालकर गांव से बाहर रहने लगे थे । आपके पिता जी का नाम बाबर तथा माता जी का नाम तारा था । दोनों परस्पर प्रीतिपूर्वक गृहस्थ धर्म का पालन

करते थे जिससे उस कठिन काल को बड़ी सुगमता से व्यतीत करने में समर्थ हुए।

माता के विशिष्ट गुण आपके माता पिता दोनों ही बड़े धर्मात्मा तथा नेक नियत थे, दूसरे के धन की मन से भी अभिलाषा न करते थे किन्तु माता तो साक्षात् धर्म की मूर्ति थी अतिथि सेवा एवं रोगीसेवा करना अपना परम धर्म समझती थी। पाठक आश्चर्य करेंगे कि हमारे चरित्रनायक की माता कूंए से पानी भरने के लिए जाते समय तथा वहां से आते समय अपने साथ पानी भरने के पात्र में सदा पानी रखती थी जिससे किसी जलाभिलाषी जन को पानी पिलाकर कृतार्थ हो सके। अपने निष्काम सेवाभाव को प्रकट करने का कैसा अद्भुत प्रकार था। जिस समय खेत से लौटकर घर आती थी तब आवश्यक कार्य को भी छोड़ अपनी पड़ोसिन दुःखिया रोगिणी स्त्रियों की दशा पूछती, उनको यथोचित आश्वासन और सहायता प्रदान करती थी। माता जी के इस अपूर्व सेवा-गुण का प्रभाव हमारे चरित्रनायक पर विशेष रूप से पड़ा।

वंशावली


नेता
उदमी
बाबर
स्योसिंह
मोलू
निहालू
माड़ो
मनभरी, थाम्भू, नान्ही
रामकौर
लक्ष्मी
सरती
की स्त्री तारा से
की स्त्री से
रिच्छुराम
रिसाला
मनसा
फूल सिंह
रामस्वरूप
शान्ति
भरपाई
विद्या
भीमसिंह
की स्त्री से विद्या
सुभाषिणी
गुणवती

चौ० बाबर सिंह जी के मनसा, फूल सिंह, रिच्छुराम, रिसाला और रामस्वरूप ये ५ पुत्र हुए । उनमें रिच्छूराम को छोड़कर शेष दिवगत हो गये हैं । चौ० रिच्छूराम ने अपना घर का काम छोड़ १५ वर्ष तक निरन्तर गुरुकुल भैंसवाल की बड़ी भारी सेवा की । इसके लिए उनका जितना धन्यवाद किया जाय, थोड़ा है ।

शिक्षारम्भ व माता पिता का उपदेश — जब हमारे चरित्रनायक बालक फूल सिंह आठ वर्ष के हुए तब पिता जी ने माहरा गांव के समीपस्थ जूआं गांव में पढ़ने के लिए भेजा । वहां आपने तीन श्रेणियां बड़ी योग्यता से उत्तीर्ण कीं । जिनमें आप प्रथम व द्वितीय नम्बर पर रहे । अब आपने चौथी श्रेणी में प्रवेश किया । पांच महीने तक आप बड़े ध्यान से पढ़े । पढ़ाई का एक दिन भी व्यर्थ नहीं जाने दिया । अकस्मात् किन्हीं कारणों से आपका दिल पढ़ाई से एकदम उचाट हो गया । कई दिनों तक पाठ याद ही नहीं किया । सुनाना कैसा ? हर समय व्यर्थ बातें करने में समय नष्ट करने लगे । शनैः शनैः स्कूल में जाना सर्वथा छोड़ दिया । परन्तु आपके पिता जी को इस बात का ज्ञान न हुआ । आप घर भोजन करते, दिनभर अपने आवारा साथियों समेत

इधर उधर चक्कर लगाते, सायंकाल भोजन करके खाट पर पड़कर सो रहते यही आपकी दिनचर्या हो गई। इस तरह कुछ समय बीतने पर स्कूल के हैडमास्टर को आपके विषय में चिंता हुई। वे आपके पिता जी के पास घर आये और बोले कि चौधरी जी! आपने अपने पुत्र फूल सिंह को पढ़ने से क्यों हटा लिया? वह तो पढ़ाई में बड़ा चतुर व होनहार है। उसको छात्रवृत्ति भी मिल सकती है। हैड मास्टर के ये शब्द सुनकर आपके पिता जी ने सहमे हुए कहा कि मास्टर जी! मुझे बड़ा आश्चर्य है। क्या फूल सिंह पढ़ने नहीं जाता है? वह तो घर से प्रातः काल ही भोजन कर चला जाता है तथा सायंकाल को लौटता है मैं तो यही समझता रहा कि फूलसिंह पढ़कर आता है। आपने भी मुझे देर में सूचित किया। खैर मैं आज सायंकाल उससे पूछूंगा कि वह स्कूल में पढ़ने क्यों नहीं गया? सायंकाल होने पर आप अपने साथियों समेत घर पर आये। जब रोटी खा चुके तब पिता जी ने आपको समीप बुलाया और कहा कि बेटा! आज मेरे पास मास्टर जी आये थे, वे कहते थे कि फूल सिंह कुछ दिन से स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं आता है। क्या यह बात सच है? इस पर आपने पहले तो

उत्तर देने में आनाकानी की। फिर बार बार पूछने पर कोई उपाय न देख स्पष्ट कह दिया कि मुझ से पढ़ा नहीं जाता है और न ही मेरा चित्त पढ़ाई में लगता है इसलिये मैं अब पढ़ने के लिये स्कूल में नहीं जाऊंगा। आपके ये शब्द पिता जी पर बिजली से गिरे। उनको इन शब्दों से बड़ा दुःख तथा क्रोध हुआ। परन्तु वे क्रोध को दबा-कर कहने लगे प्रिय पुत्र! ऐसा क्यों कहते हो। तुम्हारा दिल पढ़ने में क्यों नहीं लगता। सुनो! विद्या पढ़ना बड़ी अच्छी चीज़ है। इससे मनुष्य बड़ा बनता है। विद्या पढ़कर लोग महात्मा हो गये हैं। विद्या पढ़ने वाला सदा सुखी रहता है। तुम्हारा दुर्बल शरीर है। खेती आदि का काम तुम से भली प्रकार न हो सकेगा। इस लिये तुम पढ़ा करो। नहीं तो पीछे पछताओगे। और मेरी बातों को याद करोगे। इन शिक्षाप्रद वचनों का भी उस समय आप पर कुछ प्रभाव न पड़ा। तब फिर पिता जी ने आपको समझाते हुए कहा कि अच्छा फूल सिंह! अगर तुम चौथी श्रेणी में उत्तीर्ण न हुए तो फिर चाहे न पढ़ना, तब तक तो पढ़ो। इन शब्दों से आपको कुछ सन्तोष मिला। आप स्कूल तो जाने लगे किन्तु पढ़ने में ध्यान न देते थे। परिणाम यह हुआ कि

जब चौथी श्रेणी की परीक्षा हुई तब जान बूझकर अनुत्तीर्ण हो गये। इससे पिता जी को बहुत दुःख हुआ। वही हैड मास्टर आपके पिता जी के पास आया और बोला चौधरी बाबर सिंह ! तुम्हारा लड़का फूल सिंह पढ़ने से छुटकारा पाने के लिए ही जान बूझकर अनुत्तीर्ण हुआ है इसलिये इसका इलाज करना अब आपके हाथ है। यह सुन पिता जी ने पढ़ने के लिये फिर बहुत समझाया परन्तु आप पर किञ्चित् भी प्रभाव न पड़ा। विवश हो पिता जी चुप हो गये। एक दिन पिता जी ने सब घर वालों को बुलाकर कहा कि फूल सिंह को अधिक से अधिक कष्ट दिया जाय जिससे यह पढ़ने के लिए मजबूर होकर स्कूल में चला जाय। सब की सम्मति से उसी दिन से जाड़े के दिनों में भी आपका दुपट्टा तथा जूतियां छीन लिये गये। अधिक से अधिक काम लिया जाने लगा। थोड़ा सा भी काम बिगड़ने पर खूब ताड़ना की जाती। गर्मियों में कड़ी धूप में भी काम लिया जाता। परन्तु हठी आप अपने हठ पर दृढ़ रहे। पिता जी कठोरता का व्यवहार करते २ तंग आ चुके थे। साथ ही आपके भविष्य के विषय में चिन्तित थे। एक दिन आप कोल्हू चला रहे थे। वहीं पिता जी तथा आपके बड़े भाई मनसा राम जी भी थे। उन्होंने देखा कि एक आदमी अपने

पुत्र को किसी अपराध के कारण सिर से उठाकर पृथ्वी पर पटक रहा है साथ ही डण्डों व थप्पड़ों से पीट भी रहा है। इस दृश्य को पिता जी ने आपकी शिक्षा का सुअवसर समझ बड़े पुत्र मनसाराम की ओर देखा और कहा मनसा ! तुम देख रहे हो न ? इस आदमी की तरह मैं भी फूल सिंह की ऐसी पिटाई करूंगा जिससे या तो यह एक दो दिन में पढ़ने चला जायगा या इसका वह हाल होगा जिसे यह जन्म भर कभी न भूलेगा। ऐसा कहते कहते पिता जी की आंखें क्रोध से लाल हो गईं और होठ फड़फड़ाने लगे। उस समय पिता जी की शक्ल को देखकर और उनके क्रोध भरे शब्दों को सुनकर आप अति भयभीत हो रहे थे। डर के मारे आपके प्राण निकले जाते थे। तब वहां से मौका पाकर आप अपनी स्नेहमयी माता जी के पास गये और पिता जी के क्रोध युक्त वाक्य माता के आगे कह सुनाये ! इस पर आपकी माता जी बोली बेटा फूल सिंह ! तुम्हारे पिता जी बड़े हठी और क्रोधी हैं। जिस बात पर वे अड़ जाते हैं उसको पूरा करके छोड़ते हैं। अगर मैं उनसे कुछ उल्टी सलाह दूंगी तो साथ में मेरी भी पिटाई करेंगे। इसलिये यदि तुम अपना भला चाहते हो तो चुपचाप पढ़ने चले जाओ। मैं तुम्हारे लिये घी मीठा आदि तरह २ की खाने पीने

की चीज़ दूंगी । तुम खूब खाओ पीओ और चित्त लगा-कर पढ़ो इसी में तुम्हारा भला है । इस प्रकार माता का आश्वासन पा अगले दिन प्रातः काल ही अपने पिता जी से आने वाली विपत्ति का विचार किया और भोजन खाकर चुपचाप तख्ती बस्ता उठा स्कूल की ओर चल दिये । वहां जा कर दत्तचित्त हो पढ़ने लगे । फिर कभी स्कूल से अनुपस्थित होने का नाम न लिया । जूआ गांव में चौथी श्रेणी उत्तीर्ण कर आगे पढ़ने के लिए महगौली मिडिल स्कूल में गये । वहां रहकर आपने छठी श्रेणी उत्तीर्ण की । सातवीं श्रेणी में प्रविष्ट होने पर आपकी आयु १५ वर्ष की थी ।

बाल्यावस्था के विशेष गुण — बाल्यकाल से ही आप में स्वभाविक प्रभाव तथा आकर्षण था जो कि समय समय पर प्रकट होता रहता था । जिस समय पड़ौसियों से कोई वस्तु मंगानी होती थी उस समय आपके पिताजी आपको ही वस्तु लाने भेजते थे । आपके पिता को यह पूर्ण विश्वास था कि फूल सिंह को कोई भी व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता है । होता भी प्रायः ऐसा ही था, जो वस्तु औरों के लिए दुर्लभ थी वह आपके लिए सुलभ थी गोस्वामी तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है—

सकल पदारथ हैं जगमाहीं ।
कर्महीन नर पावत नाहीं ।।

जब आप अपने साथियों के साथ स्कूल में पढ़ने जाते थे तब एक वृद्धा अत्यन्त स्नेह से आपको अपने समीप बुला आपके कपड़े में बंधी रोटियां खोलकर उनमें प्रायः घी रख देती थी क्योंकि वह आपके घर की निर्धनता को जानती थी। उस वृद्धा का यह विचित्र पुत्र प्रेम भी दर्शनीय था आपका कण्ठस्वर स्वभावतः मधुर था जिस समय आप गणित के पहाड़े बोलते थे उस समय स्कूल के पास से होकर जानेवाले लोग आपकी मधुर आवाज़ को सुनने के लिए चित्रित से खड़े हो जाते तथा अपने कार्य को भूल सा जाते थे। इसके अतिरिक्त गुरुभक्ति का गुण भी आपमें विशेष था। जिस समय गुरु जी किसी लड़के को गुरु सेवा का कार्य सौंपते उस समय सर्व प्रथम आप ही उस कार्य को करते थे। अपनी विचित्र बुद्धि से गुरु जी के आशय को स्वयं समझ कर उसे पूर्ण करने के लिये सर्वदा उद्यत रहते थे। आपका सिद्धान्त था—

आज्ञा गुरूणामविचारणीया ।। रघुः

अर्थात् गुरुओं की आज्ञा पर अधिक सोच विचार या ननु नच नहीं करना चाहिये। आज्ञा मिलते ही झट उसका

पालन करना चाहिये ।

सदाचारपूर्ण निर्भयता तथा वीरता— महरौली मिडिल स्कूल का हैडमास्टर मुसलमान था और आचार हीन था। वह समय २ पर आपको कभी पानी लाने के बहाने, कभी हुक्का भरने के बहाने बुलाता था। आप स्वभाविक सेवा भाव होने के कारण हैडमास्टर के सेवाकार्य को बड़ी श्रद्धा से करते थे। परन्तु हैडमास्टर के मन में कलुषित भाव एवं पाप पूर्ण विचार थे। वह शनैः शनैः अपनी दुर्भावनाओं को प्रकट करने लगा। अब आपको मालूम हुआ और आप घबराये। परन्तु वह दुष्ट किसी न किसी बहाने आपको बुला ही लेता था। आपने दूसरे मास्टरों के सामने हैडमास्टर की बातें बताईं, परन्तु जब किसी भी मास्टर का साहस उसका मुकाबला करने के लिये न हुआ तब अन्त में आपने निर्णय किया कि यह पान का बीड़ा मुझे ही चबाना पड़ेगा।' एक दिन की घटना है कि हैडमास्टर ने आपको हुक्का भरने के लिये अपने मकान में बुलाया। न चाहते हुए भी आपको वहां जाना पड़ा। जब आप वहां गये तो उस नीच ने अपने कमरे के किवाड़ बन्द कर लिये। अब व्याध से घिरे हुए मृग के समान आप इधर उधर देखने लगे। अकस्मात् आप की दृष्टि

उस मकान में रखी हुई एक लट्ठी पर पड़ गई । अब क्या था । आपने आव देखा न ताव । बस हैडमास्टर पर बरस पड़े । आपकी मार से वह नीच घबरा गया । उसे घरसे निकलना कठिन हो गया । आखिरकार दौड़ कर किवाड़ खोलने लगा परन्तु आपने लाठियों से उसकी ऐसी सेवा की कि वह जैसे तैसे जान बचाकर उस मकान से निकल भागा । तदनन्तर आपने कुछ विचार कर उस मकान के किवाड़ बन्द कर लिये और अन्दर चुपचाप बैठ गये । थोड़ी देर बाद कुछ मास्टरों के साथ नगर के प्रतिष्ठित पुरुष वहां पर आये और आपको किवाड़ खोलने के लिये कहा परन्तु आपने कुछ भी उत्तर न दिया और अन्दर ही चुपचाप बैठे रहे । अन्त में प्रतिष्ठित लोगों के पूर्ण आश्वासन देने पर आपने किवाड़ खोल दिये । जब लोगों ने आपसे पूछा कि क्या बात थी तो आपने सारा वृत्तान्त सच २ कह सुनाया । कुमारावस्था में ही ऐसे उच्च चरित्र को देखकर लोगों ने दांतों तले अंगुली दबाई और आपकी भूरि २ प्रशंसा करने लगे । इधर वह हैड-मास्टर इस चिन्ता में था कि इस घटना का कैसे प्रतिकार किया जाय । कैसे इस से छुटकारा मिले । लोग क्या कहेंगे, कैसे मान रक्षा हो और कैसे इस बालक को ही इस अपराध में फांसा जाय इत्यादि । अन्त में सोच विचार

कर उसने नगर के धनी मानी प्रतिष्ठित पुरुष इकट्ठे किये। किसी के आगे हाथ जोड़ कर किसी को बहकाकर किसी को कुछ देकर अपने वश में कर लिया। संसार का इन्द्र-जाल देखिये जो सज्जन कुछ देर पहले उस बालक की प्रशंसा कर रहे थे वे ही अब उसके विरोध में हैडमास्टर की ओर हो गये। भर्तृहरि जी ने ठीक कहा है—

संसारेपि सतीन्द्रजालमपरं यद्यस्ति तेनापि किम् ॥

अर्थात् यह संसार ही बहुत बड़ा इन्द्रजाल है। यदि इस से अलग भी कोई इन्द्रजाल है तो हुआ करे, हमारे लिये तो यही बड़ा इन्द्रजाल है। अस्तु अन्त में आपको बालक समझ कर डराया गया। एक सभा की गई जिसमें आपको अपराधी घोषित कर बारह बेंत लगाये गये तथा स्कूल से निकाल दिया गया।

यह एक असाधारण घटना थी जिसमें एक निर्दोष निष्पाप बालक को दबाया गया था और दोष छुपाया गया था। इस अन्याय से पीड़ित हो आप स्कूल से रोते बिलखते अपने गांव में आये और अपने पिता की गोद में पड़कर फिर फूट २ कर रोने लगे। पिता भी आपको रोते देख अपने को न रोक सके। आंखों में आंसू भर कर भर्राई हुई आवाज़ में बोले-पुत्र ! कहो क्या बात है ?

क्या हुआ ? किसने तुमको मारा ? किस दुःख में तुम रो रहे हो ? इतना सुन आप और ज़ोर २ से रोने लगे। रोते २ आपकी हिचकियां बंध गईं। अन्त में पिता जी के बार २ आश्वासन देने पर आपका रोना बन्द हुआ। आपने सारी घटना विस्तारपूर्वक पिता जी को कह सुनाई। आद्योपान्त सारी घटना सुनकर पिता की अश्रुधारा बह चली। फिर क्रोधाग्नि भड़क उठी। मुख लाल हो गया। बोले-पुत्र ! मैं तुम्हारे साथ कल ही उस नीच हैडमास्टर के पास जाऊंगा। उसके किये का फल उसे अच्छी तरह चखाऊंगा। तभी मुझे शान्ति मिलेगी। तुम रोओ मत अब भोजन कर विश्राम करो। अगले दिन भोजन करने के बाद दोनों पिता पुत्र महरौली पहुँचे। वहां जाकर नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को इकट्ठा किया और उक्त घटना सुना कर कहा कि क्या यही न्याय है ? क्या यही शिक्षा है ? क्या पंचों का यही धर्म है ? एक अबोध बालक के साथ इतना अन्याय करके भी आप लज्जित नहीं हुए। मैं इस मामले को सहन नहीं कर सकता। इसे अदालत में पेश करूंगा। जब आपके पिता जी आवेश में आकर इस प्रकार बातें कह रहे थे तब वह नीच मास्टर भय के मारे कांप उठा। उसने नगर के प्रतिष्ठित पुरुषों से क्षमा दान दिलाने की प्रार्थना की। प्रतिष्ठित

पुरुषों के कहने से उस मास्टर ने जब पिता जी से अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी तो पिता जी ने उसे क्षमा कर दिया। पाठक ध्यान दें एक सातवीं श्रेणी का छोटा बालक किस प्रकार अपने सदाचार की रक्षा का दृष्टान्त उपस्थित करता है। महरौली से सातवीं श्रेणी का प्रमाण पत्र लेकर पिता जी ने आपको खरखंदा मिडिलस्कूल में प्रविष्ट कराया। वहां का हैडमास्टर भी मुसलमान था। उसको भी महरौली वाली घटना का पता लग गया था। इस लिये वह नीच भी आपको अकारण 'फूलू बदमाश' नाम से पुकारता था। एक बार वर्षा की अधिकता के कारण स्कूल के कूंए का पानी खराब हो गया था। कुछ स्कूल के विद्यार्थी उसे बाहर निकाल रहे थे। पानी निकालते समय कूंए में एक सांप दिखाई दिया। सारे बालक डर कर भागे और हैडमास्टर के पास जा कर बोले हैडमास्टर साहब! कूंए में सांप है, पानी कैसे निकालें। यह सुन कर हैडमास्टर जल्दी वहां आया और सांप को देख कर बोला अरे लड़को! उस फूलू बदमाश को लाओ जो बहादुर बना फिरता है। आज मैं उसकी बहादुरी देखूंगा। लड़के दौड़ कर आप के पास गये और आप को सारी घटना कह सुनाई। आप इतनी बातों को कब सहने वाले थे। जल्दी दौड़ कर कूंए पर गये, वहां सांप

देखकर बोले-हैडमास्टर जी ! आप एक टोकरी रस्सी से बंधवा दें । मैं उसमें बैठ जाऊंगा । मेरे हाथ में दो हाथ लम्बी एक लट्ठी दे दें और मुझे कूंए के अन्दर फांस दें फिर मैं सांप को ठीक कर लूंगा। आपके कथनानुसार वैसा ही किया गया । आप कूंए में घुसे। सांप को लाठी से मार कर सबका भय दूर किया । यह थी निर्भयता एवं वीरता जो बचपन से ही आप में प्रकट होती थी। आपके इस कार्य से सब लड़के बहुत प्रसन्न हुए । हैड-मास्टर ने तो आश्चर्य चकित हो आपको बहुत धन्यवाद देते हुए कहा—फूलसिंह ! तुम वास्तव में वीर बालक हो । भगवान् तुम्हें सफल करे ।

परीक्षा उत्तीर्ण करना— इस प्रकार खरखौदा में रहते हुए अपने उच्च गुणों का परिचय देने के साथ आपने आठवीं श्रेणी उत्तीर्ण की और वहां से मिडिल श्रेणी का प्रमाण पत्र प्राप्त किया । अब आपने पटवार की परीक्षा देनी चाही । उसके लिये आपने जि० करनाल के खलीला गांव में विवाहित अपनी बूआ के यहां ठहरना उचित समझा और तहसील पानीपत में वे दो वर्ष रह कर जि० करनाल से ही पटवार की परीक्षा उत्तीर्ण की ।

तृतीय अध्याय

सन् १६०४ ई० से १६१८ ई० तक

यौवन काल अथवा गृहस्थ आश्रम

नवयौवनारम्भ] धनिनोपि निरुन्मादा युवानोपि न चञ्चलाः ।
प्रभवोप्य प्रमत्तास्ते महामहिम शालिनः।।

ऊपर लिखे श्लोक में कितनी सुन्दर विशेषोक्ति है कि महापुरुष धनी होकर भी उन्माद रहित, नौजवान हो कर भी चञ्चलता रहित और प्रभु होकर भी प्रमाद रहित होते हैं। जिस प्रकार बालसूर्य के नूतन रश्मिस्पर्श से विमल कमल दल पुलकित होकर विकसित हो उठता है तथा अमन्द सुगन्ध से प्रत्येक भाग को सुवासित कर देता है उसी प्रकार हमारे चरित्रनायक ने जब यौवन में प्रवेश किया तब उनका प्रत्येक अङ्ग सौन्दर्य से भरपूर हो चला जो देखने वालों को हठात् अपनी ओर आकृष्ट करता था। वैसे आपका शरीर प्रकृति से ही सुन्दर था फिर यौवन वन में प्रवेश करके तो अत्यधिक अङ्गलावण्य निखर उठा। महाकवि ने ठीक ही कहा है —

केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः किं पुनस्त्रिदशचाप लाञ्छितः ॥ रघु; । अर्थात् वर्षाकाल में नया उठता हुआ बादल स्वतः ही सुन्दर होता है फिर इन्द्र धनुष के संयोग से तो उसके सौन्दर्य का कहना ही क्या ?

गृहस्थ प्रवेश व पटवारी बनना उस यौवन के बसन्त काल में आपने भी प्राचीन ग्रामीण प्रथानुसार गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया । इस समय आप की आयु २० वर्ष के लगभग थी । आपकी धर्मपत्नी का नाम धूपा देवी था । जो पतिव्रत परायण एक साध्वी स्त्री थी । आपके संपर्क से उस साधारण ग्रामीण स्त्री में भी असाधारण गुणों का प्रवेश होने लगा । आपकी पत्नी भी आपके सेवा भावादि पवित्र दिव्य गुणों से अलंकृत होकर देवी बनगई, आपका परिवार क्या था, एक देवगृह था । 'देवी भावं गमिता परिवार पदं कथं भजत्येषा' ॥

सन् १९०४ में माल विभाग की ओर से सर्व प्रथम आप पाथरी व सींख गांव में अस्थायी पटवारी नियुक्त किये गये । उसके तीन वर्ष बाद सन् १९०७ में स्थायी पटवारी बनकर उरलाना गांव में आये । वह गांव मुसलमान राजपूतों का था । इस गांव में आपने अपना काम बड़ी दृढ़ता तथा सचाई से करना आरम्भ किया ।

जिस समय पटवार के या अन्य समाज के कार्य में आप संलग्न होते थे तो खाना पीना सोना तक भूल जाते थे।

आर्यसमाज का सत्संग — सन् १६०८ की बात है, इसराना निवासी पटवारी प्रीतसिंह आपके परम मित्र थे। एक बार पानीपत में पटवार के किसी विशेष कार्यवश आप दोनों को तीन मास पर्यन्त लगातार इकट्ठा रहना पड़ा। पटवारी प्रीतसिंह आर्यसमाजी थे वे समाज के साप्ताहिक सत्संग में जाया करते थे। वे आपके लिये आर्य समाज के भजनों की पुस्तकें लाते और आपको आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में चलने के लिए प्रेरित करते। उनकी लगातार प्रेरणा से तथा आर्य समाज सम्बन्धी पुस्तकों के पढ़ने से आपको आर्य समाज से प्रेम होने लगा। अब आप पटवारी प्रीतसिंह के साथ आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में भी जाने लगे। वहां विद्वान् सन्यासी महात्माओं के मधुर उपदेश सुनकर आप में सुप्त वैदिक धर्म की ज्योति प्रज्वलित हो उठी। आपको कहीं से पता लगा कि आर्य समाज के सबसे बड़े गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिक उत्सव अभी निकट समय में ही होने वाला है इससे आपको बड़ी प्रसन्नता हुई। अपने मित्रों सहित आप गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव

देखने के लिए चल दिये। वहां सब से पहले महात्मा मुन्शीराम जी (स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज) का सुन्दर उपदेश सुना जिससे रहे सहे सारे संशय नष्ट हो गए। तब से आप आर्य धर्म के दीवाने बन गये और आर्य समाज के प्रचार करने का निश्चय कर घर वापिस आये। वहां से पानीपत आर्य समाज मन्दिर में आकर आपने श्री पं० ब्रह्मानन्द जी (स्व० स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज) से नियमपूर्वक यज्ञोपवीत ग्रहण किया तथा आर्य समाजी बने।

वैदिक धर्म के प्रचार की लगन

आर्य समाजी होने के बाद जब आप अपने माहरा गांव में अवकाश पर आते तब गांव के आस पास के लोगों को इकट्ठा करके आर्य समाज का प्रचार करने तथा अन्य आर्यसमाजी उपदेशकों को समय २ पर बुलाकर प्रचार करवाते। आप चाहते थे कि सारा संसार आर्य बन जाय लोगों में वैदिक धर्म की ज्योति जग जाय। यद्यपि कुछ लोगों ने प्रारम्भ में विरोध भी प्रदर्शित किया किन्तु बाद में सब आपकी पवित्र भावना को समझकर हृदय से आदर करने लगे। इस तरह आर्य धर्म का प्रचार कराने में आपका काफी रुपया व्यय हो जाता था और उस समय आर्थिक

अवस्था विशेष अच्छी न थी फिर भी आप इस की कुछ चिंता न करते थे। चिन्ता थी तो केवल आर्य समाज के प्रचार की। आपके अदम्य उत्साह से प्रभावित हो अन्य सज्जन भी अतिथि सेवा आदि सामाजिक कार्यों में हाथ बटाने लगे। पाठक देखें, सद्‌गुणों का कैसा विलक्षण प्रभाव होता है। पटवार गृह अब केवल पटवार के कार्य के लिए ही नहीं रह गया था वह तो प्रायः आर्य समाज के सिद्धांतों की चर्चा का, देहात के आपसी झगड़ों के निपटारे का, पञ्चायतों के फैसले का, विद्वान् सन्यासी महानुभावों के शुभागमन का और अतिथियों के ठहरने के लिए धर्मशाला का पवित्र स्थान बन गया था। बहुधा लोग देखकर भ्रान्त हो जाते थे कि यह पटवार गृह है या प्रचार गृह? अथवा सबका साझला पञ्चायती घर है।

गृहस्थ के विशेष गुण

यौवन काल में ही उदारतापूर्ण निःस्वार्थ सेवा के भाव भी आप में मूलरूप से विद्यमान थे। आप दूसरे के दुःख से बहुत जल्दी दुःखित होते थे। एक बार की बात है, अच्छी वर्षा न होने से उरलाना निवासी मुसलमान रांघड़ों की फसलें खराब हो गईं इसलिये वे सरकारी मालगुजारी देने में विवश थे।

आपने उनकी इस विवशता को समझकर उरलाना निवासी एक साहूकार मुसलमान से ५०००) रु० उधार लिये और सारे गांव की मालगुजारी स्वयं देदी।

जब आप साहूकार से ५०००) रुपये उधार ले रहे थे तब साहूकार ने आप से कहा कि पटवारी जी महाराज! हमारे राजपूत भाई किसी का लिया हुआ रुपया वापिस नहीं देते हैं इसलिये इस संकट में आप न पड़ें। यह सुनकर आप बोले कि भाई जो कुछ होगा आगे देखा जायगा परन्तु मैं अभी इनके दुःख को नहीं देख सकता। जब इनके पास रुपये हो जायेंगे तो ये लोग अवश्य देंगे यह मुझे पूर्ण विश्वास है। हुआ भी ऐसा ही, उन्होंने आपके उधार लिये हुए सब रुपये वापिस कर दिये। जो दूसरों के प्रति उदार होता है भगवान उसके प्रति उदार हो जाते हैं। निष्काम भाव से सहायता करना इसीका नाम है। 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' इस गीतोक्त कर्म शास्त्र का रहस्य आपके उक्त व्यवहार से स्पष्ट हो जाता है।

दृढ़ सङ्कल्प शक्ति व ईश्वर विश्वास — ईश्वर विश्वास के साथ दृढ़ संकल्प शक्ति भी आपका स्वाभाविक गुण था। आप अपने कर्तव्य से कभी भयभीत न होते थे। जिस

काम को करने का निश्चय जिस समय करते थे उसको उसी समय कर डालते थे। एक दिन आपको किसी आवश्यक कार्यवश अपने माहरा गांव जाना था। सायं-काल के समय आपने उग्लाना से घोड़ी पर चढ़कर चलने की तैयारी की। प्रेमी सज्जनों ने अनुरोध किया कि पटवारी जी! कृपया इस समय न जाइये। रात का समय है। जंगल का रास्ता है। आपके पास रुपये हैं। मार्ग में चोर फंदा डाल लेते हैं जहां घोड़ी के फस जाने से आपका निकलना कठिन हो जायगा। परन्तु ईश्वर के सच्चे भक्त आपने उत्तर दिया-भाइयो! घबराओ नहीं। मेरे लिये आप चिंता न करें। मैं सुरक्षित घर पहुंच जाऊंगा। आप घोड़ी पर सवार हो उग्लाने से तीन मील ही गये थे कि आपकी घोड़ी का पांव फंदे में फंस गया जिससे घोड़ी गिरने को तैयार हुई। परन्तु आपने उसके गिरने से पूर्व ही सम्भल कर झट बन्दूक चलादी जिससे छिपे हुए चोर एक दम स्थान छोड़कर भाग खड़े हुए और आप सुरक्षित माहरा गांव पहुँच गये।

मास परित्याग] उग्लाना गांव में रहते हुए आपको डिमाना गांव निवासी मुसद्दी लाल नामक हिन्दू राजपूत की कुसंगति से मांस खाने की बुरी आदत पड़ गई थी परन्तु

अब तक सबके सामने मांस खाने की हिम्मत न हुई थी इसमें आपके प्राचीन संस्कार ही कारण कहे जा सकते हैं। एक दिन अचानक ही ज़ि० करनाल के अदाना गांव निवासी चौ० बदलूराम जैलदार तथा मनाना गांव निवासी चौ० मनभर सिंह आप से मिलने के लिए उरलाना गांव में पधारे। उस समय आप खाने के लिए मुर्गी को पकड़े हुवे थे। जब उक्त दोनों सज्जन आपके पास आये और उन्होंने यह दृश्य देखा तो लोक लाज के भय से आपके हाथ कांप उठे। फड़फड़ाती हुई मुर्गी हाथ से छूट गई। दोनों महानुभावों ने यह घटना अपनी आँखों से देखी किन्तु उन्हों ने उस विषय में आप से कुछ नहीं कहा। उन दोनों के चले जाने पर आप अपनी दुर्बलता का विचार कर मन ही मन बहुत लज्जित हुए। यहां तक कि सायंकाल आपने भोजन भी नहीं किया। चिन्ता से व्याकुल खाट पर पड़े रहे। अन्दर ही अन्दर अपने ऊपर बहुत घृणा हो रही थी। कभी सोचते थे मेरी छिपी दुर्बलता का पता लग गया। वे लोग मुझे जैसा पहले समझते थे अब नहीं समझेंगे। इसका क्या प्रतिकार हो। मांस भक्षण के बिना मैं रह न सकूंगा। कभी मन में विचार आता था कि मैं अब मांस कभी नहीं खाऊंगा परन्तु दूसरे ही क्षण फिर

मानसिक दुर्बलता के वशीभूत हो जाते। इसी प्रकार की अधेड़ बुन में जागते २ आपकी आधीगत गुज़र गई। अन्त में अन्दर से दृढ़ प्रतिज्ञा तथा पवित्र भावना को लिये एक अव्यक्त आवाज़ निकली कि "मैं आज से प्रतिज्ञा करता हूं कि सभ्य समाज में लज्जित करने वाले इस मांस का भक्षण कभी नहीं करूंगा ! नहीं करूंगा !!" तदन्तर आप शान्त चित्त हो सो गये। प्रातःकाल उठे। भगवान् का स्मरण किया। तत्पश्चात् गांव के सज्जनों को इकट्ठा करके अपनी मांस भक्षण की निर्बलता का सबको परिचय कराया। साथ ही सबके सामने यह दृढ़ प्रतिज्ञा की कि मैं आज से कभी भी मांस नहीं खाऊंगा और इस पाप के निवारण के लिए मैं कठोर प्रायश्चित भी करूंगा। उसके बाद आपने कभी मांस नहीं खाया। मांस भक्षण का सदा विरोध ही करते रहे। नौजवानी में मांस परित्याग सर्वदा के लिए कर देना एक विशेष मानसिक शक्ति की दृढ़ता का द्योतक है। आजकल के पाश्चात्य शिक्षा प्रेमी युवकों को इससे शिक्षा लेनी चाहिये।

स्त्रियों की मानरक्षा का ध्यान — गृहस्थ में स्त्री जाति के प्रति भी आप का आदर्शपूर्ण भाव था। स्त्रियों के

विरुद्ध किसी भी अनुचित काम को देख सकना आपके लिये असह्य था। आप उनकी मान रक्षा का भरसक प्रयत्न करते थे। उरलाना गांव में मुसलमान रांघड़ हिन्दू लड़कियों के सामने निर्लज्जता से नहाते हुये गन्दे संकेत करते थे। जब आप को यह मालूम हुआ तो आपने झट गांव के हिन्दुओं को बुला कर उनसे अलग कूंआ बनवाने की प्रेरणा की। परन्तु वहां के हिन्दू परस्पर द्वेष के कारण मुसलमानों से भयभीत थे अतः एकता के अभाव में कुछ न कर सके। इससे आप को बहुत अधिक दुःख हुआ और आप सोचने लगे-जुल्म सहकर जीना कितना भारी महापाप है।

प्लेग की बीमारी में लोगों की सहायता

निःस्वार्थ सेवा द्वारा दीनों पर दया तथा असहायों की सहायता करना भी आपने गृहस्थाश्रम का धर्म समझा था। आप जब उर-लाना गांव में पटवारी थे तब सारे देश में प्लेग की महामारी फैली हुई थी। यह सन् १६०६ की बात है। कोई भी गांव या नगर उससे अछूता न बचा था। उस समय कोई किसी को संभालने वाला न था। सब ओर हाहाकार मचा हुआ था। माता पिता अपने हृदय के टुकड़ों को, भाई बहनों को, पति पत्नि को बिलकुल भूल

चुके थे। सारा भारत प्लेग की भीषण अग्नि ज्वाला में जला जा रहा था। किसी को भी अपने जीवन की आशा न थी। ऐसे दारुण समय में दुःखी रोगियों की सेवा करना किसी शूरवीर पुरुष का ही काम था। उस विपत्ति-काल में आपने उरलाना निवासियों की जो तत्परता से सेवा की उसका वर्णन करना कठिन है। सारा दिन और सारी रात आप रोगियों की सेवा में लगे रहते। किसी के लिये पानी का प्रबन्ध करते, किसी को भोजन खिलाते, किसी को दवाई दिलाते, किसी की अन्त्येष्टि क्रिया तक करवाते। कहने का भाव यह है कि आपने महामारी के समय जनता की सेवा करने में कोई कसर न उठा रखी। हर तरह से लोगों की सहायता की। उनको आश्वासन दिया। अपने शरीर की भी पर्वाह न करते हुए आप उनकी सेवा में संलग्न रहते थे। लोग आप को मनुष्य के रूप में परोपकारी देवता समझते थे और मन ही मन आपका गुणगान करते थे।

उस समय सब सरकारी अफसर अवकाश लेकर अपने २ घर चले गये थे। परन्तु आपने अपना सारा समय उरलाना गांव के नरनारियों को उस महाव्याधि से बचाने में ही लगा दिया। अफसरों ने आपको पत्र द्वारा समझाते हुए लिखा भी कि आप अवकाश लेकर घर चले

जाइये। इस भयंकर बीमारी में रहकर अपने अमूल्य जीवन को व्यर्थ नष्ट न कीजिये। किन्तु आपने उनको प्रत्युत्तर दिया—"आप लोगों के प्रेम के लिये धन्यवाद, मैं इस संकट काल में इन पीड़ितों को नहीं छोड़ सकता। इन दुःखियाओं की सेवा करते हुए यदि मेरी जीवनलीला भी समाप्त होजाय तो मैं अपने को कृतकृत्य समझूंगा"। पाठक ध्यान दें कैसा स्पष्ट निःस्वार्थ सेवा भाव से पूर्ण उत्तर है।

कुछ काल बाद वह भयंकर व्याधि शान्त होने पर सब अपने २ संबन्धियों हितैषियों को याद करने लगे। सब के साथ विशेषरूप से मुसलमान रांघड़ों ने स्वस्थ हो कर अपने परम सेवक आप का भूरि २ हार्दिक धन्यवाद किया। आपकी अभूतपूर्व सेवा से वशीभूत हुए ये ही उरलाना गांव के रांघड़ मोठ गांव में किये आपके २३ दिन के अनशन व्रत की पूर्ति में (जिस का वर्णन चतुर्थ अध्याय में किया जायगा) सहायक सिद्ध हुए और आजीवन आपके कृतज्ञ बने रहे। सच्ची सेवा से अन्य मतावलम्बी भी अपनाये जा सकते हैं यह आपने सिद्ध कर दिया।

[उच्च विचार] आपके विचार कितने उच्च थे इसका परिचय एक छोटी सी घटना से मिलता है।

जिन दिनों आप उरलाना में पटवारी थे उन दिनों आपने एक मुसलमान रांघड़ को किसी गाय के साथ अप्राकृतिक कुकर्म करते देखा। देखते ही आपकी आत्मा पर बड़ा आघात पहुँचा। आपने निश्चय किया कि मुझे अब इस गांव में नहीं रहना चाहिये। क्योंकि जहां पर ऐसे दुष्कर्म होते हैं वहां इससे अधिक और गिरावट क्या होगी ? ऐसा निश्चय कर आपने अपने अधिकारियों को लिखा कि मैं कुछ कारणों से इस गांव में नहीं रहना चाहता। इस लिये मेरा यहां से तबादला कर दिया जाय। अधिकारियों ने उत्तर दिया कि अभी आपका तबादला नहीं हो सकता। आप कुछ समय और यहीं कार्य करते रहें।

आपको तो उक्त दृश्य देखकर उरलाना गांव से ही ग्लानि हो चुकी थी अतः आपने फिर लिखा कि यदि आप मेरा तबादला करने में अभी विवश हैं तो मैं भी अब पटवार का काम करने से विवश हूं। अधिकारी यह अच्छी तरह समझते थे कि आप जिस काम को करने का दृढ़ निश्चय कर लेते हैं। उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं और आप जैसे योग्य कार्य कर्ता भी कम मिलते हैं इस लिये कुछ सोच विचार के बाद आपके तबादले की आज्ञा आ गई और आप सन् १९११ में जि० करनाल

के लाखू बुवाना गांव में पटवारी बना दिये गये । आपको इस तबादले से बड़ी प्रसन्नता हुई क्यों कि आप जानते थे कि बुवाना की पञ्चायती शक्ति बहुत अच्छी है । पञ्चायत पर ही आप अधिक विश्वास करते थे । प्रायः उपदेशों में कहा करते थे—"जहां पञ्च वहां परमेश्वर" । यहां आकर आपने अपने कार्यक्रम को विस्तृत करना प्रारम्भ किया ।

रिश्वत के त्याग की दृढ़ प्रतिज्ञा

आर्य समाज से प्रभावित हुए आप दिनों दिन अपनी मानसिक आत्मिक निर्बलताओं का परित्याग करते जा रहे थे । परन्तु अभी तक एक बड़ी भारी कमी बाकी थी जिसे छोड़ न सके थे । वह कमी थी रिश्वत लेना । इस कार्य को घृणित समझते हुए आप इसका परित्याग न कर सके थे । कई बार मनमें सोचते कि अगर तूने प्रजा की सेवा करनी है तो इस बुरी बिमारी को भी छोड़ना ही चाहिये ।

एक दिन की घटना है कि बुवाना गांव में एक बनिये ने अपनी स्त्री को किसी कारण जान से मार डाला । खबर पाकर पुलिस आई । बनिया अपनी जान बचाने के लिए गांव के नम्बरदारों के साथ आपकी शरण में आया । आपने नम्बर दारों के साथ मिलकर

मुकद्दमा जीतने पर बनिये से ६००) रु० रिश्वत के लेने निश्चित किये। आखिर आपके प्रयत्न से मुकद्दमा जीतकर बनिया बच गया और उसने आप सबको ६००) रु० रिश्वत के दिये। जिसमें ३००) आपके तथा ३००) रु० शेष नम्बरदारों के थे। जब आप रिश्वत के रुपये बांटने लगे तब ख्याली राम नम्बरदार ने (जो कि आगे चलकर गुरुकुल भैंसवाल के जीवनदानी बने तथा जिन्होंने वानप्रस्थ रूप में गुरुकुल की बड़ी भारी सेवा की। अन्त में 'ज्ञानानन्द' नाम से सन्यासी बन गुरुकुल एवं समाज की सेवा करते हुए इस नश्वर देह का त्याग किया) रिश्वत का भाग लेने से इन्कार कर दिया। आप ने उन से पूछा कि आप अपना भाग क्यों नहीं लेते ? तो वे बोले यह कमाई बुरी है, मैं इसमें हिस्सा नहीं लूंगा। यह सुनकर आपने फिर पूछा कि अगर यह कमाई बुरी है तो मुझे भी इस कार्य को छोड़ने के लिए क्यों नहीं कहते ? इस पर ख्यालीराम जी नम्बरदार ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया-पटवारी जी ! जब आपको यह काम बुरा लगेगा तब आप स्वयं ही इस काम को छोड़ देंगे। वास्तव में हुआ भी ऐसा ही। सम्भव है ख्यालीराम जी के ऊंचे ख्याल ही आप पर आप्तोपदेश का काम कर गये। एक दिन आप किसी झगड़े का निपटारा कर रहे

थे। निपटारा करने में रिश्वत बड़ा भारी रोड़ा बना हुआ था। आपने रिश्वत लेकर निपटारा कर दिया। परन्तु रिश्वत लेने पर मन ही मन क्रोध आ रहा था और आत्मग्लानि हो रही थी।

अन्त में आपने सन् १९१४ में दृढ़ निश्चय पूर्वक यह प्रतिज्ञा की कि चाहे कितना ही सङ्कट आवे, चाहे मुझे नंगा रहना या भूखा रहना पड़े, चाहे कर्जदार भी हो जाऊं परन्तु मैं कभी रिश्वत नहीं लूंगा। इस प्रतिज्ञा पर आप पर्वत के समान अविचल रहे तथा रिश्वत के नाम से भी घोर घृणा करने लगे।

ज़ि० करनाल के कात (शाहपुर) गांव में एक थानेदार ने गांव वालों से ८००) रु० रिश्वत के ले लिये और वह अधिक रुपये लेने की आशा से गांव वालों को बड़ी क्रूरता के साथ धमका रहा था। किसी ने आपको इस की सूचना दी। आप तुरन्त घटनास्थल पर पहुँचे। वहां आपने गरीब ग्रामीणों को धमकाते हुए थानेदार को देखा। अब आपसे नहीं रहा गया। आपने शेर के समान गर्जकर थानेदार को धमकाया और मूढ़े से नीचे धकेल कर उसकी कमर में ज़ोर की लात जमा दी। उस समय थानेदार आपके तेजयुक्त क्रोध से इतना

भयभीत हुआ कि वह चुपचाप घोड़े पर सवार होकर वहां से चलता बना। क्योंकि वह स्वयं दोषी था इसलिये अदालत के दरवाजे कैसे खटखटाता। केवल दांत कटकटाता रह गया।

पाठक देखें बुराई को दूर करने के लिए कितने चरित्रबल की आवश्यकता है। जब रिश्वत लेना एक बुराई मान ली तब उसको दूर हटाना ही चाहिये। चाहे वह छोटों में हो या बड़ों में। राजा में हो या प्रजा में। आजकल राज्याधिकारी हमारे चरित्रनायक से इस विषय में बहुत कुछ सीख सकते हैं। आपके इस वीरतापूर्ण कार्य से समस्त ग्रामवासी बहुत प्रभावित हुए और आपको धन्य २ कहने लगे।

यह तो आपके गृहस्थाश्रम में रहते हुए रिश्वत सम्बन्धी घटना है। इस सम्बन्ध में वानप्रस्थाश्रम की भी कुछ घटनाएं मनोरञ्जक हैं। जिनमें एक घटना का यहां उल्लेख कर देना आवश्यक मालूम होता है। सन् १६३६ की बात है। कासैंढा गांव में मांगे नाम का एक मुसलमान युवक गन्दी रागनियां गाता था। वह प्रायः लड़कियों के पास भी गन्दी रागनी गाने में संकोच न करता था। उसको गांव के भद्र पुरुषों ने बहुत

समझाया पर वह नहीं माना। तब गांव वालों ने 'शठे शाठ्यं समाचरेत' के अनुसार उसकी लात घूंसों से खूब मरम्मत की। यहां तक कि वह चलने में भी लाचार हो गया। पास ही सरगथल गांव में बशीर नामक एक चलता मुसलमान रहता था। उसने जातीय प्रेमवश उसको थाने में लेजाकर झूठी सच्ची रिपोर्ट दिलवा दी कि कासेंढी गांव के कुछ जाटों ने मुझे खूब मारा पीटा और मेरी अंगूठी तथा साइकल छीन लिये। इस रिपोर्ट पर थानेदार कासेंढी आया। वह भी मुसलमान था। उसका रुख देखकर गांववालों ने अदालती झगड़े से बचने के लिये उसे १५०) रिश्वत देदी। वह रुपये लेते ही मामले को दबाकर चला गया।

जब आपको इस बात का पता लगा तो आप झट कासेंढी आये और लोग इकट्ठे किये। उस मामले में गवाही देने के लिये तैयार हुए लोगों को समझाया कि तुम झूठी गवाही क्यों देते हो? वह मुसलमान गन्दे गीत गाता था। जब समझाने पर भी नहीं माना तो उसे तुम्हारे गांव के लोगों ने उचित दण्ड देकर ठीक ही किया अब अगर वह चोरी आदि का झूठा मुकद्दमा उठाता है तो उसकी झूठी गवाही देने में तुम्हें भी पाप लगेगा। आपके इस प्रकार युक्ति युक्त समझाने पर सबने स्वीकार

कर लिया कि हम गवाही नहीं देंगे। जब कोई गवाह न रहा तो आपने रिश्वत देने वाले कासेंढी के लोगों को बुला कर कहा कि तुमने रिश्वत क्यों दी? गांव वालों ने अपनी लाचारी प्रकट की। तब आपने गांव के बलिष्ठ श्री उजाला सिंह आदि लोगों को रिश्वत उलटी लाने के लिये थानेदार के पास भेजा उन्होंने थानेदार के पास जाकर रिश्वत के १५०) रु० वापिस मांगे। यह सुन कर थानेदार बोला कि कैसे रुपये? वे तो मैंने जैलदार से लिये थे उसी को दूगा। तब श्री उजाला सिंह ज़ोर से बोले कि मुझे ही आप जैलदार समझें। भक्त फूलसिंह जी महाराज ने मुझे भेजा है। अब क्या था। आपका नाम सुनते ही वह थानेदार घबरा गया। क्योंकि उस समय काफी लोक सेवा करने के कारण लोगों पर आपका इतना अधिक प्रभाव हो चुका था कि सरकारी या गैर सरकारी सभी आपके सच्चरित्र से परिचित थे। थानेदार घबरा कर बोला महाशय जी! मैंने तो रुपये नहीं मांगे थे। लोगों ने मुझे जबर्दस्ती दे दिये। मैं तो बहुत रोकता रहा पर लोग नहीं माने। अच्छा लीजिये ये १५०) रु०। इस प्रकार रिश्वत के रुपये वापिस करते हुए उसने कहा कि भक्त जी को मेरी सलाम कहना। और कहना कि मैं तो उन्हीं का बेटा हूं। उनकी सारी बातों को मानता हूँ।

मौका मिलते ही उनसे मिलूंगा।

पाठक देखें लोगों से रिश्वत छुड़ाने का कैसा अद्भुत तरीका है। सत्य है—जो स्वयं पवित्र है वही दूसरों को पवित्र कर सकता है। जब खुद रिश्वत लेनी छोड़ दी तो अपने संपर्क में आने वाले कैसे रिश्वत ले सकते हैं।

सुभाषिणी का जन्म — सन् १९१४ में आप के घर एक सुन्दर कन्या रत्न ने जन्म ग्रहण किया जिसका नाम सुभाषिणी रखा गया। जो जन्मकाल से ही आपके शुद्ध संस्कारों को ग्रहण करता हुआ शनैः शनैः चन्द्रकला के समान वृद्धि को प्राप्त हुआ। उसके विषय में आगे चतुर्थ अध्याय में लिखा जायगा।

पटवार से एक वर्ष का अवकाश— इस तरह पटवार का कार्य करते हुए आपके दिल में समाज सेवा के लिये और अधिक विस्तृत कार्य क्षेत्र बनाने की अभिलाषा बढ़ती जा रही थी। आप सोचते थे यदि प्रजा की सेवा करनी है, मनुष्यमात्र को प्रेम का पाठ पढ़ाना है देश तथा जाति का कल्याण करना है, देहाती दुनियां के दुःख विशेषरूप से दूर करने हैं, वेद की शिक्षा सब जगह फैलानी है, लोगों को ईश्वर का भक्त बनाना है, और रामराज्य के लाने की यदि चाह है तो यह पटवार का

मोह त्यागना पड़ेगा । तपस्वी जीवन बनाना होगा । पुराने पापों को नष्ट करने के लिये कठोर से कठोर प्रायश्चित करना पड़ेगा । भला, बुरा, शीत, उष्ण, सब कुछ सहना होगा । शत्रु को भी मित्र समझना होगा । इस प्रकार सुन्दर उच्च विचारधारा द्वारा आपने अपने अन्दर सादगी सदाचार, सत्य, प्रेम आदि गुणों का धारण करना आरम्भ किया । साथ में पटवार से त्याग पत्र देने की भी तैयारी की । उस समय दिव्य गुणों के सौन्दर्य से आप उदीयमान भानु के समान प्रकाशित हो रहे थे ।

पटवार से त्यागपत्र देने की सूचना आपने अपने मित्रों को दी । मित्रों ने सलाह दी कि आप पटवार से त्यागपत्र न दें, अभी और विचार करें । क्योंकि विचार पूर्वक किया हुआ काम ठीक होता है । जल्दबाज़ी में कोई काम नहीं करना चाहिये । मित्रों की बातों को ध्यान से सुनकर आपने फिर विचार किया । विचार करने के बाद यही निश्चय किया कि अभी त्यागपत्र न देकर पटवार से एक वर्ष का अवकाश ले लिया जाय । अवकाश काल में स्व. श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के आश्रम में रह कर सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि आदि धार्मिक पुस्तकों को पढ़ा जाय तथा गृहस्थ में रहते हुए भी ब्रह्मचर्यव्रत का कठोरता से पालन किया जाय । उसके पश्चात् जो होगा

खा जायगा। ऐसा स्थिर निश्चय करके आपने सन् १९१६ के दिसम्बर मास में पटवार से एक वर्ष का अवकाश ग्रहण किया। पटवार का चार्ज बरकतअली नाम के मुसलमान पटवारी को सौंपकर आप निश्चिन्त हो अपने बुवाने के पटवारगृह में आ गये।

सम्भालका गांव में गोवध रोकना

उसी रात को जब आप अपने पटवारगृह में सो रहे थे, आपके पास दो सज्जन पधारे और आपको जगाया। उन दो में एक संभालका निवासी चौ० टोडरमल जी थे। आपकी पहले की हुई सामाजिक सेवाओं के कारण लोग आपको पटवारी नाम से न पुकार कर 'भक्त' नाम से पुकारते थे। यह नाम आपका ऐसा प्रसिद्ध हुआ कि आजीवन आप इसी उपयुक्त नाम से पुकारे गये। हरियाणा प्रान्त के ज़ि० रोहतक में भक्त के नाम से आप ही अधिक प्रसिद्ध हैं! इसलिये चौ० टोडरमल जी ने भी आपको भक्त नाम से पुकार कर कहा-"भक्त जी! बड़े दुःख की बात है। हमारे मरने जीने का प्रश्न है। इधर कूंआ उधर खाई है। क्या किया जाय। सारे गांव के आदमियों ने हम दोनों को आपकी सेवा में भेजा है। आप कृपा करके हमारा दुःख सुनिये।" तब दयार्द्र हृदय आपने कहा-"कहो भाई क्या बात है! ऐसे क्यों घबराते हो। मुझे

साफ २ बतलाओ" आपका प्रेमपूर्ण आश्वासन पा चौ० टोडरमल जी सम्भलकर बोले-"पूज्य भक्त जी! हमारे सम्भालका गांव में हत्या (गौ आदि पशुओं के मारने का स्थान) खुलने वाला है। उसके लिये मुसलमानों ने सरकार से आज्ञा प्राप्त करली है। वे कल ही उसकी नींव रखना चाहते हैं। यदि तब तक उसे रोका न गया तो फिर कुछ न हो सकेगा। आप बताइये, अब हम क्या करें।

यह भयङ्कर समाचार सुनकर आप कुछ देर मौन रहे, फिर उन दोनों महानुभावों को प्रोत्साहन देते हुए कहा कि अब तो आप जाओ। आपसे जितना हो सके, प्रयत्न करो। मैं भी इसके लिये यथा शक्ति उपाय काम में लाऊंगा। इसके बाद अगले दिन आपने बुवाना गांव के प्रसिद्ध २ पुरुष इकट्ठे किये और उनके सामने रातवाली सारी घटना प्रकट की। लोगों ने सुनकर कहा कि-भक्त जी महाराज! इस विषय में जो आपकी आज्ञा होगी उसे हम सब स्वीकार करेंगे। हमको आप आज्ञा दीजिये, हम क्या करें। तब आपने लोगों का उत्साह देखकर कहा कि हत्थे का मुकाबला करने के लिये हथियार चाहियें और हथियार खरीदने के लिये रुपये चाहियें। इसलिये कम से कम १२००) रु० इकट्ठे

करदो जिससे कुछ हथियार खरीदे जा सकें। श्रद्धालू भक्तों ने आप की आज्ञा शिरोधार्य कर तीन दिन में ही उक्त धनराशि इकट्ठी करदी और आपके चरणों में सौंप दी। धन्य हैं आप और धन्य हैं आपके भक्त। जब दोनों ही भक्त ठहरे तो कमी क्या रहती। आपने उस धनराशि से हथियार खरीदे और सम्भालका गांव में हत्या रोकने के लिये चढ़ाई की सूचना चारों ओर भेज दी। सूचना मिलते ही उत्साह सम्पन्न शूरवीर आर्यपुरुष संभालका की ओर चल पड़े। उधर हत्थे वाले मुसलमानों ने जब हाथियों के झुण्ड के समान झूमता हुआ आर्यजन समवाय उमड़ता चढ़ता देखा तो वे चीं बोल गये। सामने आने की तो हिम्मत कहां? और कुछ न बन पड़ा, झट जि० करनाल के डिप्टी कमिशनर साहब को चढ़ाई की खबर करदी। खबर पाकर D.C. महोदय भी घटनास्थल पर आ पहुंचे। उन्होंने आकर जो हज़ारों आर्यवीरों का समुदाय चढ़ता देखा तो स्तब्ध रह गये और कुछ समय सोच विचार के बाद हत्था बनाने की आज्ञा वापस लेते हुए उपस्थित जनसमुदाय की ओर लक्ष्य करके कहा-आप लोग वापिस चले जायं। यहां गोकशी नहीं होगी, केवल बकराकशी होगी। D.C. महोदय के इस आश्वासन पर जन समुदाय कुछ शान्त हुआ।

D.C. महोदय के संदेश के बाद भी कुछ लोग हथियार लिये बागों में छिपे हमले की प्रतीक्षा में बैठे थे। अवसर को समझने वाले आप झट उस स्थान पर पहुँचे और एक ऊंचे टीले पर खड़े होकर चद्दर घुमाते हुए संकेत से बोले कि भाइयो! हम जिस उद्देश्य से यहां आये थे वह प्रायः पूरा हो चुका है। इसलिये अब यहां छिपे रहना हानिकर ही सिद्ध होगा। आपका संकेत पाते ही छिपे हुए लोग वहां से उठ कर अपने २ घर की ओर चल दिये। छिपे हुए लोग जब उठकर जा रहे थे तभी किसी भेदिया जासूस ने पुलिस कप्तान को सूचित किया कि संभालका के समीप वाले बाग में कुछ हथियार बन्द पुरुष हमले की प्रतीक्षा में बैठे हुए हैं। सूचना पाते ही पुलिस फौरन घटनास्थल पर पहुँची। परन्तु अब वहां क्या धरा था? सब लोग पुलिस के आने से पहले ही जा चुके थे। पुलिस खाली हाथ वापस आई। इस घटना से आपकी युद्ध वीरता एवं नीतिज्ञता प्रकट होती है।

गिरफ्तारी व चौ० छोटूराम की प्रशस्त वकालत

जब चढ़ाई करने वाले सब लोग शान्ति से अपने घर लौट गये तब किसी पिशुन यवन की प्रेरणा से सरकार ने चढ़ाई

के मुखिया का पता लगाने का प्रयत्न किया। यह तो स्पष्ट ही है कि चढ़ाई के मुखिया आप थे। इस लिये मजहबी रंग में रंगे हुए, पारितोषिक पदवृद्धि के भूखे बरकतअली नामक मुसलमान पटवारी ने तथा उसी हल्के के अब्दुलहक नामक गिरदावर ने सम्मिलित रिपोर्ट लिखी जिसमें आप को उक्त विप्लव का मुखिया बताते हुए यह भी सिद्ध करने की दुश्चेष्टा की कि आप की गूढ़ अभिलाषा हिन्दुओं में मुख्यरूप से जाटों को भड़का कर मुसलमानों को नष्ट करने की और शनैः शनैः ब्रिटिश गवर्नमेण्ट का भी तख्ता उलटने की थी इस लिये आपको बाग़ी समझ कर जल्दी से जल्दी कैद किया जाय, जिस से विद्रोह शान्त हो।

उन दोनों की इस रिपोर्ट पर सरकार ने आपको गिरफ्तार किया। आपके साथ बिजावा निवासी श्री गोकल नम्बरदार, इसराना निवासी चौ. लहरीसिंह व चौ. बक्शी राम, परढ़ाना निवासी चौ. मोहरसिंह, संभालका निवासी चौ. टोडरसिंह, श्री पं० चन्द्रभान और सूरजभान भी गिरफ्तार किये गये। सबसे पांच पांच हज़ार की ज़मानतें ली गई।

इस प्रकार अभियुक्त हुए आप अपने मुकद्दमे की

पैरवी के लिये अनेक वकीलों के पास गये । करनाल के वकीलों ने तो सरकार के मुकाबले में पैरवी करने में अपनी असमर्थता प्रकट कर दी । इससे आप बड़े चिन्तित हुए । विवश हो रोहतक आये । यहां भी किसी वकील में पैरवी करने की हिम्मत न पाई । अन्त में आप स्व. दीनबन्धु चौ. छोटूराम जी की सेवा में उपस्थित हुए । और उन्हें सारा वृत्तान्त कह सुनाया ।

चौधरी साहब ने सारी घटना कानूनी ढंग से सुनी । कुछ देर तक चुप रहे । फिर बोले "भक्त जी ! मैं आपके मुकद्मे की पैरवी करूंगा । भगवान की दया से आप इस मुकद्मे में सफल हो जायेंगे ।" चौ. साहब ने अपने अनुपम वाक चातुर्य से मुकद्मे की ऐसी पैरवी की कि जिससे आपके साथ सब अभियुक्त बिलकुल बरी हो गये ।

यहां यह ध्यान देने योग्य बात है कि चौ. छोटूराम जी ने इस मुकद्मे में एक भी पैसा अभियुक्तों से नहीं लिया और सारा कार्य निष्काम भाव से किया जो कि उनकी विशुद्ध धार्मिक भावना को प्रकट करता है । इस प्रशंसनीय एवं महत्वपूर्ण कार्य से चौधरी साहब के साथ आप का प्रगाढ़ प्रेम हो गया जो जीवन भर अखण्ड बना रहा । अन्योऽन्यालंकार के समान दोनों एक दूसरे को अलंकृत

करते रहे । सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में परस्पर समन्वय से काम करते रहे । दोनों के अकृत्रिम प्रेमरस में

कभी अन्त

आन्तरिक

धन से धर्म

बरकतअली

का उचित

मुकद्दमे में

पटवारी को

बनाने को

हक नामक

मिली । औ

वेतन में भ

अशुभ बाते

किया कि

काम नहीं

भावना आ

आप दिन

तेज उत्तेजि

निवृत्त हो

पैरवी के लिये अनेक वकीलों के पास गये । करनाल के
वकी [illegible] अपनी
अस [illegible] हुए ।
वि [illegible] पैरवी
कर [illegible] बन्धु
चौ [illegible] उन्हें
सा [illegible]

[illegible] नी ।

कुछ [illegible] आपके
मु [illegible] इस
मुअ [illegible] अनु
पम [illegible] जिससे
आ [illegible]

[illegible] राम
जी [illegible] लिया
औ [illegible] उनकी
वि [illegible] शंस-
नी [illegible] आप
का [illegible] रहा ।
अन्योन्यालंकार के समान दोनों एक दूसरे को अलंकृत

करते रहे। सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन में परस्पर समन्वय से काम करते रहे। दोनों के अकृत्रिम प्रेमरस में कभी अन्तर नहीं आया। बाह्यभेद होते हुए भी दोनों में आन्तरिक अभेद था। क्यों न हो, धर्म से धन की और धन से धर्म की शोभा द्विगुणित हो ही जाती है।

बरकतअली की नीचता का उचित दण्ड— इधर संभालके में की गई चढ़ाई की सूचना देने के कारण तथा तत्संबद्ध मुकद्दमे में आप को फंसाने के कारण बरकतअली नामक पटवारी को सरकार की ओर से प्रथम विभाग का पटवारी बनाने की आज्ञा मिली। साथ ही उसके साथी अब्दुल-हक नामक गिरदावर को भी तहसीलदार बनाने की आज्ञा मिली। और आपको पदवृद्धि तो क्या होनी थी, मासिक वेतन में भी २) की कमी करदी गई। इन दोनों ही अशुभ बातों से आपको बहुत कष्ट हुआ। आपने अनुभव किया कि वर्तमान सरकार भी पूर्ण विवेक व सचाई से काम नहीं लेती। अस्तुः उन दोनों के विरुद्ध प्रतिकार की भावना आपमें प्रबल हो उठी। नीचों की पदवृद्धि से आप दिन रात व्यथित रहते। एक दिन अचानक क्षात्र-तेज उत्तेजित हो चला। प्रातःउठते ही नित्यकर्म से निवृत्त हो अपने छोटे भाई रिच्छूराम को पास

बुलाया और घर का सारा हिसाब किताब उन्हें समझा कर पूरी तरह से नीचों का समूल उन्मूलन करने के लिये सन्नद्ध हो गये।

जिस समय आप उन दोनों के उच्छेद के लिये चलने ही वाले थे उसी समय आपको एक आर्य समाजी जैलदार का पत्र मिला जिसमें उसने लिखा था कि मुझे आपसे एक आवश्यक काम है। आप इसी समय मुझसे मिलने का कष्ट करें। आप पत्र पढ़ते ही जैलदार की सेवा में उपस्थित हो गये। जैलदार आपके विषय में बहुत कुछ सुन चुका था। बातों २ में आपने दोनों यवनों के विनाश का अपना निश्चय कह सुनाया। आपका दृढ़ निश्चय सुन कर जैलदार ने नीतियुक्त वचनों से आपको समझाया "पटवारी जी! ऐसा करना उचित नहीं है। शत्रु से बदला लेने का यह उपाय गर्हित है। कानूनी लड़ाई लड़कर भी आप उन्हें ठीक कर सकते हैं। मेरी बात पर विश्वास कीजिये और यह तुच्छ विचार छोड़ दीजिये। अगर आपनेउनसे बदला ही लेना है तो जो मैं कहता हूँ वह कीजिये। आप अपना पटवार का वार्षिक अवकाश स्थगित करा लीजिये। काम संभाल कर बरकत अली के कागजात देखिये। कहीं न कहीं गलती से वह

ऐसा फंस जायगा कि जिन्दगीभर याद करेगा । बिना मारे ही मर जायगा ।"

आपको यह सुझाव पसन्द आया । अवकाश स्थगित कराकर बरकत अली से चार्ज ले लिया । उसके कागजात जो देखे तो वास्तव में एक भीषण अपराध में वह फंस गया अब्दुलहक के पत्र भी आपने देख कर सुरक्षित रख लिये जिनमें लिखा था-आप मुझे गांव वालों से गाय दिलवाओ रुपये दिलवाओ इत्यादि । इस प्रकार जब दोनों ही सापराध निश्चित कर लिये तब मुकद्दमा दायर कर अपने पक्ष के साधक कागज़ात अदालत में पेश कर दिये जिन का परिणाम वही हुआ जो होना था । अपराधी सिद्धहोने पर दोनों ही पद से गिरा दिये गये । महाकवि श्रीहर्ष ने ठीक ही कहा है—'आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।' अर्थात् लातों के भूत बातों से नहीं मानते । इस प्रकार नीच को नीचता का उचित दण्ड दिला कर आप शान्त हुए ।

व्यक्तिगत वरोध मिटाने के लिये कठोर परिश्रम— अपना घरेलू काम करते हुए भी दूसरों के दुःख दर्द में सहायक होना आपका स्वभाव था । जब तक दूसरे के कष्ट को दूर न करलें तब तक आपको सन्तोष न मिलता था । लगभग सन् १९१७ की बात है-मनाना गांव के चौधरी नेकीराम

जी तथा चौ० मनभर सिंह में किसी बात के कारण बड़ा भारी विरोध था जिसके फल स्वरूप सारा गांव दो दलों में विभक्त हो चला था। किसी भी समय खून खराबी की आशंका बनी रहती थी। जब आप को इस बात का पता लगा तो आप फौरन मनाना गांव में पधारे। वहां जाकर दोनों महानुभावों को पहले अलग २ फिर इकट्ठे कर समझाया किन्तु विरोध के उग्र होने से कुछ परिणाम न निकला। तब सारे गांव को चौपाल में इकट्ठा करने का निश्चय किया और दोनों दलों को चौपाल में बुलाने के लिये आदमी भेजे परन्तु तीव्र विरोध के कारण लोग इकट्ठे न हो सके। इससे आपको बड़ा कष्ट हुआ। वह पौषमास का शीतकाल था और उस दिन लगातार वर्षा हो रही थी अब आपने स्वयं इस कार्य को करने का दृढ़ निश्चय किया। आप केवल एक कम्बल ओढ़ हर एक के घर गये, घर २ घूम कर लोगों को चौपाल में इकट्ठा करने लगे। इस तरह सायंकाल तक कठोर परिश्रम से सारा गांव इकट्ठा हुआ।

जब सब लोग चौपाल में इकट्ठे हो गये तब आपने दोनों पक्षों के सम्मुख होकर विरोध की बुराई करते हुए कहा—बुजुर्गों तथा भाइयो। आपस का विरोध बहुत बुरा

है । यह मनुष्य को अन्धा बना देता है । इससे कर्तव्याकर्तव्य का ज्ञान नहीं रहता । यह पहले अपने को नष्ट कर फिर अपने कुटुम्ब तथा सारे गांव को नष्ट कर देता है । इसके कारण लोगों ने जो कष्ट उठाये हैं वे आपको ज्ञात हैं । मैं अधिक क्या कहूं आप स्वयं समझदार हैं ।" इस प्रकार भावावेश में समझाते हुए आपकी मुखाकृति प्रदीप्त हो रही थी । उसे देख दोनों दल विरोध को भुला द्रवित हो गये ; सारा गांव अमन्द आनन्द समुद्र में निमग्न हो गया । सर्वत्र प्रेम ही प्रेम नज़र आने लगा ।

उस अद्भुत प्रेम प्रवाह में बहती जनता के बीच एक नीच स्वार्थी सहजराम नाम का पुरुष भी था जिसे आपका वह सुमधुर प्रेमोपदेश अच्छा न लगा । उसने सोचा अगर गांव वालों का परस्पर संघठन हो गया तो मेरी स्वार्थ सिद्धि न होगी । अतः कुछ निर्णय करने से पूर्व ही वह किये कराये पर पानी फेरता हुआ झूठमूठ आपसे बोला- भक्त जी ! "हमको आपकी बात पसन्द आ गई । कल सबेरे सारा गांव फिर इकट्ठा होगा । सबेरे सबको इकट्ठा करना मेरे जिम्मे रहा । अब रात हो गई है इस लिये क्षमा करें ।" आपने सत्यभाव से उसकी बात स्वीकार करली ।

अगले दिन प्रातः काल नित्यकर्म से निवृत्त हो आप तो यथा-समय चौपाल में उपस्थित हुए और धूर्त सहजराम चुपचाप दिल्ली चला गया। जब उसके दिल्ली चले जाने की सूचना आपको मिली तो आप बहुत चिंतित हुए। क्योंकि इस विरोध का प्रशमन करने के लिये ही आपने तीन दिन से उपवास किया हुआ था और उसकी सफलता सहजराम पर ही निर्भर थी। उसके दिल्ली चले जाने से आप अत्यन्त खिन्न हो मनाना से चले आये और उगालड़ा गांव में आकर भोजन किया। धिक्कार है उन लोगों को जिन्होंने आपके कठोर कष्टों को देख कर भी अपने कल्याण के लिये कुछ निर्णय नहीं किया।

इधर तीसरे दिन दिल्ली से सहजराम वापिस आया। जब वह सबेरे संभालका गाड़ी से उतर कर घर की ओर आ रहा था उस समय कुछ अन्धकार शेष था। रास्ता साफ़ नहीं दीखता था। शौच से निवृत्त हो वह हाथ धोने लगा तो अचानक उसका पांव फिसल गया। पास ही कूंआ था जिससे वह कूंए में गिर कर मर गया। जब लोगों को उसकी मृत्यु का तीसरे दिन पता लगा तो सबके मुख से अनायास यही निकला कि सहजराम को महात्मा के अपमान का फल मिला है। पाठक देखें क्या

यह महात्मा भक्त फूलसिंह के अपमान का ही तो फल नहीं है ? सत्य कहा है—

हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः ॥

अर्थात् पापी मनुष्य को उसका पाप ही ले डूबता है ॥

पटवार से त्याग पत्र— यह पहले लिखा जा चुका है कि समाज सेवा की बढ़ती अभिलाषा से प्रेरित होकर आपने पटवार से त्याग पत्र न देकर केवल एक वर्ष का अवकाश ग्रहण किया था । अब तो आपको लोकसेवा के कार्य में एक प्रकार का आनन्द आने लगा और उसमें पटवार का कार्य भी विघ्न प्रतीत होता था इसलिये आपके मनमें पटवार से त्यागपत्र देने के सङ्कल्प विकल्प उठने लगे ।

एक दिन आपने अपने हितैषी मित्रों के आगे अपनी यह अभिलाषा प्रकट की कि मैं अब पटवार का सर्वथा त्याग कर लोकसेवा में शेष जीवन को लगाना चाहता हूं । मित्रों ने आपको पटवार छोड़ने की सम्मति न दी । परंतु आप पर तो लोक सेवा का भूत सवार हो चुका था इस लिये आपने किसी भी मित्र की सम्मति का आदर न करते हुए पटवार से त्यागपत्र दे ही दिया । जब अधिकारियों को आप का त्यागपत्र प्राप्त हुआ तो वे बहुत

दुःखी हुए क्योंकि वे सब आपके पवित्र आचरण तथा कार्य से बड़े संतुष्ट थे। उन्होंने लिखा—"पटवारी जी ! पटवार से त्यागपत्र न दें। यह ठीक नहीं है। आपको जल्दी ही गिरदावर बना दिया जायगा। इस तरह आप की उत्तरोत्तर पदवृद्धि होती रहेगी।" इसके उत्तर में आपने अपने अधिकारियों को युक्तियुक्त शब्दों में लिखा कि आपके प्रेम के लिये धन्यवाद, परन्तु जिस ओर आप मुझे लेजाना चाहते मैं उधर जाना नहीं चाहता। मेरा उससे उलटा रास्ता है। जिस मार्गको आप कोमल समझते हैं वह मेरे लिये कण्टकाकीर्ण है। जिसको आप स्वर्ग समझते हैं मैं उसे नरक समझता हूँ। इसलिये आप मुझ पर सदा कृपा दृष्टि बनाये रखें और मेरा त्यागपत्र स्वीकार करें यही मैं आप से चाहता हूँ।"

आपकी इस दृढ़ता के आगे विवश हो अधिकारियों को झुकना पड़ा और सन् १६१८ में आपका त्यागपत्र स्वीकार कर लिया। धन्य है—

त्यागेनैके अमृतत्व मानशुः ॥

अर्थात् कुछ लोगों ने त्याग से अमरपद पाया है।

गुणवती का जन्म — उसी वर्ष अर्थात् सन् १६१८ में ही आपके घर दूसरे कन्यारत्न ने जन्म लिया, जिसका

नाम 'गुणवती' रखा गया। यह कन्या भी आपके अनुरूप ही सुन्दर गुणों से परिपूर्ण हो वृद्धि को प्राप्त हुई। इसके विषय में आगे चतुर्थ अध्याय में लिखा जायगा।

भाई कूडेराम का असह्य वियोग— पटवार से त्यागपत्र के दिनों में माहरा निवासी आपके अभिन्न सहयोगी भाई कूडेराम जी बहुत सख्त बीमार हो गये। यहां तक की खाट से उठना भी कठिन हो गया। यह बीमारी लगभग ६ मास तक चली। कभी २ जराजीर्ण जीवनमञ्जरी खिल उठती परन्तु दूसरे ही क्षण आशा वल्ली मुरझा जाती। आखिर आपके भाई की मृत्यु का दिन आ पहूँचा। उन्होंने आपको प्रेम पूर्वक बुलाया और कहा—"भाई! मैं आपकी सेवा के भावों को अपने दिल में लिये जा रहा हूँ। मैं आपके विचारों का दिल से स्वागत करता हूं। मैं कभी २ झूठे मोह में फंस कर आपके मार्ग को ठीक नहीं समझता था वह मेरी ग़ल्ती थी, मार्ग आपका ही ठीक था। अब मैं आपसे अन्तिम बात कहना चाहता हूँ कि आप समाज की सेवा में अपना जीवन लगादें।" फिर आंखों में आंसू भर कर कहने लगे—"भाई! मालूम नहीं अगले जन्म में आप जैसे भाई के दर्शन होंगे या नहीं। अगर भगवान् मुझे लम्बा जीवन देता तो मैं आपके कन्धे से कन्धा

भिड़ा कर काम करता । लो मेरी अन्तिम विदा ! यह कह कर उन्होंने सदा के लिये आंखें बन्द करलीं ।

उनकी मृत्यु का आपको बड़ा हार्दिक दुःख हुआ । आपने वैदिक रीति के अनुसार अपने भाई की अन्त्येष्टि क्रिया कराई । भाई के वियोग से आप की गृहस्थ से वैराग्य भावना बद्धमूल हो गई ।

चतुर्थ अध्याय

सन् १९१८ ई० से १९४१ ई० तक

सम्पूर्णता अथवा वानप्रस्थ आश्रम

वान प्रस्थ प्रवेश व सर्वस्व त्याग—

"एतद्धस्म वै पूर्वे विद्वांसः प्रजां न कामयन्ते किं प्रजया करिष्यामो येषां नोऽयमात्माऽयं लोक इति । ते हस्य वै पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरन्ति ।"

इस श्रौत ब्राह्मण वाक्य में कहा गया है कि प्राचीन काल में विद्वान् लोग अधिक सन्तान नहीं पैदा करते थे। बहुत से तो सर्वथा सन्तान की इच्छा से रहित हुए गृहस्थ-आश्रम में भी प्रवेश नहीं करते थे। सोचते थे संतान पैदा करके क्या करना है। यह संसार ही हमारी कृतार्थता है। इस लिये वे पुत्र की इच्छा अथवा धन कमाने की इच्छा से विरत हो भिक्षा चरण करते हुए जंगलों में निवास करते थे। जंगलों में जाकर—

यच्छेद् वाङ् मनसि प्राज्ञ स्तद् यच्छेज् ज्ञान आत्मनि ।
ज्ञान मात्मनि महति नियच्छेत् तद् यच्छेच् शांत आत्मनि ।

इस उपनिषद्वचन के अनुसार श्रद्धापूर्वक शम दम आदि तप का अनुष्ठान करते हुए मौन होकर वाणी को अन्तः करण रूप मनके अधीन करते, मनको ज्ञानरूप बुद्धि के अधीन करते, बुद्धि को अपने आत्मा के अधीन करते और आत्मा को शान्तस्वरूप परब्रह्म में लीन करते थे। वास्तव में मनुष्य जीवन की सम्पूर्णता भी यही है। चाहे सन्यास लेवे या न लेवे, पर यथा संभव काम क्रोध लोभादि वासनाओं को अवश्य जीते। इनको जीतने का अभ्यास करने के लिये ही गृहस्थाश्रम है। उसमें रह कर जिसने इनको जीत लिया और आत्मनिरीक्षण द्वारा दूसरों के लिये अपने आपको अर्पण कर देने की अकृपण नैपुण्यप्रवण भावना जिसमें जाग उठी, उसी लक्षणलक्षण लक्षित विलक्षण विचक्षण का जीवन क्षण पूर्ण है, वही सच्चा पुरुष है। क्योंकि पूर्ण जितेन्द्रिय होकर आत्मनिरीक्षण करने के लिये वानप्रस्थ आश्रम है। इसी लिये हमारे चरित्रनायक भक्त फूलसिंह पूर्व जन्म के भव्य संस्कार तथा इस जन्म के सत्संग से शीघ्र ही गृहस्थाश्रम से ऊब कर आत्मनिरीक्षण के लिये लालायित हो उठे। गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए ही शनैः शनैः सांसारिक भोगों से निवृत्ति होने लगी। संसार का उपकार करना ही मुख्य उद्देश्य हो गया। और उसी में आत्मकल्याण दीखने

लगा तो सन् १९१८ में अपनी धर्म-पत्नी श्री धूपादेवी जी के साथ नियम पूर्वक श्री पं० ब्रह्मानन्द जी (स्व. श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) से दीक्षित होकर वान प्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया और सदा के लिये गृहस्थ के सुख को तिलांजलि दे दी।

वान प्रस्थी होकर आपने सर्वमेध यज्ञ के रूप में सर्व स्व त्याग कर डाला। अपनी तथा भाई कूडेराम जी की ज़मीन जो कि ५० बीघा थी वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम करा दी। वहां पर आपका एक आर्य नवयुवक विद्यालय खोलने का विचार हुआ। आपकी प्रबल इच्छा थी कि १६ वर्ष के आर्य नवयुवक वहां सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि आर्य ग्रन्थों का अध्ययन करें, तपस्वी त्यागी बनकर बौद्ध भिक्षुओं की तरह देश विदेश में वैदिक सिद्धांतों का प्रचार करें जिससे विश्व भर में वैदिक धर्म फैलकर सब का कल्याण हो।

स्व. श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी से सत्यपरामर्श— बार बार ऐसी सुन्दर विचारधारा में लीन हुए आपका एक दिन अपने गुरु श्री पं० ब्रह्मानन्द जी (स्व. श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी)

से साक्षात्कार हुआ जो कि उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से नियुक्त हरियाणा प्रान्त में प्रधान उपदेशक थे। पंडित जी विहार प्रान्त के रहने वाले, ऋषि दयानन्द की पाठ विधि के भक्त, बड़े सज्जन उदार, त्यागी एवं सच्चरित्र पुरुष थे। उनके सामने आपने अपनी उच्च अभिलाषा प्रस्तुत की।

पण्डित जी ने प्रेम पूर्वक कहा कि-"भक्त जी ! मैं आप की भावना तथा विचार का स्वागत करता हूँ। आर्य समाज में उपदेशकों की बहुत कमी है इस कमी को दूर करना हम सब का कर्तव्य है। परन्तु अधूरे पुरुष इस काम को पूरा नहीं कर सकते। जिसका ज्ञान पूर्ण है वही संसार में सफल होता है। थोड़े से काल में पूर्ण विद्या नहीं प्राप्त होती है। उस की प्राप्ति के लिये काल अपेक्षित है इसलिये मैं आपको सलाह देता हूं कि आप नवयुवक विद्यालय न खोलकर एक गुरुकुल खोलें। उसमें छोटे २ बच्चे प्रविष्ट करावें। उनके जीवन को पवित्र बनाने के लिये सदाचार पूर्वक विद्या पढ़ाने का प्रबन्ध करें। धार्मिक विद्वान् हुए वे लड़के आपकी मनः कामना को पूर्ण करने वाले होंगे। यद्यपि इस कार्य में समय लगेगा किन्तु इसका फल मधुर होगा।" पण्डित जी की सारगर्भित बात

का आप पर बड़ा प्रभाव पड़ा। आपने नवयुवकों के विद्यालय का विचार त्याग कर बालकों के लिये गुरुकुल खोलने का निश्चय किया।

स्व० श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी का शुभाशीर्वाद तथा भैंसवाल गांव में गुरुकुल स्थापन— गुरुकुल के लिये उपयुक्त स्थान देखने के लिये आप हरियाणा प्रान्त में तीन वर्ष तक घूमते रहे परन्तु कोई स्थान उपयुक्त नजर न आया। एक दिन भ्रमण करते हुए आप आवली रिवाड़ा होकर भैंसवाल गांवमें पधारे। वहां ऐसा कौन चौधरी था जो आपकी सेवाओं से परिचित न हो और आपको न पहचानता हो आपके पधारते ही भैंसवाल के श्रद्धालु पुरुष आपको मिले और आपके आने का कारण पूछा। आपने कहा— "भाइयो! मैं आर्य समाज का प्रचार करने के लिये गुरुकुल खोलना चाहता हूँ। इसी लक्ष्य से आपकी सेवामें उपस्थित हुआ हूँ।"

भैंसवाल गांव के श्रद्धालु पुरुषों ने यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और विचार किया कि यदि हमारे इलाके में गुरकुल खुलता है तो इससे अच्छी और क्या बात है। उन्होंने अपनी सभा करके १५० बीघा ज़मीन का जंगल आप की सेवा में उपस्थित कर दिया। साथ

ही आश्वासन दिलाया कि हमलोग यथाशक्ति धन की भी सहायता करेंगे। आप उनके इस अपूर्व त्यागपूर्ण आश्वासन से बड़े सन्तुष्ट हुए और जंगल में मंगल करने के लिये तैयार हो गये। गुरुकुल खोलने से पूर्व उसकी आधार शिला रखने के लिये आप दिल्ली में स्व. स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की सेवा में उपस्थित हुए। उनको सब वृत्तांत कह सुनाया। सुनकर स्वामी जी बहुत प्रसन्न हुए और अपने आने की निश्चित तिथि आपको बतला दी। नियत तिथि पर गुरुकुल के लिये दी हुई जमीन को देखने के लिये आप श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के साथ भैंसवाल गांव के जंगल में आ विराजे। आपके साथ हज़ारों नरनारी जमा हो गये। जिसने सुना वही दूध की टोकनी भरके उस जंगल में उपस्थित हो गया। जिस जंगल में घुसते हुए पहले डर लगता था वही अब मंगलधाम ग्रामतुल्य लगने लगा। क्यों न लगे, वेद की आज्ञा जो है—

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् धिया विप्रो अजायत॥ (यजुः अ. २६ म. १५) अर्थात् जंगल की गिरिकन्दराओं में और नदियों के संगम में धार्मिक तपस्वी विद्वान् पैदा होते हैं।

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उस जंगल की भूमि तथा उपस्थित जनसमुदाय के उत्साह को देख बड़े

प्रभावित एवं आनन्दित हुए। कहने लगे-"भक्त जी! आप अवश्य इस स्थान पर गुरुकुल खोलिये। आप इसमें सफल होंगे। उत्साह व दृढ़ता से काम करें, धैर्य का त्याग न करें। अपने लक्ष्य से भ्रष्ट न होवें यही कसौटी काम करने की है इस प्रकार श्री स्वामी जी का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर आपने गुरुकुल का श्री गणेश किया। सन् १९१९ में गुरुकुल की स्थापना की गई। वह दिन वस्तुतः सारे हरियाणा प्रान्त में विशेपरूप से भैंसवाल के लिये सौभाग्य का दिन था जिस दिन उसके जंगल में मंगल हुआ। जिस दिन भैंसवाल में सवाल उठा कि बालकों का गुरुकुल खुलना चाहिये। जब तक गुरुकुल रहेगा तब तक भैंसवाल का नाम भी रहेगा।

गुरुकुल भैंसवाल का प्रथम महोत्सव— सन् १९२० में ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा के दिन गुरुकुल का प्रथम उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। १५, २० हज़ार की संख्या में नरनारी इकट्ठे हुए। लोगों का उत्साह प्रशंसनीय था। कवि कल्पनाओं में वर्णित सत्ययुग का समय दीख रहा था। वैदिक धर्म की ज्योति चमक रही थी ऋषि दयानन्द के प्रचार का परिणाम स्पष्टसम्मुख था। बड़े २ साधु सन्यासी महात्मा पण्डितों उपदेशकों के उपदेश व्याख्यान एवं

भजन हो रहे थे। मायाजाल का आवरण उतर रहा था। ज्ञान सूर्य के प्रकाश से अज्ञानान्धकार विलीन हो रहा था। उस समय सबके अग्रणी पूज्य स्व. स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की अपील पर २८०००) रु० इकट्ठे हुए।

गुरुकुलोपयोगी सहयोगियों का मिलना— प्रथम महोत्सव की अद्भुत सफलता देख कर सभी अपार हर्षोल्लास से नाच उठे।

विषमोपि विगाह्यते नयः कृततीर्थः पयसामिवाशयः।
सतु तत्र विशेष दुर्लभः सदुन्नयस्यति कृत्यवर्त्म यः॥

इस महाकवि भारविके कथनानुसार किसी काम को पहले करना ही कठिन होता है। एक बार रास्ता दिखाने पर तो सभी उस पर चलने लग जाते हैं। जैसे अज्ञात अगात जलाशय में कोई पहले तैरकर पार हो जाय तो दूसरे भी उसे देख तैर कर पार हो जाते हैं इस लिये अब आपके सहायकों की कमी न थी। सींख निवासी चौ. केहरसिंह जी (स्नातक महेश्वर के पिता) ने तो उत्सव होने से पहले ही आपके साथ अपने समस्त जीवन को जनसेवा में लगाने का वचन दे दिया था परन्तु वे दैवयोग से उत्सव होने से पूर्व ही इस लोक से चलबसे। वे अपना वियोग देकर आपका संयोग न ले सके। आप उनके उपयोगी उद्योग का सम्प्रयोग न कर सके। कैसा विचित्र

हरियाणा प्रान्त में आर्य समाज के प्रवर्तक



स्वामी ब्रह्मानन्द जी



त्याग मूर्ति चौ० स्वरूप लाल जी

विधिनियोग है ? अपने समान सहायक की इस हानि से आपको कितना कष्ट हुआ होगा इस बात को तो आपका हृदय ही जानता था ।

उनके अतिरिक्त निम्न सज्जनों ने अपना जीवन गुरुकुल की सेवार्थ सर्वथा समर्पण कर देने का वचन दिया उनके नाम सदा स्मरणीय हैं— खानपुर निवासी चौ. जयराम जी तथा वान प्रस्थी जयलाल जी, महराणा निवासी चौ. सुरजन सिंह जी, बुवाना निवासी चौ. ख्याली राम जी नम्बरदार, और आवली निवासी चौ. स्वरूपलाल जी ।

उक्त सज्जनों में अब केवल एक महानुभाव जीवित हैं । वे हैं स्वनाम धन्य चौ. जयराम जी । जो आज कल कन्या गुरुकुल खानपुर के स्तम्भ हैं (जिस के विषय में आगे लिखा जायगा) आप अत्यन्त वृद्ध हो गये हैं फिर भी आपका सारा समय कन्या गुरुकुल की सेवा में व्यतीत होता है । उसके ही आपको स्वप्न आते हैं ।

अनन्य भक्त चौ. स्वरूपलाल जी का गुरुकुल के लिये जीवन दान

दिवंगत सहयोगियों में वैसे तो सभी स्मरणीय एवं प्रशंसनीय हैं किन्तु विशेष रूप से आवली निवासी चौ. स्वरूपलाल जी की तरफ पाठकों का ध्यान दिलाना

आवश्यक है गुरुकुल भैंसवाल को कठिन विपत्तिकाल में से बचाकर निकालने का जो श्रेय चौ. स्वरूपलाल जी को प्राप्त है वह अन्य किसी को नहीं है। खास भैंसवाल गांव के चौ. थाम्भू जैसे भी जिसे न थाम सके उसे आवली के बावले सन्त मां के लाल स्वरूप लाल ने थाम कर दिखाया। निर्धनता के विकट संकट में इस योद्धा ने जो काम किया है उसे देखनेवाला ही जानता है। उस भयंकर आपत् काल में शायद बड़े से बड़े शूरवीर के भी पांव कांप जाते परन्तु हमारे चरित्र नायक के अनन्य भक्त परमशिष्य चौ. स्वरूप लाल जी ने अन्तिम दम तक गुरुकुल की सच्ची सेवा की। यह बड़े भारी महत्व की बात है जो कभी भुलाई नहीं जा सकती। इन के विषय में आगे भी लिखा जायगा अस्तु॥

गुरुकुल द्वारा समाज सेवा

गुरुकुल स्थापित हो गया। सहयोगी मिल गये। आरम्भ में एक सौ के लगभग बालक प्रविष्ट हुए। सबके भरण पोषण रहन सहन शिक्षणादि का प्रबन्ध शनैः शनैः होने लगा। उस समय बालकों से किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया गया। प्रबन्ध को सुचारूरूप से चलाने के लिये कमेटी बना दी गई। हमारे चरित्र नायक को समाज सेवा का मूर्तरूप मिल गया।

अब क्या था। 'द्वेवान ब्रह्मणो रूपे मूर्तंचा-मूर्तंच' के अनुसार परमात्मप्रेरणा से अत्यन्त प्रमुदित हो गुरुकुल का संचालन करने लगे। जैसा कि वान प्रस्थ का धर्म है—गांव से भीख मांग कर लाते, लाकर बच्चों को खिलाते उन्हें 'भारत तेरे कारण ऋषि ने विष पिया।' ऐसे २ मधुर भजन सुना कर सुलाते। प्रातःकाल के मन्त्र गाते जगाते। वन में संध्या हवन से जीवन पवन पावन बना मन ही मन सुख पाते। प्रतिदिन का यही कार्यक्रम हो गया। पहले एक व्यक्ति की सेवा करने में जो आनन्द आता था अब समाज की सेवा करने में उससे अधिक आनन्द आने लगा। गुरुकुल के निमित्त से सैंकड़ों लोग आते। अपना दुःख सुनाते। आप गुरुकुल का सचालन करने के साथ २ उनके दुःख भी दूर करते। झगड़े निपटाते। पारस्परिक वैर विरोध को मार भगाने का तो मानो आपने संकल्प ही किया हुआ था। जिस को थोड़ा सा भी दुःख होता वह झट आपकी सेवा में गुरुकुल पहुँच जाता। लोगों के लिये आप महान् कल्प वृक्ष के समान सुखद आश्रय बन गये। जहां कोई गांव आपस में झगड़ता दिखाई देता या कोई व्यक्ति दुःख संतप्त सुनाई देता आप उसी समय वहां पहुंच कर उसे शान्त करते थे। आप का यह सिद्धांत था कि—दुःख में जाओ बिना बुलाये, सुख में जाओ बुलाने

पर । क्यों न हो—

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम् ।।

अर्थात् कर्मवीर आदमी कर्तव्य पालन में सुख दुःख की पर्वाह नहीं करते ।

आठ दिन का अनशन व्रत

लग भग सन् १६२१ में एक दिन की घटना है कि किसी विशेष कार्यवश आप जूआं गांव में पधारे । वहां आपको दो तीन दिन तक ठहरना पड़ा । आपने देखा कि जाड़े के दिनों में भी गांव के स्त्री पुरुष नहर का पुल पास न होने से पानी के अंदर घुस कर पार होते हैं इससे उन्हें सर्दी लगती है और कष्ट होता है यह दृश्य देख कर आपको एक ठेस सी लगी । विशेषरूप से स्त्रियों की दयनीय दशा पर शोक भी हुआ क्योंकि वे लज्जावश अपने वस्त्रों को ऊपर भी न उठा सकती थीं जिससे उनके वस्त्र भीग जाते थे और वे जाड़ों में ठिठुरती जाती थीं । आपने इस कष्ट को दूर करने के लिये गांव वालों को इकट्ठा किया और कहा कि भाइयो !" जिस स्थान से होकर आप लोगों को नहर में घुसना पड़ता है वहां पर एक पुल का होना आवश्यक है । बिना पुल के सभी को कष्ट होता है । इस लिये तुम लोग पुल बांधने के लिये रुपये इकट्ठे करो जिससे सरकारी आज्ञा

प्राप्त करके उस स्थान पर पुल बांधा जा सके।''

आपकी बात सुनकर लोगों ने पुल की स्वीकृति तो दे दी परन्तु रुपया इकट्ठा न किया। तब आपने लोगों के कष्ट दूर करने के लिये ही स्वयं उपवास व्रत आरम्भ किया और वह व्रत आठ दिन तक लगातार चलता रहा पाठक समझ सकते हैं कि आठ दिन तक लगातार भोजन न करना कितना कष्ट दायक होगा ? साधारण मनुष्य तो एक दो दिन में ही घबरा जाता है उसमें ऐसी शक्ति कहां ? यह तो हमारे चरित्रनायक में ही अद्भुत अलौकिक शक्ति थी जो केवल एक बार नहीं, जीवन में सात आठ बार कम से कम ४ दिन तक बिना भोजन किये रह सकना। आगे जब पाठक आपके व्रतों तथा उनके कारणों पर विचार करेंगे तो महान् आश्चर्य सागर में डूबे बिना न रहेंगे। अस्तु.

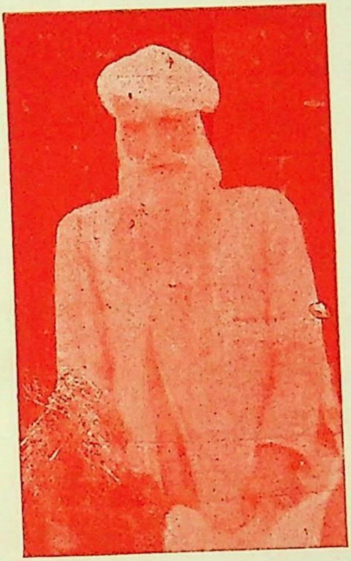
अब तो गांव वाले घबराये। आपके पास जा कर बोले-महाराज ! जो आप कहेंगे हम वही करेंगे। आप अनशन न करें। ऐसा कह झट आपकी इच्छानुसार सबने मिलकर ८०००) रु० इकट्ठा कर दिया। जिससे पुल बन गया और लोगों का कष्ट दूर हुआ।

इसी प्रकार का एक और भी उस गांव में झगड़ा

था जिस को आपने शान्ति से निपटा दिया। आपके तप से दोनों कार्य पूर्ण हुए। पुल बनने पर तो नरनारियों ने आप को बहुत धन्यवाद दिया। आज भी जूए गांव की नहर पर बना हुआ वह पुल वहां से गुजरनेवाले लोगों को आप की मधुर याद दिलाता है।

६ दिन का अनशन व्रत— इसी तरह आहुलाने गांव में दादा घासीराम व चौ. रामजीलाल का आपस में झगड़ा चल रहा था। गांव वाले भी दो दलों में बंटगये थे। आपको जब पता लगा तो झट आहुलाना पहुँचे। पहले दोनों को प्रेम पूर्वक समझाया। जब समझाने से सफलता न मिली तो आपने ६ दिन का अनशन व्रत आरम्भ कर दिया। जिससे प्रभावित होकर दोनों दल झुक गये और आपसी झगड़े को छोड़ प्रेम से रहने लगे। आपने दोनों दलों का एक पात्र में नमक डलवा कर यह झगड़ा सदा के लिये शान्त किया। दादा घासीराम जी तो आपके दीक्षित भक्त ही हो गये जो आगे चल कर गुरुकुल भैंसवाल के बड़े भारी सहायक बने॥ व्रतेन दीक्षामाप्नोति॥ अर्थात् व्रत से मनुष्य को कर्तव्य पालन में सफलता मिलती है।

आजीवन गुरुकुल महा सभा के प्रधान



श्री पूज्य दादा घासी राम जी

ब्र युधिष्ठिर जी को १५००) रु० का दान

गुरुकुल खुले तीन वर्ष व्यतीत हो चुके थे। तब तक यह गुरुकुल कांगड़ी की शाखा रूप में था। उसी के अधीन इस की पाठविधि नियमादि सब कुछ था। उस समय गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक ब्र. युधिष्ठिर जी विद्यालंकार (वर्तमान स्वामी व्रतानन्द जी आचार्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़) इस गुरुकुल के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता थे। उन्होंने इसका सम्बन्ध गुरुकुल कांगड़ी से हटा कर इसे स्वतन्त्र 'गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा' का रूप दिया और ऋषि दयानन्द की पाठ-विधि से शिक्षण आरम्भ किया। साथ में व्रताभ्यास (सदाचार) की कक्षायें भी चालू कीं। हमारे चरित्रनायक गुरुकुल का सब प्रबन्ध ब्र. युधिष्ठिर जी पर सौंप निश्चिन्त हो रहे थे और काम अच्छी तरह चलता देख भगवान् के गुण गा रहे थे। ब्र. युधिष्ठिर जी पर आपको ऐसा श्रद्धापूर्ण विश्वास था कि जो कुछ वे कह देते थे आप वही कर देते थे। ब्र. जी यद्यपि गुरुकुल से कुछ वेतन नहीं लेते थे तो भी आप उनके लिये सब कुछ देने को तैयार रहते थे। आपको तो वे एक अमूल्य निधि मिल गये थे। एक वार आपको किसी प्रकार मालूम हुआ कि ब्र. जी को घर के लिये १५००) रु. की अभी हाल में जरूरत है आपने झट उक्त धनराशि ब्र. जी को निर्व्याज

भेंट करदी । ब्र. जी ने भी आप को सच्चे भक्त के रूप में परख लिया और गुरुकुल कार्य के लिये दुगुना उत्साहित किया ।

गुरुकुल भूमि की स्थिरता के लिये घोर तप— अन्दर बाहर सब तरह से गुरुकुल की व्यवस्था ठीक होने पर भी आप को एक चिन्ता सता रही थी । अभी तक गुरुकुल भूमि का गुरुकुल के नाम इन्तकाल नहीं चढ़ पाया था । गांव का एक पाना इस कार्य में रुकावट डाल रहा था । आपने गांव के कतिपय सज्जनों के साथ मिलकर उस पाने के आदमियों को समझाया भी, पर वे मानने को तैयार न हुए । अन्त में आप स्वयं भैंसवाल गांव में पहुँचे । जिस पाने के लोग इन्तकाल नहीं होने देते थे वहां जाकर उनसे इस काम में रुकावट न डालने की प्रार्थना की । किन्तु वे फिर भी नहीं माने ज्येष्ठ का महीना था । गर्मी से सब जले जा रहे थे । चारों तरफ अग्नि की भयंकर ज्वालायें धधक रही थीं । हवा भी गर्मी के दबाव में अशक्त सी मन्द २ चल रही थी । ऐसे भयंकर ग्रीष्मकाल में आप बाहर जलती धूप में बैठ गये । और अन्न जल ग्रहण न करने का दृढ़ संकल्प कर लिया । आपने निश्चय किया अगर इस पाने के लोग मेरी बात को नहीं मानेंगे तो

मैं यहीं पर अपने शरीर को समाप्त कर दूंगा ।

इस हालत में पड़े हुए आपको दो दिन बीत गये । आप सख्त गर्मी के कारण बेहोश हो गये । गर्म २ श्वास चलने लगे । सारा शरीर पसीना हो गया । नाड़ियां भी सुस्त होकर अपना व्यापार कम करने लगीं, जीवन के लक्षण दीखने बन्द हो गये ।

जब इस हालत का दूसरे पाने के सज्जनों को पता लगा तो वे घबराये हुए आए और उस पाने के लोगों को धमका कर समझाया । आखिर उनको अपनी गलती मालूम हुई । वे आपके पांवों में गिर पड़े । अपने अपराध की क्षमा मांगने लगे । तब आपने सबको शांत करते हुए प्रसन्नता से अन्नजल ग्रहण किया । इतनी तीव्र भूमिका के बाद गुरुकुल भूमि का इन्तकाल गुरुकुल के नाम चढ़ाया गया ।

ली हुई रिश्वत वापिस लौटाना

अब तो जनता जनार्दन की सेवा करते२ मानसिक पवित्रता के साथ आपका आत्मिक बल इतना बढ़ गया कि किसी भी बुराई को सहन न करते थे । गुरुकुल भूमि की चिन्ता से निवृत्त हो अपने पुराने किये हुए पापों के प्रक्षालन का विचार करने लगे । पुराने पापों में एक पाप रिश्वत लेना भी था ।

पहले पटवारकाल में भिन्न २ लोगों से ५०००)रु० रिश्वत के लिये थे। उन्हें कैसे लौटाऊं यही चिंता दिनरात रहती थी। बातों २ में अपने प्रेमी मित्रों के आगे इस चिंता को व्यक्त भी कर देते थे। परन्तु उस पाप से छुटकारे का कोई उपाय समझ में नहीं आता था। आखिर आपने निश्चय किया कि अपनी माहरा गांव वाली ज़मीन को बेच कर रिश्वत से छुटकारा पाऊंगा।

जब यह निश्चय अपने प्रेमियों से प्रकट किया तो उन्होंने संमति दी कि आप ज़मीन बेचें नहीं, उसे गिरवी रखदें। आपको यह बात पसन्द आ गई। परन्तु ज़मीन थोड़ी थी इस लिये उतनी ज़मीन पर उस समय ५०००) रु० गिरवी में मिलना कठिन था। फिर भी आपने अपनी ज़मीन को गिरवी रखने का एक दिन निश्चित किया। उस समय आपके दूर २ के प्रेमी साहूकार भी वहां पधारे जिनमें गुतौली ग्राम निवासी चौ० रगीराम का नाम उल्लेखनीय है। जब गिरवी का प्रस्ताव रखा तब माहरा गांव में कोई भी आदमी उस ज़मीन के लिये ५०००)रु० लगाने को तैयार न मिला। यह देख कर आपके छोटे भाई रिच्छुराम ने आपकी इज्जत का साथी होते हुए कहा कि मेरे भाई भक्त जी के नाम जितनी ज़मीन है उतनी अच्छी से अच्छी ज़मीन कहीं से छांट ली जावे। अगर

ऐसा करने पर ५०००) रु० पूरे हो सकते हों तो पूरे कर लिये जावें। इतने पर भी जब कोई माहरा गांव वासी उस ज़मीन के लिए उतने रुपये लगाने को तैयार न हुआ तो फिर खानपुर निवासी चौ. जयराम जी ने कहा कि इतने मूल्य पर भक्त जी की ज़मीन को लेनेका अधिकार पहले माहरा निवासियों को है। अगर माहरा निवासी न लेना चाहेंगे तब दूसरे गांव वाले भी ले सकते हैं। ज़मीन लेने वाले हमारे पास आदमी तैयार हैं।

यह युक्तियुक्त बात सुनकर माहरा निवासियों ने आपस में विचारना शुरु किया। अन्त में माहरा गांव के जमींदार चौ. सूरड्डू ने खड़ा होकर कहा-माहरा गांव वाले ही इस ज़मीन को ले लेंगे। इसकी कीमत आपको मिल जायगी। थोड़ी देर बाद ही ५०००) रु० आप को दे दिये गये। आप ने उन रुपयों से पटवार कालमें ली हुई सारी रिश्वत वापिस करदी। जिससे जितनी जहां से ली थी उसकी उतनी वहीं पहुँचा दी। पाठक देखें पुराने पापों के प्रक्षालन का कैसा अद्भुत आदर्श है। इस प्रकार पाप की कमाई से हाथ धो आपको परम शान्ति लाभ हुआ। 'मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि'। मनुष्यों के प्रति किये गये पापों का दूर करने वाला भगवान् है॥

एक लाख रुपये का असिधार व्रत— इधर गुरुकुल का कार्य चल रहा था उधर आप समाज सेवा में लगे थे। आपके पवित्र कार्यों से जनता बहुत प्रभावित होती जा रही थी। गुरुकुल के प्रभाव से लोग बुराइयों को छोड़ने लगे थे। प्रायः सारे रोहतक ज़िले में आपके प्रभाव से लोग सत्संग का महत्त्व अनुभव कर आगे बढ़ रहे थे। क्योंकि—'सत्संगाद् भवति हि साधुता खलानाम्' के अनुसार तपस्वियों का प्रभाव जनता को अपनी ओर आकृष्ट कर ही लेता है।

सन् १६२४ की बात है। एक दिन गुमाना निवासी चौ. थानसिंह जी आपकी सेवा में उपस्थित हुए। आपने उनको संस्कार की महत्ता के विषय में बड़ा उत्तम सार गर्भित उपदेश दिया जिसे सुनकर वे बहुत ही प्रभावित हुए। और हाथ जोड़ कर कहने लगे कि मैं अपने पोते का मुण्डन संस्कार वैदिक रीति से कराना चाहता हूँ। आप कृपया अपनी गुरुकुलीय पण्डित मण्डली के साथ पधार कर मेरा घर पवित्र करें।

आपने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया और नियत दिवस पर पण्डित मण्डली समेत पधारने का वचन दिया निश्चित किये हुए दिन आप गुरुकुल के आचार्य व ब्र.

युधिष्ठिर जी आदि पण्डितों के साथ गुमाना गांव पधारे। वहां और भी गांव के अनेक आदमी इकट्ठे हो गये। बड़ी धूम धाम से संस्कार हुआ। वेदमन्त्रों की पावन ध्वनि के साथ यज्ञवेदि की पुण्यगन्ध सर्वत्र फैल गई। संस्कार के बाद बड़ी प्रसन्नता पूर्वक चौ० थान सिंह जी ने १०००) रु० की थैली आपके चरणों में रखदी। आपने उसे धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हुए तत्क्षण मन में यह शिवसंकल्प किया कि मैं एक लाख रुपया गुरुकुलार्थ संग्रह करूंगा। अपने इस पवित्र संकल्प की घोषणा भी आपने गुरुकुल प्रेमियों के आगे करदी। आपको भगवान की प्रेरणा से उस समय इतना अधिक उत्साह हो गया कि आपने अपनी शारीरिक शक्ति का ध्यान किये बिना ही सबके सामने यह भीष्म प्रतिज्ञा कर डाली—"जब तक गुरुकुल के लिये एक लाख रुपया इकट्ठा न हो जायगा तब तक मैं सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक खड़ा ही रहूंगा, बैठूंगा नहीं। केवल एक समय पावभर जौ के आटे का भोजन करूंगा और गुरुकुल से बाहर ही भ्रमण करता रहूंगा।

यह अब शिवसंकल्प न होकर रौद्र व्रत हो गया। साधारण बात न हो कर एक असाधारण समस्या

हो गई । महाकवि भवभूति ने सत्य कहा है—वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।

लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ॥

अर्थात् महात्माओं के दिल समय पर वज्र से भी अधिक कठोर और फूल से भी अधिक मुलायम हो जाते हैं ।

आपके इस भयङ्कर असिधार व्रत को सुनकर आपके प्रेमी बड़े चिन्तित हुए और जल्दी ही व्रत को पूर्ण करने में जुट गये । आप तो चन्दे के लिए गुरुकुल से बाहर निकल ही पड़े । उस समय अत्यन्त हर्ष प्रकर्ष युक्त भावावेश में किसी गांव ने दस हज़ार, किसी ने आठ हज़ार, किसी ने पांच हज़ार रुपये एक साथ दान में दिये । इस तरह यह धन राशि ५५०००) रु० तक हो गई । चन्दे में आपकी सहायता करने वाले सज्जनों में भैंसवाल गांव के चौ० अभयराम जी, आवली के चौधरी गणेशीराम जी, माजरे के चौधरी रामनाथ जी और रिवाड़े के चौधरी राजे राम जी विशेष स्मरणीय हैं ।

हिचकी की बिमारी तथा गुरुकुल की चिन्तनीय दशा

जिन दिनों आप चन्दे के कार्य में संलग्न थे उन्हीं दिनों अपने निजी कार्य के लिये भी कुछ व्यक्ति आपकी सेवा में उपस्थित होते रहते थे जिससे चन्दे का कार्य

बहुधा शिथिल करना पड़ता था । गुरुकुल कमेटी ने व्रत की शीघ्र पूर्ति के लिए कुछ रुपया कर्ज लेकर काम चलाया । इस प्रकार यह कठोर सिलसिला बराबर साढ़े तीन साल तक चलता रहा । यह आपके जीवन का मध्याह्न था जिसका प्रकाश चारों ओर फैल रहा था । हरियाणा इलाके में आप तीसरे गांधी प्रद्युतित हो उठे थे । इस समय घोर परिश्रम करने से आपको हिचकी की बीमारी लग गई । यह लगभग सन् १६२८ का समय था जब कि चीज़ें सस्ती और रुपया महंगा हो रहा था । अब तो कर्जे के रूप में लिया हुआ धन पहाड़ के समान बन गया । जो संस्थाएं जनता के सहारे चलती हैं उनकी दशा महंगाई के समय कैसी विषम हो जाती है यह तो वे ही जानते हैं जो ऐसी संस्थाएं चलाते हैं । यही दशा गुरुकुल की भी हो चली थी । क्योंकि गुरुकुल भी जनता से भीख मांगकर चलता था । गुरुकुल का वह ८ वां वर्ष था । कर्जे और महंगाई के दबाव से अन्य संस्थाओं के साथ गुरुकुल भी हिलने लगा था । आज गया या कल गया की अवस्था पैदा हो चुकी थी । रुपया न मिलने से कार्यकर्ता भी घबराने लगे थे । इधर बीमारी उधर कर्ज़ा बीच में व्रत की अपूर्णता । सब कुछ संकट ग्रस्त था । ये सब अवस्थायें मिलकर आपके दयनीय

स्वास्थ्य को निर्दय होकर पीस रही थीं। प्रेमी लोग बड़े चिन्तित थे। पर कोई रास्ता न था। क्या करें, क्या न करें। कुछ सूझता न था।

४ वर्ष बाद व्रत की पूर्ति तथा स्वास्थ्य लाभ

ऐसे विषम समय में भगवान् अपना स्वरूप प्रकट करते हैं जिसके फलस्वरूप रिवाड़े गांव के श्रद्धालु भक्त लोग ४५०००) रु० कीमत की १०० बीघा ज़मीन गुरुकुल के लिये दान में देते हैं उससे हमारे चरित्र नायक का एक लाख रुपये का असिधार व्रत पूर्ण होता है। ओ॑ क्रतो स्मर ॥ सच्चिदानन्देश्वराये नमोनमः ॥ हे कर्मशील मनुष्य तू ओम् का स्मरण कर जो कि सर्वव्यापक, सर्वरक्षक, सर्व-महान् है उसी की कृपादृष्टि से सब कार्य पूर्ण होते हैं। सच्चिदानन्द स्वरूप उस परमेश्वरको नमस्कार कर।

जिस दिन आपका व्रत पूर्ण हुआ उस दिन तो सचमुच ही समस्त कुलवासियों के हृदयकमल खिल उठे। सब में नवजीवन का संचार हो गया। आप पूरे ४ साल के बाद गुरुकुल में प्रविष्ट हुए थे क्या यह छोटी बात थी? कुलपिता ही यदि कुल से बाहर हो तो कुलपुत्र किसके सहारे रहें। किसको देखें, किसके पास जावें, किससे बात करें। आज पिता ने कुल में प्रवेश किया है

तो पुत्र क्यों न आनन्द मनावें। उनका रक्षक पालक पिता चिरकाल बाद आया है इसलिये सबने मिलकर विशेष दिन मनाया। गुरुकुल का कोना २ खूब सजाया। उसी शान्ति कोलाहल में शान्तिस्वरूप भगवान की दया से आपकी बीमारी भी शान्त हो गई। सा मा शान्तिरेधि॥ भगवान करे वह शान्ति सबको प्राप्त हो॥

परोपकार] आपके संपर्क में आनेवाले लोग जानते हैं कि आप मन से भी किसी का अनिष्ट नहीं सोचते थे। अगर कोई भूल से आपको अपना शत्रु समझ लेता था तो भी आप उसे अपना मित्र ही समझते थे। कभी संकट पड़ जाता तो आप अधिक से अधिक कष्ट सह कर भी उसकी सहायता करते थे।

आवली गांव के चौ. रतिराम जी नम्बदार अभी तक आपके संपर्क में नहीं आये थे। वे आपके गंभीर महत्व को अभी तक समझ नहीं पाये थे। प्रायः आपसे दूर ही रहा करते थे। एक बार उनके घरमें हज़ारों रुपयों की चोरी हो गई। आवली के चौ. गणेशीराम जी तथा चौ. स्वरूपलाल जी ने इसकी सूचना आपको दी तो आपने उसी समय चारों तरफ आदमी भेज कर सरकारी सहायता से चोरों का पता लगाया, उन्हें पकड़ कर कैद कराया और

नम्बरदार जी का धन वापिस दिलाया। नम्बरदार जी पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। वे आपके उपकार से दब गये। अपनी गलती अनुभव करते हुए तब से आपके यथार्थ स्वरूप को समझ गये ठीक ही है—

परोपकाराय सतां विभूतयाः॥

सज्जन मनुष्यों के सब काम परोपकार के लिये ही होते हैं।

देहात सुधार] पटवारकाल से ही आप ग्रामीण जनता की दुःखित अवस्था से परिचित थे। आपने यह अच्छी तरह अनुभव कर लिया था कि देहाती लोगों में दुःख के जहां अविद्या कुसंगति आदि अन्य बहुत से कारण हैं। वहां आभूषणों पर व्यर्थ खर्च करना भी एक मुख्य कारण है। प्रायः देहात के लोग विवाहादि अवसरों पर हज़ारों रुपये जेवर बनवाने में ही खर्च कर डालते हैं, उससे वे अन्त में निर्धन होकर दुःख पाते हैं। बहुत से तो जन्म भर कर्ज-दार बने रहते हैं। इस भद्दे रिवाज के साथ २ अन्य मद्य पानादि अनाचारों को भी रोकने के लिये आपने सन् १९२५ में गांधरा गांव में एक पंचायत कराई। जिसमें गठवाला गोत्र के अतिरिक्त अन्य गोत्रों के पुरुष भी समिलित हुए। और सर्व सम्मति से ग्राम सुधार के उप-

योगी नियम बनाये जो कि स्वर्गीय महात्मा गांधी जी के ग्राम सुधार प्रोग्राम से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। अगर उन नियमों का पालन गांव के लोग करें तो बड़ा भारी कल्याण हो सकता है।

(१) गुरुकुल के समीपस्थ विलान गांव में प्रसिद्ध चौ. राजेराम व स्योसिंह का किसी कारण आपसी झगड़ा चल रहा था। उन दोनों के विरोध स्वरूप गांवमें दो पार्टियां हो रहीं थी। क्योंकि स्वभावतः स्वार्थी मनुष्य विरोध के दुष्परिणाम को नहीं पहचानते। आप को जब इस बात का पता लगा तो आपने आसपास के गांवों की पंचायत इकट्ठी की और सब लोगों के साथ उक्त दोनों व्यक्तियों को विरोध से होने वाली हानियां समझाईं। जिससे दोनों का झगड़ा शान्त हुआ और वे दोनों घर सुख शान्ति से रहने लगे।

(२) बीघल गांव के एक पाने के पास सबकी साझली कोई चौपाल न थी। इस लिये उस पाने के आदमी चौपाल बनाना चाहते थे। परन्तु आधा पाना उस चौपाल के बनने में रुकावट डाल रहा था। जब आपको इसकी सूचना मिली तो आप अपने सिद्धान्त के अनुसार बीघल पहुँचे। विरोधी लोगों को प्रेम पूर्वक समझाया, पर वे न माने। तब आप स्वयं चौपाल की नींव में घुस कर बोले-

मैं इस काम को प्रारम्भ करता हूँ। पहले मुझे मारो। यह सुनना था कि विरोधी पक्ष पर लज्जा के मारे सौ २ घड़े पड़ गये। उन्होंने अपने अपराध की क्षमा याचना करते हुए उस जगह चौपाल बनाने की स्वीकृति दे दी। फिर वहां सुन्दर चौपाल बनी। जिसमें बैठे अनेक मनुष्य आज तक आप का गुणगान करते हैं।

(३) एक बार की बात है कि खानपुर गांव के किसी झगड़े को सुलझाने के लिये आप वहां गये। आप उस झगड़े को पंचायती तरीके से सुलझाना चाहते थे। इस लिये आपकी बात सारे गांव ने स्वीकार कर ली। परन्तु दुलीराम नाम का एक व्यक्ति कई बार समझाने पर भी न माना। तब आपने अपना सिर उसके पांवों में टेकते हुए कहा—"भाई! इस गांव को बसने दे। तू सबकी अशान्ति का कारण न बन।" पर वह आपकी बात अनसुनी करके झट आपको झटका देता हुआ वहां से चला गया। झटका देते समय उसका पांव आपके सिर पर लगा। इससे आपको तो साधु स्वभाव होने से कुछ बुरा लगना ही न था, उसने भी इस धृष्टतापूर्ण व्यवहार पर कुछ पश्चाताप न किया।

पर अदृष्ट शक्ति देखिये। वहां से जाने के बाद ही

उसके सिर में दर्द हो गया। वह दर्द ऐसा हुआ कि लगातार तीन वर्ष तक चला। अन्तिम घड़ी भी उसने उसी दर्द में पूरी की। जनसाधारण में यह विश्वास फैल गया कि दुलीराम को भक्त जी महाराज की अवज्ञा का यह कटुफल भोगना पड़ा है। इसमें क्या सन्देह है। महात्माओं के साथ बुरा बर्ताव करने वालों का ऐसा ही हाल होता है। सुनते हैं महर्षि दयानन्द को विष देनेवाले जगन्नाथ को भी अपनी करनी का फल भोगना पड़ा था। हिंस्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः ॥

(४) डबरपुर निवासी श्री चौ० नेकीराम और श्री चौ० भरत सिंह का जमीन के सम्बन्ध में बड़ा झगड़ा बढ़ गया था। यहां तक कि दोनों तरफ से हत्यायें भी हो चुकी थीं। दोनों पक्ष के लोग दुःखी होते हुए भी अपनी मानहानि के भय से झुकने को तैयार न थे। आप यह समाचार सुनते ही तुरन्त घटनास्थल पर पहुँचे। पंचायत इकट्ठी की। दोनों को शान्ति से समझाया। आपके समझाने का तरीका ऐसा विलक्षण था कि कट्टर से कट्टर आदमी भी पिघल जाता था। फल यह हुआ कि दोनों ने आप की बातें प्रसन्नता से मान लीं और सुख से जीवन व्यतीत करने लगे। देखिये, कहां तीव्र विरोध और कहां तीव्र प्रेम सम्बन्ध ? इस विषमालंकार को समालंकार बनना

आपका ही काम था।

हरिजनोद्धार] विचित्र अघमर्षण की एक घटना है। पटवार के दिनों में उग्लाना गांव में आपने एक बूढ़े चमार को जूते से पीटा था। आपने पता लगाया कि वह बूढ़ा चमार अभी जीता है। आप उसके घर पधारे। उसके पांव पकड़ अपना जूता उसको देकर कहने लगे कि-"पिता जी! मैंने पटवार के नशे में आकर आप को जूते मारे थे। अब आप भी कृपया मेरे जूते से मुझे मारिये जिससे मेरा पाप दूर हो।" वह बूढ़ा चमार यह दृश्य देख कर हका बका रह गया। आपकी अत्यधिक नम्रता से इतना द्रवित हुआ कि फूट २ कर रोने लगा आप भी भावुकतावश अपने को न रोक सके। रोते २ आपकी हिचकियां बंध गईं। पूर्णरूप से पाप प्रक्षालन हो गया। अन्त में उस चमार ने कहा कि आप तो महाराज "मनुष्य के रूप में भगवान् हैं। मुझे लज्जित न करें।" पर आप कब मानने वाले थे। आपने उस चमार को दस रुपये भेंट देकर जूते मारने का दण्ड वापिस लिया। भला इससे अधिक पापशोधन का दृष्टांत कहां मिलेगा? पाठक ध्यान दें आत्मशुद्धि का कैसा प्रत्यक्ष दर्शन है। जिसे देख कर स्वर्गीय महात्मा गांधी

का हरिजनोद्धार स्मरण हो आता है।

गोरक्षा के लिये १९ दिन का अनशन व्रत

सन् १९२८ में एक समय आप गुरुकुल के चन्दे के लिये रियासत जींद के ललतखेड़ा गांव में पधारे। वहां जाकर आपने जो गौओं की अवस्था देखी तो बड़ा दुःख हुआ क्योंकि गौओं के खड़े होने के लिये वहां कोई गोरा (गोष्ठस्थान) न था इस लिये गौएं घर में ही बंधी रहती थीं। आपने लोगों को बुलाकर गोरा छोड़ने के लिये कहा परन्तु गांव वालों ने आपकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब आपने देखा कि ये लोग यूं न मानेंगे तो आपने उपवास करने की ठानी। लोगों से कह भी दिया कि अगर तुम मेरी बात को नहीं मानोगे तो मैं अपना जीवन यहीं समाप्त कर दूंगा, उसका जो परिणाम होगा वह तुम को भोगना पड़ेगा। ऐसा कह आपने उपवासरूप महास्त्र का प्रयोग आरम्भ कर दिया। वह उपवास कोई मामूली उपवास न था, वह तो १९ दिन तक लगातार चलनेवाला एक कठिन अनशन व्रत था। उस अति कठोर दीर्घ अनशन को देख गांव वाले घबरा गये और आप की आज्ञानुसार गौओं के लिये गोरा छोड़ने को विवश हो गये जिससे गौएं आराम से उस जगह बैठने लगीं।

यह आप की महान् विजय थी। इससे आप का गौओं के प्रति अत्युत्कृट प्रेम प्रकट होता है। पाठक देखें गोमाता के लिये अपने शरीर का बलिदान कैसे किया जाता है।

शुद्धि कार्य के लिये ११दिनका अनशन व्रत

जहां गोरक्षा के लिये आप इतने प्रयत्नशील थे वहां दूसरे मज़हब में गये हुए, अछूत माने हुए आर्य भाइयों को पुनः वैदिकधर्म में दीक्षित कर शुद्ध बनाने की भावना भी आप में अति प्रबल थी। सन् १९२८ की ही बात है। आपको पता लगा कि जि० गुड़गांवा के होडल पल्वल गांवों में मूले-जाटों के कुछ गांव यवनमत को छोड़ वैदिक धर्म में दीक्षित होना चाहते हैं। आप तुरन्त वहां पहुँचे और जाटों की पचायत को इकट्ठा किया। आपके प्रयत्न से और सब लोग तो उनकी शुद्धि के लिये तैयार हो गये, केवल वहां का एक जैलदार ही शुद्धिकार्य में रुकावट डाल रहा था। आपने उसको इस पुण्य कार्यार्थ तैयार करने के लिये उपवास आरम्भ कर दिया। यह उपवास भी साधारण न था, यह घोर अनशन व्रत था जो लगातार ११ दिन तक चलता रहा। जब इसकी सूचना आपके भक्तों को मिली तो वे तुरन्त घटनास्थल पर पहूँचे। आपके

परम सहायक दीनबन्धु स्व. चौ. छोटूराम भी सूचना पाकर होडल पल्वल पधारे। वहां लगातार उपवासों से अतिकृशकाय आपको देखा तो दिल दहल गया। आखिर चौधरी साहब ने आश्वासन दिया कि आप विश्वास रखें, आपका कार्य अवश्य सम्पन्न होगा। आपने अपने बन्धु के विश्वास पर अनशन छोड़ दिया।

जाति बन्धन तोड़ना

देहात सुधार में आपसी झगड़ों को दूर करने के अतिरिक्त आप गोतनात एवं जातियों के झगड़े भी शान्त करना चाहते थे। रोहतक ज़िले में गठवाला और दहिया नामके दो प्रसिद्ध गोत हैं। सन् १८५७ के गदर के समय कभी बेसमझी से इन दोनों गोतों में विरोध पैदा हो गया था। स्वार्थी आदमी पुरानी झगड़े की बातें सुना २ कर आपसी वैरभाव पैदा करते रहते थे। आप इस गोत्रभेदमूलक विरोध को समूल नष्ट करने के लिये सुअवसर की प्रतीक्षा में थे। भगवान् की दया से वह सुअवसर प्राप्त हो गया।

सन् १६२६ के जून मास में रायपुर गांव का केहर सिंह नाम का एक मुसलमन जाट लड़का शुद्ध हुआ। मटिण्डू निवासी चौ० हरिद्वारी सिंह जी दहिया ने

अपनी लड़की का वाग्दान उस लड़के से कर दिया। भाती का काम गठवाला गोत के जिम्मे था। उस शुभ काम में सबके अग्रणी नेता हमारे चरित्र नायक आप ही बने। आपके पृष्ठपोषक आहुलाने के दादा घासीराम हाथी पर सवार हो १६००) रु० भात के रूप में ले अपने दल बल सहित पधारे। तदन्तर विवाह सानन्द सम्पन्न हुआ।

उस समय सर्वत्र आनन्द की लहर दौड़ रही थी। परस्पर बन्धुत्व की भावना से सब ओत प्रोत थे। वैरभाव सर्वथा नष्टप्राय था। दोनों गोत्र प्रेमसूत्र में बंधे खड़े थे। जाति बिरादरी के लिये नवयुग सा प्रतीत हो रहा था। इस नूतन पथ के प्रदर्शक आपकी भूरि २ प्रशंसा की जा रही थी। आप इस कार्य में सफल होकर परस्पर बिरादरी के प्रेम को और अधिक दृढ़ करना चाहते थे, जन्म से जातिबन्धन तोड़कर वेदोक्त गुणकर्मस्वभावानुकूल ही जाति गोत्र का सम्बन्ध सर्वत्र फैलाना चाहते थे परन्तु कुछ अत्यन्त स्वार्थी लोगों ने आपकी इस उच्च भावना का पूर्ण आदर नहीं किया जिससे आपको बहुधा कष्ट होता था।

अहिंसा की शिक्षा — ज़ि० रोहतक के जागसी गांव में दो कुटुम्बों का आपसी झगड़ा हो गया। झगड़े में एक

दूसरे को मारने तक की नौबत आ गई। आषाढ़ी का समय था। खेती पक चुकी थी। और सब घरों के लोग तो अपने २ खेतों में काम करने जाते। परन्तु उन दोनों घरों का जीवन नारकीय बना हुआ था। दोनों घरों के आदमी एक दूसरे को मारने की घात में घर में ही रहते थे। केवल स्त्रियां ही खेत में जाती थीं। ऐसी अवस्था में ऐसे दुःखितों के झगड़े निपटाना ऐसे भीषण एवं घृणित कष्टों से उन्हें उबारना किसी सहृदय तपस्वी सज्जन का ही काम था। जब आपको पता लगा कि उक्त दो कुटुम्ब अति दुःखी हैं तो आप अपने आवश्यक कार्य को भी छोड़ जागसी गांव पधारे। जिसने दूसरे घर का आदमी मारा था उससे बोले कि तुम उस आदमी के घर जाओ जिसका आदमी तुमने मारा है और जाकर उससे हाथ जोड़कर कहो कि भाई! मुझ से बड़ा अपराध हुआ जो मैंने तुम्हारे आदमी को मारा है उसके बदले तुम चाहे मुझे या मेरे सारे कुटुम्ब को मार लो। आपके मृदु अहिंसा भरे वचनों से प्रेरित हो उसने वैसा ही किया। उस के कोमल सरल सुन्दर हार्दिक नम्रभावों का उस दूसरे आदमी पर इतना अधिक गहरा प्रभाव हुआ कि उसने उसको पूर्णतया क्षमा कर दिया। वह भी धुल गया। यह तो धुला हुआ आपने भेजा ही था।

इस प्रकार दोनों का पाप धोकर आप प्रसन्न हुए । सत्य है—अहिंसमैव भूतानां कार्यं श्रेयोनुशासनम् ॥ अर्थात् सबके साथ प्रीतिपूर्वक यथायोग्य नम्र होकर कल्याण की भावना रखते हुए व्यवहार करना चाहिये ।

स्त्री जाति का उद्धार

एक दिन सिरसा जांटी गांव का एक नेकीराम नामक सज्जन आंखों में आंसू भरकर आपके पांवों में गिरा और रोता हुआ बोला- "भक्त जी महाराज! आप ही इस इलाके के मां बाप हो। मैं सब ओर टकराकर अब आपकी शरण में आया हूं अगर आपसे भी कोई सहायता न मिली तो मृत्यु के सिवाय मेरा और कोई चारा नहीं है।" आपने उसकी बात सुनकर कहा कि भाई नेकीराम! कहो क्या बात है? क्यों रोते हो? इतने संतप्त क्यों हो? अपने को दुःखी मत करो।" आपका प्रेमपूर्ण आश्वासन पा कर वह बोला कि महाराज! "मेरी लड़की मेरे ही गांव वालों ने उठाकर मुसलमान रांघड़ों के पास पहुँचा दी है। अब वहां से लड़की को लाना मेरे लिये अति कठिन है। क्या करूं।

आपने उसकी करुण कहानी सुन कर आश्वासन देते हुए कहा कि "प्यारे! प्रभू पर विश्वास रखो। वह सबके

संकटों को दूर करने वाला है। वही सबका रक्षक है। जैसा मुझ से होगा मैं भी प्रयत्न करूंगा।" इतना कह आपने उसे विदा किया और लड़की के उद्धार के लिये चल पड़े। रात दिन आपको इसी बात की धुन रहती। अन्त में आपने पता लगाया कि गूगाहेड़ी नाम के मुसलमान रांघड़ों के गांव में वह लड़का है। आप फरमाना और निदाना दो गांवों की पंचायत लेकर गूगाहेड़ी पहुँचे। वहां मुसलमानों से लड़की वापिस करने को कहा। पर दो दिन बीतने पर भी मुसलमानों ने कोई ठीक उत्तर नहीं दिया। तब बुद्धि पूर्वक कार्य करने वाले आपने निदाना की पंचायत को कर्तव्याकर्तव्य समझाया। अगले दिन पंचायत ने उन मुसलमान रांघड़ों से फिर पूछा कि लड़की को दे दो, पर वही ढाक के तीन पात। उत्तर मिला कि यहां लड़की नहीं है। यह सुन कर क्षात्रतेज से परिपूर्ण निदाना की पंचायत ने गूगाहेड़ी वाले रांघडों को जोरदार शब्दों में जवाब दिया कि "अगर यह लड़की तुमने रखनी है तो इसे निदाना की लड़की समझ कर रखना।" इसके बदले अगर हमने तुम्हारी तीस लड़कियें न उठाईं तो हम भी समझ लेंगे कि हमने अपनी मां का दूध नहीं पिया।"

गम्भीर चेतावनी के रूप में दी हुई उस पंचायत की धमकी का उन मुसलमानों पर ऐसा व्यापक प्रभाव पड़ा कि वे अगले ही दिन उस लड़की को हमारे चरित्रनायक की सेवा में छोड़ गये। और अपने अपराध की क्षमा याचना करने लगे। आपने उस लड़की को लेकर उसके पिता को सौंप दिया। लड़की विचारी चिर काल बाद अपने पिता के दर्शन कर फूट २ कर रोने लगी। प्रेम-विह्वल पिता पुत्रियों का करुणाक्रन्दन कैसे वर्णन किया जा सकता है। उस समय तो हमारे चरित्रनायक के प्रति श्रद्धा भक्ति पूर्ण प्रेम भाव के साथ करुणा रस का सम्मिश्रण हो रहा था वह लड़की और उसका पिता दोनों ही आपको कृतज्ञता भरे नयनों से निहार रहे थे। वाणी द्वारा दिये हुए उनके अनेक धन्यवादों का तो मूल्य ही क्या था। आखिर जितना भी वे दोनों आप का गुणगान कर सकते थे उतना कर अपने घर लौटे।

राजनीति में पक्षपात रहित व्यवहार प्रदर्शन व अनशन

..माज सेवा केलिये उपयुक्त समझ कर सामयिक राजनीतिमें भी आप भाग लेते थे। गरीबों की भलाई के लिये राज्याधिकार लेना आप बहुत अच्छा मानतेथे। ऐसेम्बली के चुनावों में जिस उम्मीदवार को आप गरीब जमींदारों का सच्चा

हितैषी समझते थे उसी को वोट देने दिलाने का प्रयत्न करते थे। ऐसा करने में परस्पर वैमनस्य की भावना न पैदा हो इसका भी पूर्णध्यान रखते थे। अर्थात् सबको प्रसन्न रखते हुए पक्षपात रहित धार्मिक पक्ष का समर्थन करना ही आपका ध्येय रहता था। आप यह कदापि नहीं चाहते थे कि एक ज़िले के आदमी दो दलों में विभक्त होकर एक दूसरे का अनिष्ट चिन्तन करें।

सन् १६३० में पंजाब लेजिस्लेटिव एसेम्बली के चुनाव हुए। तहसील गोहाना तथा रोहतक की ओर से चौ. टीकाराम व चौ. बलदेवसिंह चुनाव में खड़े हुए। दो व्यक्तियों के परस्पर संघर्ष से सारा रोहतक ज़िला दो भागों में विभक्त हो गया था। उससे विरोध बढ़ने की पूरी संभावना थी। आप ने दोनों उम्मेदवारों को प्रेम पूर्वक बुलाकर समझाया कि आप दोनों में से एक को बैठ जाना चाहिये इसी में सबका भला है। परन्तु उस समय जयश्री के लोभ से आपकी बात पर कौन ध्यान देता? दोनों ही डटे रहे। आपने और कोई समझौते का उपाय न देखकर अनशन व्रत आरम्भ कर दिया। तब तो दोनों उम्मेदवारों को आपकी बात स्वीकार करनी पड़ी। फिर आपने विचार पूर्वक चौ० टीकाराम जी का नाम उम्मेदवारी के लिये निश्चित कर दिया। और उससे

दोनों पक्षों को सन्तुष्ट समझ उपवास तोड़ दिया। यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि चौ० बलदेव सिंह ने पहले आपकी बात स्वीकार करके भी पीछे से वचन भङ्ग कर दिया और चुनाव में खड़े होकर जीत गये। यह जीत वास्तव में बलदेव सिंह की न हो कर आपकी थी। बलदेव सिंह तो वचन भंग करने से पराजित ही समझने चाहियें।

कन्या पाठशाला की स्थापना तथा गुरुकुल में अर्थकष्ट की पराकाष्ठा

जैसे कि पहले लिखा जा चुका है कि सन् १६२८ में गुरुकुल भैंसवाल की बड़ी चिन्तनीय दशा हो गई थी। जो लगभग ४ साल तक लगातार चलती रही। उसी समय हमारे चरित्रनायक के मन में यह शुभ विचार उत्पन्न हुआ कि बालकों की शिक्षा के साथ २ कन्याओं की शिक्षा का प्रबन्ध भी होना चाहिये क्योंकि जब तक स्त्रियें शिक्षित न होंगी तब तक पूर्ण कल्याण नहीं होगा। ऐसा दृढ़ निश्चय करके आपने स्त्री शिक्षा के उद्देश्य से ज़ि० रोहतक के खानपुर गांव के समीप ही जंगल में कन्या पाठशाला की स्थापना की। जिसने आगे चलकर सन् १६३६ में 'कन्या गुरुकुल खानपुर' का रूप धारण किया। प्रारम्भ में २० के लगभग कन्यायें प्रविष्ट हुईं। उन सब के

पालन पोषण शिक्षण का प्रबन्ध भी होता रहा। इधर जैसे तैसे १० वर्ष से बालकों का गुरुकुल चल रहा था। उधर वैसे ही बालिकाओं के नूतन गुरुकुल की व्यवस्था भी हो रही थी। दोनों संस्थाएं निःशुल्क थीं। सबके भोजन वस्त्र का प्रबन्ध जनता से चन्दा मांग २ कर किया जा रहा था यह सन् १९३० की बात है जब कि रुपया महंगा और चीजें सस्ती हो गई थीं। ऐसे विषम समय में पाठक समझ सकते हैं निःशुल्क दो संस्थाओं के भार को उठाना किसी कर्मठ पुरुष का ही काम था। क्योंकि गुरुकुल में किसी प्रकार का शुल्क न था, हमारे चरित्रनायक प्रायः जनता के कामों में लगे रहते थे उससे चन्दे के कार्य में भी पर्याप्त शिथिलता आ गई थी। इन सब कारणों से गुरुकुल की आर्थिक दशा वस्तुतः शोचनीय थी। निर्धनता में किसी का विश्वास नहीं रहता। अपने आदमी भी किनारा कर जाते हैं। ऐसी हालत में गुरुकुलार्थ लिये हुए ऋण का वापिस देना भी कठिन हो गया था। उस समय आर्थिक कष्ट की पराकाष्ठा यहां तक हो चुकी थी कि लिफाफे के लिये -)। पांच पैसे के टिकट भी गुरुकुल में नहीं रह गये थे। 'विपद् विपद मनुवध्नाति' के अनुसार गुरुकुल में गृहकलह ने स्थान ग्रहण कर लिया। आपके सहयोगी जीवनदानी महा-

नुभाव बात २ में आप से झगड़ने लगे । यह नहीं किया, वह नहीं हुआ, हमारी बात नहीं मानी, इसका फल अच्छा नहीं होगा इस प्रकार विवाद खड़ा हो गया। आपने उन सबको पहले इकट्ठे करके फिर एक एक करके समयानुकूल बड़े प्रेम से समझाया परन्तु उन पर कोई प्रभाव न पड़ा । आप गुरुकुलीय अर्थकष्ट के साथ २ गृहकलह की भट्टी से दग्ध होते हुए भी बड़े धैर्य से कार्य कर रहे थे। उस वीभत्स आपत्काल में आपके सहयोगियों का धैर्य टूट गया और वे निर्धनता में लटकती हुई गुरुकुल की गाड़ी को असहाय अवस्था में छोड़ सभी चुपचाप खिसक गये । जिससे आस पास के ग्रामों में गुरुकुल का प्रभाव भी कुछ शिथिल हो गया। परन्तु आपका धैर्य उस समय भी प्रशंसनीय था । राज्य से निर्वासित राणा प्रताप के समान आप बड़े धैर्य के साथ निर्धनता का मुकाबला कर रहे थे। साथ में विरोधियों के ताने भी शान्ति से सह रहे थे । प्रभु पर विश्वास रखते हुए आप अपने गन्तव्य मार्ग पर चल रहे थे। उस विकट संकटकाल में आपके धैर्य, वीर्य, शौर्य को देख विरोधी लोग भी दांतों तले अंगुली दबाते हुए आपकी मन ही मन प्रशंसा करते थे।

ऐसे दारुण कष्ट काल में केवल एक सहयोगी

दृष्टिगोचर होते हैं जो आपके जीवन भर परम सहायक बने रहते हैं। वे हैं स्वनामधन्य स्व० चौ० स्वरूप लाल जी। चौधरी जी उस भीषण अवस्था में भी आपको न छोड़ सके। निर्धनता के उद्दाम साम्राज्य में आपके अनन्य आश्रय वे ही थे। उनका गुरुकुल ही घर, गांव, नगर और देश था। वे गुरुकुल के लिये ही जीते, मरते, चलते, रोते, हंसते थे। गुरुकुल की थोड़ी सी हानि से भी वे तड़प उठते थे। जब कोई उन से कहता कि अब गुरुकुल नहीं चल सकता है तब वे उत्साहयुक्त क्रोध में आकर कहते थे कि तुम चाहे सौ विरोध करो किन्तु गुरुकुल की गाड़ी कभी नहीं रुक सकती है। उन्होंने आपको कष्ट दिये बिना ही स्वयं चन्दे का काम प्रारम्भ किया। जिससे कुछ समय बाद अन्न की समस्या अच्छी तरह हल हो गई। ऐसे परम सहायक तपस्वी को पाकर भला आप क्यों न कृतकृत्य हों?

इसके अतिरिक्त आपके दुःख से दुःखी दीनबन्धु स्व. चौ. छोटूराम जी तथा सेठ श्री जुगल किशोर जी बिड़ला ने भी गुरुकुल के आपत्यकाल में यथा शक्ति आर्थिक सहायता की थी जिससे गुरुकुल की स्थिति बहुत कुछ ठीक हो गई। इसके लिये उक्त दोनों महानुभाव धन्यवादाई हैं।

गुरुकुल के प्रथम स्नातक व उनकी निष्काम सेवा— सन् १९२५ में गुरुकुल के प्रथम आचार्य ब्र. युधिष्ठिर जी के आवश्यक कार्यवश त्यागपत्र देकर चले जाने के पश्चात् ऋषि दयानन्द की पाठविधि के अनुकूल ही शिक्षण कराने के लिये ऋषि भक्त स्व. श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज सन् १९२९ तक गुरुकुल के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता रहे। सहायक मुख्याधिष्ठाता किंवा मुख्याध्यापक पद पर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के योग्य स्नातक स्व. श्री पं० विश्वनाथ जी शास्त्री न्याय व्याकरणतीर्थ कार्य करते रहे। उन्होंने प्राचीन आर्य शैली के साथ २ उच्च कक्षा के ब्रह्मचार्यों को नवीन ग्रन्थों का रसास्वादन भी कराया। गुरुकुल का प्रबन्ध करते हुए उन्होंने ब्रह्मचारियों को वेद व्याकरण साहित्य दर्शनादि शास्त्रों की शिक्षा देकर योग्य विद्वान् बनाया। उसके तीन वर्ष बाद सन् १९३२ में गुरुकुल से स्नातक निकलने का सिलसिला आरम्भ हुआ। गुरुकुल को स्थापित हुए यह १३ वां वर्ष था। १३ वर्ष बाद हमारे चरित्रनायक फूलसिंह की फुलवाड़ी के खिले हुए फूल निकल रहे थे। यह देख कर किस को खुशी न होती? मार्गशीर्ष मास का वह गुरुकुलीय महोत्सव अपनी अभूत पूर्व शान की सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। उसमें सर्वप्रथम ३ ब्रह्मचारी स्नातक

बने। ब्र० विद्यानिधि जी, ब्र० हरिश्चन्द्र जी और ब्र० सत्यवीर जी। जो गुरुकुल की 'विद्याप्रभाकर' उपाधि से विभूषित किये गये। स्नातक होने के बाद उन्होंने सरकारी 'शास्त्री आचार्य' आदि उपाधि भी प्राप्त की। उनका स्नातकवेश दर्शनीय था। जिसे देखने के लिये जनता उमड़ पड़ी। लगभग १०, १५ हज़ार की संख्या में उपस्थित लोग प्रथम स्नातकों को देख रहे थे। स्व. चौ. छोटूराम जी ने भी उस समय पुलकित होकर हमारे चरित्रनायक के परिश्रम का सुन्दर मधुर फल आंखों से देखा और कुछ भावावेश में नवस्नातकों को सन्देश दिया।

फिर तो प्रतिवर्ष स्नातक निकलने लगे। और अपनी कुलमाता की सेवा निष्कामभाव से करने लगे। कोई प्रबन्ध में, कोई पढ़ाने में, कोई अन्दर कोई बाहर सब जगह घुस गये। गुरुकुल संभाल लिया। कुलपिता हमारे चरित्रनायक को विश्राम मिल गया। खर्च घट गया। गुरुकुल की दरिद्रता शनैः शनैः दूर होने लगी। शिक्षा प्राप्त नूतन स्नातकों में जिन्होंने कई वर्ष तक लगातार अर्थ सकट के समय गुरुकुल की अवैतनिक सेवा की और जो अब भी कर रहे हैं उनके नाम स्मरणीय हैं—श्री हरि-

श्चन्द्र जी, श्री विष्णुमित्र जी, श्री महामुनि जी, श्री धर्मभानु जी और श्री धर्मदत्त जी। ये पांच यज्ञिय महाभूत हैं जिन्हें गुरुकुल ने नहीं छोड़ा या जो गुरुकुल को नहीं छोड़ सके। क्योंकि हमारे चरित्रनायक को पंचायत बहुत प्रिय थी इसलिये यह पंचजन (पचायत) ही गुरुकुल बन गया।

इन स्नातकों के अतिरिक्त १५, २० वर्ष से लगातार गुरुकुल की सेवा करनेवाले दो व्यक्तियों का नाम भी स्मरणीय है— महाशय प्रभुदयाल जी आर्य लेखक और कविराज योगेन्द्रसिंह बी. ए.। कविराज जी ने तो गुरुकुल के प्रथम स्नातकों को शिक्षा देने के साथ २ गुरुकुलीय प्रबन्ध में भी सहयोग दिया।

पुट्ठी गांव में ७ दिन अनशन—

सन् १९३२ की बात है। जि० रोहतक के रभड़ा गांव में दो हिन्दू मां बेटी रहती थीं। उनके पास २०० बीघा ज़मीन थी जिस से उनके घरका काम खूब अच्छी तरह चलता था। उस लड़की की माता का चालचलन अच्छा न था। इस कारण उसके संग से उसकी लड़की भी चरित्रहीन हो गई थी। वे दोनों मां बेटियां समीपस्थ पुट्ठी गांव वाले शर्फू नामक मुसलमान रांघड़ के पास आना जाना रखती थीं। इस बात से रभड़ा

गांव के हिन्दू नाराज़ थे। वे एक हिन्दू लड़की का मुसलमान के घर आना जाना उचित न समझते थे किन्तु कुछ करने में असमर्थ थे। लाचार हो वे आपके पास आये। और सारा वृत्तान्त आपको कह सुनाया। आप यह दुःखद समाचार सुन कुछ सज्जनों समेत पुट्ठी गांव में पहुँचे। वहां आप जितने पंचायत के आदमी इकट्ठे करना चाहते थे उतने एकदम इकट्ठे न हो सके। इसलिये शीघ्र पंचों को इकट्ठा करने के लिये आपने सात दिन का उपवास व्रत किया यह तो आपका चिरकाल से अनुभूत अमोघ ब्रह्मास्त्र का प्रयोग था। जिससे घबराकर सारे पंच एक दम इकट्ठे हो गये।

इधर शर्फू ने भी घबराकर पुलिस में रिपोर्ट की कि रभड़ा गांव के जाट हमारे पुट्ठी गांव में आये हुए हैं और वे इसे तोड़ना तथा मुझे लूटना चाहते हैं। सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुँच गई। और आप की अनुपस्थिति में ही आपका नाम ज़मानत मुचलके में लिखा गया। आपके साथ भैंसवाल के चौ. कन्हैया सिंह नम्बरदार, चौ० हरनाम सिंह, चौ० टेकराम और आवली के चौ० गणेशीराम के नाम भी लिख लिये गये। जब आपको इस बात का पता लगा तो आपको पुलिस की

अनुचित कार्यवाही पर बहुत क्रोध आया। थानेदार और पुलिस कप्तान वहीं दूसरी चौपाल में बैठे निरपराध मनुष्यों को धमका रहे थे। आप एक तो भूख से व्याकुल थे, दूसरे निर्दोष प्रजा पर निर्दयता से पुलिस का धमकाना देख एक दम तिलमिला उठे। थानेदार और पुलिस कप्तान की ओर मुख करके बोले—"तुम गरीबों को व्यर्थ धमकाते हो। पचायत की बात पर विश्वास नहीं करते हो। सत्य को छिपाकर असत्य की पुष्टि करते हो। ज़मानत मुचलके लेकर लोगों को भयभीत करना चाहते हो। झूठा प्रभाव दिखा कर सरकार को बदनाम करते हो। मैं तुमको साफ २ कह देना चाहता हूँ अगर तुमने सत्य का पक्ष न ले कर झूठा निर्णय किया तो मैं तुम्हारे टक्कर मार कर मर जाऊंगा। तुम्हें कहीं भी रहने को स्थान न मिलेगा।"

जिस समय आप ये शब्द कह रहे थे उस समय आप में विलक्षण तेज प्रकट हो रहा था। 'सत्यं बलं-महाबलम्' के अनुसार उपवास से कृशकाय हुए भी आप महान् शक्ति पुञ्ज बने दीखते थे। तब आपके सामने बोलने की तो क्या देखने की भी किसी की हिम्मत न होती थी। आपके परिचित आदमी भी सहसा दब से गये थे। ठीक ही है—

महानुभावः प्रतिहन्ति पौरुषम् ।। किरातः

अर्थात् बड़े आदमी के सामने मनुष्य की शक्ति स्तब्ध हो जाती है। थानेदार तथा पुलिस कप्तान ने भी ऐसा तेजस्वी साधु अब तक न देखा था, वे भी आपका दिव्य तेज देखकर थर थर कांपने लगे। अन्त में पुलिस कप्तान ने साहस करके कहा कि 'बाबा जी! हम कोई अनुचित काम नहीं करेंगे। आप विश्वास रक्खें। थोड़ी बहुत तेज़ी लाये बिना राज्य का काम ठीक नहीं चल सकता।" इसके आगे वह एक भी शब्द नहीं बोल सका और थानेदार के साथ वहां से उठकर चला गया। अन्त में पञ्चायती निर्णय हुआ। पञ्चायत होने के कुछ मास बाद तक वे मां बेटी पुट्ठी न गईं। परन्तु कुछ समय पीछे फिर उसी तरह आने जाने लगीं। अब तो वे ऐसी ढीठ हो गईं कि किसी भी गांव वाले को कुछ समझती ही न थीं।

एक दिन रभड़ा गांव के बारू नामक नौजवान जाट लड़के के खेत में वे दोनों मां बेटियां अपनी भैंसे चरा रही थीं। अपने खेत में उनकी भैंसे चरती देख बारू ने लड़की की मां से कहा कि "ताई! अपनी भैंस मेरे खेत से निकाल ले। खेत का नुकसान होता है।" यह सुनकर वह बिगड़ी हुई स्त्री बोली—"चल रे मैं तुझे क्या जानूं।

तू मेरे सामने बोलने का साहस करता है।" लड़के ने फिर सभ्यता से कहा "ताई! यह ठीक नहीं है।" इतना कह कर बारू घर चला गया और जेली ले आया। जेली हाथ में लेकर उस लड़के ने फिर कहा कि ताई! "क्या खेत से भैंस नहीं निकालेगी?" पर वहां तो मां बेटियों के सिर पर मौत नाच रही थी। कड़ककर बोली "तुझे एक बार कह दिया, तू फिर भी बकबक करता है।" अब उस नौजवान लड़के से न रहा गया। उसने जेली उठाकर ऐसे जोर से मारी की मां बेटियां सदा के लिये ठण्डी करदीं। पुट्ठी की गर्म मुट्ठी मिट्टी में मिला दी। गांव में जाकर उस लड़के ने जब यह सुखद समाचार सुनाया तो सारे गांव वाले बड़े प्रसन्न हुए। सब ने एक स्वर में कहा कि बहुत दिनों के बाद आज गांव बसा हुआ मालूम होता है।

उधर मौत की खबर पाते ही पुलिस ने घटना स्थल पर पहुँचकर मामले की जांच पड़ताल की। दोषी साबित होने पर उस लड़के को आजन्म कारावास का दण्ड सुनाया गया। जब आपको ऐसे भारी दण्ड का पता लगा तो आपने प्रयत्न करके एक ही वर्ष में उस लड़के को कारावास से निकालकर घर वापिस भिजवा दिया।

धन्य है आपकी व्यवहारकुशलता और सच्चरित्रता । इस घटना से आपकी नीतिज्ञता एवं सरलता इन दो परस्पर विरोधी गुणों के समन्वय पर प्रकाश पड़ता है । आपके इस शुभ प्रयत्न से ग्रामीण जनता अति प्रभावित हुई ।

योग्य पुत्रियां व श्री अभिमन्यु जी

यह पहले लिख आये हैं कि गृहस्थाश्रम में रहते हुए आपके दो कन्यायें हुई थीं । जिनमें बड़ी कन्या का नाम 'सुभाषिणी' तथा छोटी का नाम 'गुणवती' था । दोनों की पूज्य श्री माता जी अभी जीवित हैं । जो कन्या गुरुकुल खानपुर की वनी में वनस्थिनी बनी भगवद्भजन कर रही हैं । छोटी लड़की गुणवती ने 'यथा नाम तथा गुणाः के अनुसार न केवल १६ वर्ष अपितु २४ वर्ष की आयुपर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए आठवीं श्रेणी तक विद्याभ्यास किया । तथा आर्य कुमार परिषत् 'सिद्धान्त शास्त्री' परीक्षा उत्तीर्ण की । ब्रह्मचर्य व्रत के पालन में आप बड़ी बहन सुभाषिणी जी से भी आगे बढ़ गईं । तदन्तर १० वर्ष तक कन्या गुरुकुल खानपुर की निःस्वार्थ सेवा की फिर श्री पूजनीया माता जी के अनुरोध से मुज़फ्फ़रनगर के प्रसिद्ध वकील श्री चौ० बलवन्त सिंह जी के साथ

पूर्ण वैदिक रीति से विवाह कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर लिया।

बड़ी लड़की सुभाषिणी जी ने १६ वर्ष पर्यन्त पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत पालन करके कन्या गुरुकुल देहरादून में आठवीं श्रेणी तक शिक्षा प्राप्त की और आर्य कुमार परिषत् की 'सिद्धान्त शास्त्री' परीक्षा उत्तीर्ण की। साथ ही सरकारी मिडिल करके जे० वी० पास किया। कई वर्ष तक जींद गर्ल्स स्कूल में प्रधानाध्यापिका बनकर सेवा की। अन्त में पूज्य पिता जी के विशेष आदेश को शिरोधार्यकर सर्विस का मोह छोड़कर सदा के लिये कन्या गुरुकुल खानपुर की सेवा का महाव्रत धारण कर लिया। तब से आप लगातार गुरुकुल की सेवा कर रही हैं इस समय आपके गुरुकुल में आठवीं श्रेणी तक शिक्षा पाकर बहुतसी कन्यायें निकल चुकी हैं। आपके ही पुरुषार्थ से कन्या गुरुकुल खानपुर उन्नत अवस्था में है। आपका विवाह बहवलपुर निवासी श्री अभिमन्यु जी के साथ हुआ है। जैसे आपकी कन्या गुरुकुल के हित में लगन है वैसे ही आपके पतिदेव साधु स्वभाव श्री अभिमन्यु जी भी गुरुकुल की उन्नति में तत्पर रहते हैं। दोनों में कौन अधिक उन्नति शील है, कहा नहीं जा सकता। अभी तक न तो आप उनसे इस विषय में आगे

बढ़ सकी हैं और न वे ही। उपमेयोपमालंकार के समान कन्या गुरुकुल के हित में दोनों ही एक साथ उपमेय और उपमान बने हुए हैं। सहधर्मचार इसी का नाम है। कन्याओं को सच्चे वैदिक धर्म से दीक्षित एवं शिक्षित करने की जो प्रबल अभिलाषा आपके पूज्य पिताजी में थी आप उसे तन मन धन से पूर्ण करने में संलग्न हैं। आप हर समय कन्या गुरुकुल की उन्नति के उपायों पर विचार करती रहती हैं। भगवान् आपको आशानुकूल दीर्घ जीवन प्रदान करें।

चौ० जयराम जी का कन्या गुरुकुल के लिये जीवन दान— कन्या गुरुकुल के विशेष सहायकों में चौ. जयराम जी का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। आप पहले गुरुकुल भैंसवाल की सेवा करते रहे फिर खानपुर में कन्या गुरुकुल खुलने पर यहां जीवनदान दे डाला। आपको सोते जागते चलते फिरते हर समय कन्या गुरुकुल की चिन्ता रहती है। हमारे चरित्रनायक के प्राचीन जीवन साथियों में अवशिष्ट अब केवल आप ही हैं जो वृद्धावस्था में भी अविचल भाव से काम कर रहे हैं।

चुनाव में भक्तपक्ष की विजय— समाज सेवा करते २ आपका इतना अधिक व्यापक प्रभाव हो गया था कि

लोग आपकी सम्मति लिये विना कोई काम नहीं करते थे। जब तक आपकी आज्ञा प्राप्त न होती तब तक किसी भी काम को करने में संकोच अनुभव करते थे। सन् १९३७ में पंजाब लेजिस्लेटिव असैम्बली के चुनाव थे। तहसील गोहाना तथा सोनीपत की ओर से मंडोरा निवासी चौ. टीकाराम वकील व भगाण निवासी चौ. लहरी सिंह वकील चुनाव में खड़े हुए। चौ. टीकाराम को जमींदार टिकट दिया जा चुका था चौ. लहरी सिंह विना टिकट खड़े हुए थे। आप चाहते थे कि चौ. लहरी सिंह बैठ जायं और चौ. टीकाराम ही चुनाव में खड़े हों। क्योंकि उन्हें जमींदार टिकट मिल चुका था। आपने अन्य लोगों को समझाते हुए चौ. लहरी सिंह को भी समझाया। परन्तु लहरी सिंह जी न माने। अन्त में चुनाव प्रारम्भ हुआ। आप की सहायता से चौ. टीका-राम चुनाव में सफल हुए।

यद्यपि इस चुनाव से ग्रामीण जनता में परस्पर कुछ कटुता पैदा हो गई जिससे गुरुकुल को भी हानि हुई। फिर भी आपने अपने प्रभाव से शनैः शनैः वह कटुता शान्त करदी। भाई को भाई बना कर आपने अपनी शक्ति का परिचय दिया। इस चुनाव का परिणाम यह हुआ कि जमींदार लीग की जीत होने से मुसलिम लीग

के बढ़ते हुए हौसले टूट गये।

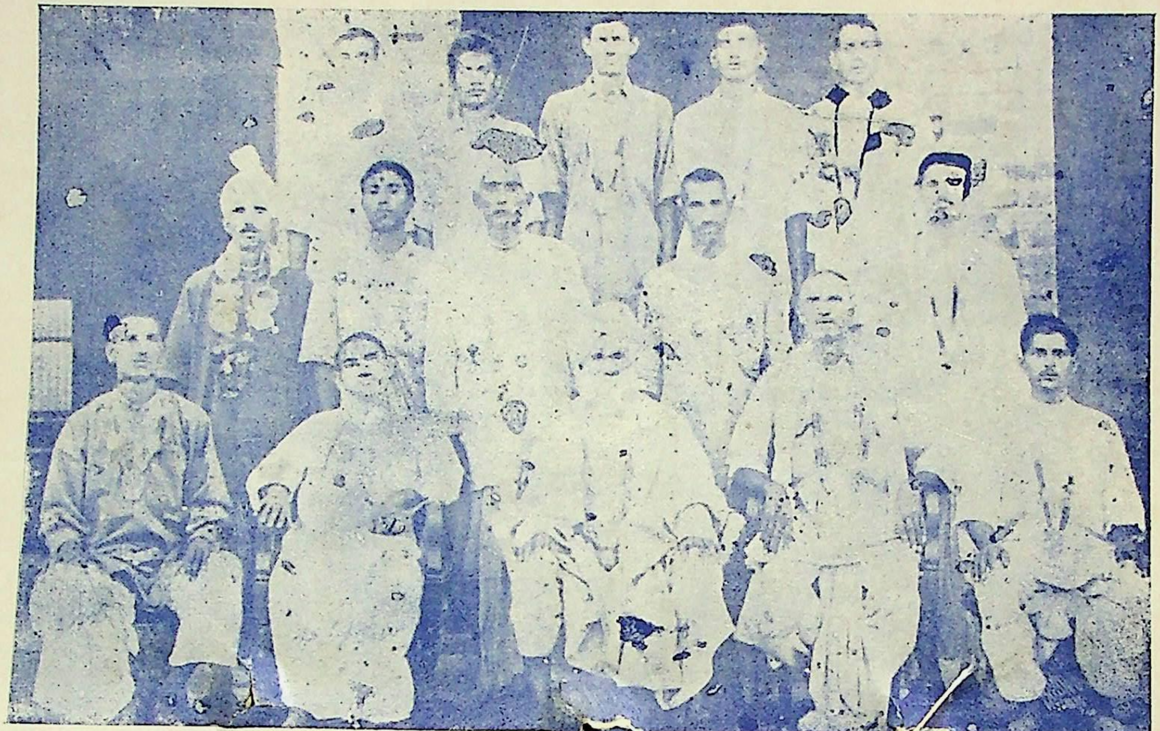
॥ यतो धर्मस्ततो जयः ॥

हैदराबाद सत्याग्रह में सफल नेतृत्व— कूट नीतिज्ञ ब्रिटिश गवर्नमेण्ट की द्वैधीभाव की नीति के बल पर दक्षिण हैदराबाद में निजाम का साम्प्रदायिक शासन चल रहा था। उसके मुसलमान होने के नाते हिन्दू प्रजा का आर्थिक सामाजिक एवं धार्मिक शोषण किया जा रहा था। हिन्दुओं के त्यौहारों उत्सवों और सभाओं पर विशेष प्रतिबन्ध लगा कर उन्हें तंग किया जा रहा था। आर्य समाज के ऊपर तो निजाम की ऐसी क्रूर गृध्रदृष्टि थी कि वह आर्य नाम से भी घबराता था। ओ३म् के झण्डे को देख, वैदिक नारों और ऋषि दयानन्द के जयकारों को सुनकर उसकी आंखों में खून उतर आता था। जहां राजा को पक्षपात रहित न्यायपूर्वक सबके साथ समान व्यवहार करने वाला होना चाहिये वहां निजाम उसके बिलकुल प्रतिकूल उदाहरण था। उसे तो मुसलमानों से पक्षपात और हिन्दुओं से द्वेष करना ही अभीष्ट था। ऐसी अवस्था में स्थानीय कांग्रेस भी किसी प्रकार का सुधार करने में असमर्थ थी। फिर भी वहां की कांग्रेस ने सत्याग्रह का हथियार उठाया किन्तु ढीला, जिससे सफलता की आशा

बहुत कम थी ।

इधर आर्य हिन्दुओं पर लगातार बढ़ते अन्याय को आर्य समाज सहन न कर सका । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की ओर से निजाम को पत्र लिखा गया किन्तु कोई संतोष जनक उत्तर न मिला । भारत सरकार के भी दरवाजे खटखटाये गये । उसका भी कोई फल न निकला । अन्त में सन् १९३८ के दिसम्बर मास में शोलापुर में आर्यों की विशेष कांफ्रेंस बुलाई गई जिसमें सारी बातों के पौर्वापर्य पर विचार करके स्व. महात्मा गान्धी प्रतिपादित वैध सत्याग्रह का निश्चय किया गया । और सन् १९३९ के जनवरी मास में सत्याग्रह का श्री गणेश हुआ जिसके अधिनायक किंवा प्रवर्तक स्व. महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज हुए सत्याग्रह को ठीक तरह संचालित करने के लिये सेनापति का पद श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज को दिया गया । यह सत्याग्रह भारतीय इतिहास में अपूर्व था । इधर उधर से प्रसन्न मस्त झूमते हुए आर्यगण इकट्ठे होने लगे । वैदिक धर्म ऋषि दयानन्द और महात्मा नारायण स्वामी के जयनादों से आकाश गूंज उठा । जयघोषों के साथ अपने साथियों के दिल को बढ़ाते हुए तीव्रान्

हैदराबाद सत्याग्रह में गुरुकुल से सम्मिलित होने वाले सत्याग्रही



घोषान् कृण्वते वृषपाणयः क्षिणन्ति शत्रूननयन्व्ययन्तः'
इस वेदामृत को पीकर शत्रुओं के हौसले को घटाते हुए
आर्य गण निज़ाम के हैदराबाद में प्रविष्ट होने लगे।
यवनवन दावानल बने, जिनके अद्भुत उत्साह को देख
विरोधी भी दांतों तले अंगुली दबाते थे। अन्य प्रांतों की
तरह ज़ि० रोहतक में भी नियम पूर्वक सत्याग्रह संग्राम
समिति बनाई गई जिसके प्रधान सर्व सम्मति से हर्षध्वनि
के साथ आप ही चुने गये। आपके प्रधान होते ही सारे
ज़िले में नवजीवन संचार हो उठा। क्योंकि सब लोग आप
की भूतपूर्व अद्भुत सेवाओं से परिचित थे। आपने अपने
गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक आचार्य हरिश्चन्द्र जी को
रोहतक ज़िले की ओर से सर्व प्रथम अधिनायक (डिक्टेटर)
बनाकर सत्याग्रह निमित्त भेजा। आचार्य हरिश्चन्द्र जी के
साथ गुरुकुलीय अध्यापक तथा ब्रह्मचारिगण भी गये।
उसके बाद क्रमशः गुरुकुल के कुलपति स्व. स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के साथ गुरुकुल के भजनोपदेशक चौ० नौनन्द सिंह जी तथा स्नातक श्री पं० सत्यप्रिय जी भी
अधिनायक होकर सत्याग्रहार्थ हैदराबाद गये।

जिस दिन गुरुकुल के कुलपति स्व० स्वामी ब्रह्मानन्द
जी अधिनायक बनकर सत्याग्रहनिमित्त हैदराबाद जा रहे
थे उस दिन गुरुकुल के ब्रह्मचारी स्वामी जी का स्वागत

करने के लिये रोहतक आये। जब ब्रह्मचारी जय बोलते तथा भजन गाते हुए शहर की मसजिद के पास पहुँचे तो मुसलमान गुण्डों ने ब्रह्मचारियों पर लाठियों से प्रहार किया। जिसके फलस्वरूप कई ब्रह्मचारियों के कठिन चोटें आईं। ब्रह्मचारियों की रक्षार्थ आगे बढ़ते हुए गुरुकुल के अनन्य भक्त चौ० स्वरूप लाल जी तथा चौ० हरिद्वारी सिंह जी के भी बहुत चोटें आईं। हमारे चरित्रनायक आप के ऊपर भी गुण्डों ने लाठियों से अनेक प्रहार किये। किन्तु आप उस अशान्त वातावरण में भी शान्तियुक्त वचनों की अमृतधारा से सबको शान्त करते रहे। इस तरह चोटी रहित खोटे दुष्ट यवनों की चोटें सहते हुए आप आर्य समाज मन्दिर में पहुँचे। वहां जाकर पहले दूसरों की यथोचित परिचर्या कराई। जो सज्जन हस्पताल में भेजने योग्य थे उनको हस्पताल में भेजा गया। सबका ठीक तरह प्रबन्ध कर फिर अपना भी इलाज करवाया। इधर नीच यवन इतनी चोट मार कर भी सन्तुष्ट न हुए! उन्होंने आस पास के गांवों में लड़ाई की खबर करके कई हज़ार की संख्या में आदमी इकट्ठे कर लिये। उन सबको देख आपने शान्त रहने के लिये कहा और हिन्दू मुसलमानों की सम्मिलित सभा द्वारा आपसी विरोध भाव मिटाया। फिर भी जो एक

गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा कर्मचारी जो रोहतक में हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन में मुसलमानों के नृशंस आक्रमण से घायल हुए।



आध मुसलमान उलटा पक्ष लेकर अगड बगड बकता था उ.को आपने ऐसी ताड़ दी कि उसे सबके सामने क्षमा याचना करनी पड़ी। फिर किसी ने चूं नहीं की।

आर्य सत्याग्रह का कर्म तो उसी तरह चलता रहा। रोहतक ज़िले की ओर से हज़ारों आदमी सत्याग्रह में गये और वे सब सफल होकर लौटे इसका सारा श्रेय आपको ही है। क्योंकि आपके सफल नेतृत्व में अधूरा काम कैसे हो सकता था। सत्याग्रह की समाप्ति के बाद आपको स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा अन्य प्रसिद्ध नेताओं की ओर से अनेक धन्यवाद दिये गये।

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥

मोठ में कठिन कष्ट सहन व कठोर अनशन] लगातार लोगों की सेवा करते रहने से आपका प्रभाव इतना गम्भीर हो चुका था कि प्रत्येक कष्ट में लोग आपको ही स्मरण करते थे। हरियाणा प्रान्त में जब कोई कार्य कठिन समझा जाता था तो उसको पूर्ण करने के लिये केवल आप पर ही लोगों का विश्वास जमता था। प्रायः सभी मानने लगे थे कि दूसरों के दुःखों को दूर करने में सबसे बड़े सहायक केवल आप ही हैं। सन् १६४० की बात है। एक दिन प्रातःकाल आप कन्या गुरुकुल खानपुर

में वट वृक्ष के नीचे भगवान् के ध्यान में समाधिस्थ हो बैठे थे। मन ही मन प्रभु का कीर्तन कर रहे थे। सूर्य की सुनहरी किरणें वट वृक्षों में होती हुई आपके अलौकिक तेज को द्विगुणित कर रही थीं। शीतल मन्द सुगन्ध समीरण शान्त मूर्ति आपके स्पर्श से अत्यधिक शान्त एवं पवित्र बन रहा था। पक्षिगण भी उस मनोहर काल में कलरव करते हुए प्रभु को याद कर रहे थे।

नितान्त स्वान्त को भी शान्त करने वाले उस निशान्तकाल में ईश्वर का गुणगान कर जब आपने शनैः शनैः आंखें खोलीं तो सामने हाथ जोड़ कर खड़े हुए चार आदमी नज़र आये। ध्यान समाप्त कर जब आप आसन से उठे तो उन्होंने आपके पांव पकड़ लिये और रो २ कर आंसुओं से चरण भिगो डाले। उस दृश्य को देख दुःखियों के दुःख को समझने वाले आपका दिल भर आया। उनको छाती से लगाया और प्यार से बोले "कहो प्यारे! क्या बात है? तुम लोगों को क्या दुःख है। ऐसे क्यों रो रहे हो? बोलो। मैं यथाशक्ति तुम्हारे दुःख का प्रतिकार करूंगा।" इन अमृत वचनों से आश्वस्त हो उन दुखिया दलित भाईयों ने कहा कि भक्त जी महाराज! "हम मोठ गांव ज़िला हिसार के गरीब

चमार हैं। गांव वाले सज्जनों के सहारे रहते हैं। हमको पानी की कठिनता थी इसलिये ग्राम निवासी जमींदारों से पूछ कर हमने अपना निजी कूआं बनाना आरम्भ किया और उसमें नींवचक्र भी डाल दिया। यह देखकर वहां गांव के मुसलमान रांघड़ आये। हमको बहुत धमकाया और हमारे कूंए के नींवचक्र को बाहर निकाल दूर फेंक दिया। हमने उन से बहुत अनुनय विनय की किन्तु वे न माने। हम फिर अपना कूंआ बनाने के लिए इधर उधर फिरे परन्तु सब ओर निराशा ही निराशा दिखाई दी। हमने सुना है कि आप ही अब इस कार्य को पूरा करके हमारे दुख को दूर कर सकते हैं। यदि आपने भी हम पर कृपा न की तो हम अपनी गरीबी को कोसते हुए निराश हो चुप हो जायंगे।"

इस तरह जब वे अपना दुःख सुना रहे थे तब उनकी आवाज़ भर्राई हुई थी और आंखों में आंसू छलक रहे थे। आपने उनकी बात सुनकर ध्यान से उनकी ओर देखा और लम्बा सांस लेते हुए कहा कि अच्छा भाईयो! अब तो आप जाओ। जो मुझ से बन पड़ेगा मैं करूंगा। भगवान मेरी और आपकी सहायता करेंगे। आप का आश्वासन पा हरिजनबन्धु आपको प्रणाम कर चले आये अब आप चिन्ता में पड़ गये। क्या करूं, क्या न करूं।

कैसे इन दलित भाइयों का भला हो। किस उपाय से मैं इस कार्य में सफल हो सकता हूँ। इसी विचार धारा में निमग्न होते हुए आप बहवलपुर गांव में पहुँचे। अपने साथ जींद एसेम्बली के मेम्बर चौ० मनसाराम को भी ले लिया। वहां से आप दोनों मोठ गांव में पधारे। उन मुसलमान रांघड़ों के पास जाकर उनसे बोले कि "भाइयो मैं आप से एक भिक्षा मांगने आया हूँ। मैं एक साधु हूं और साधुको भिक्षा देना प्रत्येक का कर्तव्य है। चाहे वह किसी भी मत पर विश्वास करता हो।" यह सुन मुसलमान रांघड़ों ने कहा कि "कहिये बाबा जी! आप क्या कहते हैं।" आपने कहा कि "चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, दोनों भगवान किंवा खुदा के बेटे हैं। उन पर सबको दया करनी चाहिये। मनुष्य की शक्ति निर्बलों को दुःख देने के लिये न होकर उनकी सहायता के लिये होनी चाहिये। ये चमार आपके गांव में रहते हैं, आपकी प्रजा हैं। आप इनको कूंआ बनाने की आज्ञा भी दे चुके हैं और इन्होंने कूंआ बना भी लिया था किन्तु आप लोगों में से किसी ने बे समझी में या बहकावे में आकर उसे आंट दिया। अब ये फिर कूंआ बनाना चाहते हैं, क्योंकि इन्हें पानी का कष्ट है। इस लिये आपसे प्रार्थना है कि आप भगवान या खुदा के नाम पर इन गरीबों को

कूंआ बनाने की आज्ञा दें।"

आपका यह हितोपदेश सुन्दर होता हुआ भी उन बिगड़े हुए मुसलमानों को अच्छा न लगा और वे कहने लगे कि "कुछ भी हो इनको कूंआ बनाने की आज्ञा नहीं मिल सकती अगर आप अधिक उपदेश दोगे तो आपके लिये भी उचित न होगा।" आप तो मानों दरिद्रों के उद्धार के लिये ही अवतीर्ण हुए हों इस लिये आपने एक बार फिर प्रार्थना की किन्तु उन पर कोई प्रभाव न पड़ा। बल्कि उनमें से एक बूढ़ा मुसलमान तो आपको लक्ष्य कर के यहां तक बोला कि यह इन चमारों का बाबा होगा इस लिये लड़को ! तुम इसे पकड़ कर दूर जंगलों में छोड़ आओ। यहां तो यह यूं ही बकबक करता रहेगा। उस बुद्धिहीन वृद्ध मुसलमान के बहकाये हुए नौजवान रांघड़ लड़के आपको पकड़कर गांव से बाहर ले गये। आपके साथी चौ० मनसाराम को भी उन लड़कों ने दूर जंगल में लेजाकर छोड़ दिया। उस समय रात के ११ बजे थे। निर्जन बन में आपको डाल वे नीच मुसलमान लड़के बोले-"बाबा ! खड़ा हो, तेरा भी कूंआ बनवायें। तेरे उपदेश ढीले करें। ऐसा कह आपको खींचते घसीटते और अधिक दूर जंगल में ले जाकर अकथनीय कष्ट देकर छोड़ आये।" जिन कष्टों का लिखना सभ्यमनुष्य

की शक्ति से बाहर है । पाठक देखें कि एक निरपराध परोपकारी सन्त को नीच यवन छोकरे गांव से एक मील दूर भूख प्यास एवं थकावट से मृत प्राय अवस्था में इस लिये फेंक आये कि यह यहीं मर जायगा तो सदा के लिये पाप कट जायगा !

'जाको राखे साइयां मार न सके कोय' के अनुसार एकान्त जंगल में जब आप जीवन से निराश हो जीवन की अन्तिम घड़ियां गिन रहे थे तभी उन गुण्डों के जाने के दस मिनट बाद उस स्थान पर एक लाला जी पधारे । उन्होंने देखा कि एक साधु भूख प्यास से व्याकुल अत्यन्त शिथिल शरीर पड़ा हुआ लम्बी २ श्वासें ले रहा है । अगर इसे अभी न संभाला गया तो यह नहीं बचेगा । ऐसा सोच लाला जी आपके पास आये और अपने कपड़े से हवा करने लगे । हवा के स्पर्श से जब आपको कुछ चेतना मिली तो लाला जी बोले—"महाराज जी ! उठिये मैं आपको सहारा देकर पास के गांव में पहुँचा दूंगा । वहां आपके जीवन की रक्षा का प्रबन्ध हो जायगा ।" परन्तु आप में तो उस समय उठने बोलने की भी शक्ति शेष न थी । आंखें खोलीं और हाथ के इशारे से समझाया कि मुझमें बोलने चलने की शक्ति नहीं

है। तब उस दयनीय दशा में लाला जी ने स्वयं आपको उठाया और अपना हाथ का सहारा देकर समीपस्थ ढानी गांव में छोड़ दिया। वहां पर आपके भक्तों ने खाट दी। अगले दिन प्रातः काल उन्हीं के सहारे नारनौंद गांव में पहुँच गये। चौ० मनसाराम भी जंगल से बच कर नारनौंद आ पधारे। आपने यहां आकर इतने घोर कष्ट में भी अनशन व्रत आरम्भ कर दिया। और नारनौंद के पञ्च बुलवाकर उनके सामने संक्षेप से सब बातें कहीं परन्तु आश्चर्य है कि किसी हिन्दू में इतना साहस न होता था जो मोठ गांव के मुसलमानों से उचित बात कहकर विरोध मोल ले। नैतिक पतन इसीका नाम है, अस्तु।

आपका यह अनशन व्रत लगातार १६ दिन तक चलता रहा जिसकी सूचना भैंसवाल तथा तत्समीपस्थ ग्रामों में पहुँच गई। सूचना मिलते ही गुरुकुल के जीवनदानी चौ० स्वरूपलाल जी, आचार्य हरिश्चन्द्र जी, श्री विष्णुमित्र जी आदि समस्त अध्यापक महानुभाव तथा ब्रह्मचारिगण, श्री अभिमन्यु जी, बहन सुभाषिणी व गुणवती आदि समस्त कुलवासी नारनौंद पहुँचे। इन सब के साथ अन्य आसपास के भक्त लोग भी नारनौंद पधारे। ज़ि० रोहतक करनाल हिसार आदि में जिसने भी यह

भीषण काण्ड सुना वह फौरन घटना स्थल पर उपस्थित हुआ। उस समय हज़ारों की संख्या में लोग नारनौंद इकट्ठे हो गये। जिनमें बड़े २ मुसलमान नेता भी शामिल थे। आपकी विषम अवस्था देख सब चिन्तित थे। कोई मोठ गांव के मुसलमानों को समझा रहा था, कोई आसपास की पञ्चायत को इकट्ठा करने में व्यस्त था। कोई आपको ही उपवासव्रत समाप्त करने की सलाह दे रहा था। कोई व्रत की निर्विघ्न समाप्ति के लिये भगवान् से प्रार्थना कर रहा था। कोई आपकी सेवा में संलग्न था, कोई आनेवालों की सेवा में ही आपकी सेवा समझ रहा था। भाव यह है कि यथासम्भव सब उपाय किये जा रहे थे जिनसे आपकी प्राणरक्षा एवं व्रत की निर्विघ्न समाप्ति हो सकती थी। प्रतिदिन बड़े २ आदमी आते थे और जाते थे। मोटरों का तांता बंधा हुआ था आनेवालों की कोई संख्या न थी। कभी सन्यासी आते थे तो कभी विद्वान्। कभी सेठ तो कभी नेता पधार रहे थे। इस विचित्र दृश्य को देख नारनौंद गांववाले आश्चर्यान्वित हुए सोच रहे थे कि यह तो कोई असाधारण महापुरुष है जिसके जीवन की रक्षा के लिये इतनी दुनिया इकट्ठी हो रही है। उधर मोठ के मुसलमान रांघड़ भी घबराकर आपस में कह रहे थे

कि हमें नहीं मालूम था यह इतना महान् आदमी है, इसका इतना प्रभाव है। यदि हमें यह पता होता तो हम इसे पहले ही मार देते या कुछ न कहते, अस्तु।

इस अवसर पर आपके पास पहुंचने वाले विशिष्ट पुरुषों के नाम उल्लेखयोग्य हैं—आर्य समाज के सर्वस्व श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज गुरुकुल, भैंसवाल के कुलपति श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, चौ० सूरजमल जी वकील हिसार, चौ० टीकाराम जी सोनीपत, चौ० माडूसिंह जी वकील रोहतक, चौ० छाजूराम जी जज सांघी, चौ० अमीलाल रईस सीसाह, चौ० शादीराम वकील सोनीपत, दादा घासीराम जी आहूलाना, चौ० जानमुहम्मद मेम्बर रोहतक नगर, चौ० साफेअली गोहाना, सेठ जुगल किशोर बिड़ला, श्री वियोगी हरि आदि।

इन सब महानुभावों ने मुसलमानों को समझाने के साथ २ आपसे उपवास समाप्त करने की भी प्रार्थना की। राष्ट्र पिता स्व० महात्मा गांधी जी का भी तार आया कि आप अपने अनशन व्रत को समाप्त करदें। बिड़ला जी ने भी आकर प्रार्थना की। अलखपुर निवासी सेठ छाजूराम ने भी तारद्वारा अनशन समाप्त करने के

लिये निवेदन किया किन्तु वचन के पक्के आप अपने अभीष्ट लक्ष्य से किञ्चित मात्र भी च्युत न हुए। सब आदमी बड़ी चिन्ता में थे। सोचते थे क्या किया जाय। क्योंकि न तो आप ही अपना व्रत भंग करने को उद्यत थे और न मूर्ख दुर्दान्त यवनों को सद्बुद्धि प्राप्त होती थी। आपकी उच्चता का उनकी नीचता के साथ संतुलन किया जा रहा था। कैसी विचित्र समस्या थी। अन्त में आपके परम मित्र स्व० चौ० छोटूराम जी मन्त्री पंजाब ने भी आपसे अनशन व्रत समाप्त करने की प्रार्थना की। किन्तु आप किसी भी अवस्था में अपने व्रत को तोड़ने के लिये उद्यत न थे।

जब सब उपाय व्यर्थ होते देखे तो स्व० दीन बन्धु चौ० छोटूराम जी ने हिसार के D.C. के नाम तार भेजा जिसमें सूचित किया कि तुरन्त मोठ गांव में कूंआ बनवाया जाय, इस कार्य में जो रुकावट डालें उनका कठोरता से दमन किया जाय। अगर ऐसा न हुआ तो बड़ा भारी अनर्थ हो जायगा। पंजाब के मन्त्री महोदय की इस विशेष आज्ञा के मिलते ही हिसार के D.C. महाशय ने तुरन्त कूंआ बनवाना प्रारम्भ करा दिया। कूंए के लिये कोई ईएट, कोई चूना, कोई अन्य सामान

पहुँचाने लगा। आप के प्राणों की रक्षा निमित्त सब शीघ्र कूपनिर्माण कार्य में लग गये। आखिर दो तीन दिन में ही कूंआ बनकर तैयार हो गया। कूंआ तैयार हो जाने की सूचना मिलने पर आपने गुरुकुल सेवक श्री नौनंद सिंह जी तथा माजरा निवासी चौ॰ रामनाथ जी को कूंआ देखने के लिये भेजा और सन्देश दिया कि देखना-"कूंआ पक्का मजबूत बनना चाहिये। उसमें कहीं कचाई नहीं रहनी चाहिये। क्योंकि यह गरीब चमार बार २ कूंआ नहीं बना सकते हैं।" उक्त दोनों महानुभावों ने आपके सन्देशानुकूल पक्का कूंआ बनकर तैयार हो जाने की सूचना लौटकर आपको दी और आपको कूंएं पर ले जाने के लिये रथ पर सवार कराया गया। उस समय आपके साथ हज़ारों नरनारी कूंए का दर्शन करने अथवा आपकी मूर्त तपस्या का प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए पैदल चले। सब के मध्य रथ में बैठे आप तारागण से आवृत कलाशेष हिमांशु के समान सुशोभित हो रहे थे। उन पैदल यात्रियों के अप्रमेय आनन्द का क्या ठिकाना था। हर्ष से उन्मत्त हुआ कोई नारियल चढ़ा रहा था, कोई फूल बरसा रहा था, कोई शंख बजा रहा था। स्त्रियां मधुर गीत गा रही थीं। महान् विजयी के रूप में आपका नरनारी

दर्शन कर रहे थे। लोचनलोभनीय आपका दर्शन सबके लिये आसेचनक बना हुआ था। पतिव्रतायें दूर से हाथ जोड़कर कृतज्ञता प्रकट कर रही थीं। हरिजन बन्धु अपने परमहितैषी के दर्शन कर आनन्दाश्रु बहा रहे थे। प्रेमी जन आपकी जीवनरक्षा से अपने को सजीव समझ रहे थे। सनातनी भाई बं बं महादेव की रट लगा रहे थे मानों पापी यवनों के भवनों पर बम फेंकने के लिये महादेव जी को याद कर रहे थे। आर्य समाजी ऋषि दयानन्द के साथ आपके जयकारों से द्यावा पृथ्वी को पूर रहे थे। मानों दोनों लोकों को दया और आनन्द के सुगन्धित फूलों से भरपूर कर रहे थे। इस प्रकार आनन्द समुद्र में निमग्न वह जनमण्डली मोठ गांव के अभि-लषित स्थान पर पहुँची। आपका रथ पहुँचने से पहले ही कूंए पर गए हुए नरनारियों के बढ़ते हुए जयघोषों की ध्वनि से प्रतिध्वनित हुआ कूंआ भी लोगों को जीवन देने के लिये अपने जीवन पर खेलने वाले आपका द्विगुण उत्साह से गुणगान कर रहा था। कूंए पर खड़े मुसलमान भी इस दृश्य को बड़े गौर से देख रहे थे। एक ने कहा यह तो "बहुत बड़ा फ़कीर है, जिसके आगे इतने आदमी झुकते हैं।" दूसरा बोला "यह तो आगे की भी जाननेवाला है।" तीसरे ने

कहा "यह कोई जादूगर फकीर है।" चौथा बोला—"तभी तो इसका मुकाबला करना सिंह का मुख पकड़ना है।" पांचवे ने कहा कि अब मत बोलो, "ध्यान से इसके काम को देखो।" यह क्या करता है इत्यादि जितने मुंह उतनी बातें हो रही थीं। पाठक देखें आसुरी वृत्ति के लोग दैवी वृत्ति के सामने कैसे झुकते हैं, कैसे पराभूत होते हैं। शरीर से अति निर्बल हुए आप जब शनैः शनैः कूंए पर सहारा लेते हुए पहुँचे तो वह दृश्य वस्तुतः रोंगटे खड़े करने वाला था आपके शरीर की अति क्षीणता को देख कतिपय भक्त तो रोने लगे। कूंए पर पहुँचकर आपने हरिजन भाई से पानी खिचवाया और उसके हाथ से जलपान किया मानों स्व० महात्मा गान्धी जी ने कई दिन के अनशन के बाद अपने वचनानुसार एक हरिजन भाई के हाथ से सूखे सन्तरे का रसपान किया हो। उसीका प्रत्यक्ष उदाहरण आपने प्रस्तुत किया। उस समय हमारे चमार भाई कितनी कृतज्ञता भरी दृष्टि से आपको देख रहे थे यह तो वेही समझ सकते थे। क्योंकि उन्हें तो आप सच्चे पिता मिल गये थे। आप से बढ़कर उनका हित और कौन कर सकता था।

जिस बूढ़े मुसलमान ने आपको सबसे अधिक दुःख

दिया था उसने स्वयं संतरे का रस निकाल कर आपको पिलाया। आपने पुलकित होकर उस मुसलमान को अपने दोनों हाथों में ले लिया। और प्रेमाश्रु बहाने लगे वह मुसलमान भी अब मुसलमान न रहा था, उसमें भी आपके पवित्र स्पर्श से दिव्य प्रेम का संचार हो उठा था। वह गदगद हो गया और पुरानी बात याद करके अविरल अश्रुधारा बहाने लगा। आपके चरणों में गिर कर बालक की तरह रोता हुआ अपने अपराध की बारंबार क्षमा मांगने लगा। दयालुस्वभाव आपने उसे उठा कर गले लगा लिया। उस दृश्य की रोचकता का अनुभव तो देखने वाले भी नहीं कर सकते थे।

जब यह सब कुछ हो चुका अर्थात् पापी यवन और दरिद्र हरिजन दोनों का उद्धार किया जा चुका तो आपको स्वास्थ्यलाभ के लिये देहली ले जाया गया। वहां पर आर्य सार्वदेशिक सभा देहली की ओर से आपके स्वागत का विशाल आयोजन किया गया। बड़े २ प्रतिष्ठित महानुभावों की विद्यमानता में आपके संमान के लिये एक सभा की गई जिसमें आपके सच्चे तप त्याग के प्रशंसा सूचक अनेक अभिनन्दनपत्र सेवा में उपस्थित किये गये। दिल्ली से निवृत्त हो आप रोहतक शहर में ले जाये गये वहां प्रतिष्ठित आर्य लोगों की तरफ से आपका सुन्दर

मोठ अनशन की समाप्ति पर देहली की स्वागत सभा के पश्चात हितैषियों तथा परिवार के लोगों के मध्य
श्री भक्त फूल सिंह जी



जलूस निकाला गया जिसमें आपके स्वागत के लिये प्रायः सारा शहर ही उमड़ पड़ा। गुरुकुल भैंसवाल एवं कन्या गुरुकुल खानपुर का सारा स्टाफ भी उस जलूस में शामिल हुआ। जलूस में इस पुस्तक के लेखक द्वारा निर्मित—'स्वागत हो स्वागत हो हे देव तुम्हारा स्वागत हो।

इत्यादि सामयिक भजन गाया गया। उस जलूस को देखने तथा उसकी शान बढ़ाने के लिये अत्यन्त कार्य व्यस्त भी दुकानदार अपना काम छोड़ कर बड़ी श्रद्धा भक्ति से जलूस में शामिल हुए। आपके तप त्याग प्रेम सेवा आदि सद्गुणों की बारम्बार प्रशंसा की गई। रात को आर्य समाज रोहतक शहर के निवासी आर्यों की सभा हुई जिसमें दूर २ के ग्रामीण भाई भी सम्मिलित हुए। उसमें आपके गुणगान के साथ आपकी सेवा में अनेक अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किये गये। उन सबके उत्तर में आपने निर्बल शरीर होते हुए भी निर्मल चरित्र का उदाहरण देते हुए संक्षिप्त मार्मिक शब्दों में सारगर्भित उपदेश किया जिसे सुन कर सभी प्रभावित हुए। महाकवि भारवि तथा भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है—

परिजनतापि गुणाय सद्गुणानाम्।

सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥

लुहारु काण्ड] अहमेव गुरुः सुदारुणानाम्
इति हालाहल तात मा स्म दृप्यः ।
ननु सन्ति भवादृशानि भूयो
भुवनेस्मिन् यवनाख्यकिल्विषाणि ॥

पण्डितराज जगन्नाथ की यह अन्योक्ति कितनी सुन्दर है । वे कहते हैं कि हे हालाहल विष ! तुम इस घमण्ड में मत रहना कि संसार में सब से अधिक भयंकर कठोर कष्टदायक मैं ही हूँ । तुम से भी अधिक भयङ्कर जहरीले यवनरूपी दुष्ट पाप इस संसार में मौजूद हैं । पाठक संसार का इतिहास उठाकर इस बात को प्रत्यक्ष कर सकते हैं । बहुत दूर जाने की ज़रूरत नहीं, यहीं पंजाब प्रान्त में लोहारु नाम की एक छोटी सी रियासत है । जो अब जि० रोहतक व हिसार में मिला दी गई है । वहां का शासक मुसलमान नवाब था । वह सन् १९४० में हैदराबाद के निजाम की तरह हिन्दुओं से बहुत चिढ़ता था । उसने मुसलमानों को प्रोत्साहन देकर हिन्दुओं को उनके उचित अधिकारों से वचित कर रखा था । हिन्दुओं में खास आर्य समाजियों को देख कर तो उसके क्रोध का पारा चढ़ जाता था ! उसका मुख्य कारण साम्प्रदायिक

भावावेश तथा आर्यसमाज द्वारा की गई जनता की जागृति थी। वह आर्य समाजियों को अधिक से अधिक कष्ट देता, झूठे केस बनाता और किसी न किसी बहाने उनको तंग करता रहता था। इससे आर्यसमाजियों का लुहारु स्टेट में प्रविष्ट होना प्रायः कठिन हो गया था।

वहां की आर्य समाज के मन्त्री श्री ठा० भगवन्त सिंह जी को उसने बहुत कष्ट दिया। वे एक आर्य नवयुवक थे जो नवाब के कोपभाजन बने हुए थे। उन्होंने अपनी सहायता के लिये कई जगह यत्न किया। यत्न करने पर भी जब कोई सहायक न मिला तो अन्त में आपकी सेवा में पत्र लिखा और आपके पास उपस्थित होकर रियासत की हृदय विदारक सारी कष्ट कहानी कह सुनाई। आपने उनकी बात ध्यान से सुनकर वस्तुस्थिति पर विचार करते हुए उन्हें आश्वासन दिया कि मैं आपकी यथाशक्ति अवश्य सहायता करूंगा। तदन्तर आप। लुहारु के नवाब से मिले। उसको सब बातें स्पष्ट बताई आर्य समाज कोई खतरे की चीज़ नहीं है, उससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। यह सब आपने उसे प्रेमपूर्वक समझाया कि जिसके उत्तर में नवाब ने कहा कि महाराज! मुझे आपकी बातें स्वीकार हैं। आप

आर्य समाज का जलसा कीजिये मैं भी उसमें शामिल होऊंगा। आप नवाब से शान्तिपूर्वक वार्तालाप करके लौट आये और सन् १६४१ के अप्रैल मास में लुहारु में आर्य समाज का जलसा रक्खा गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की छत्रछाया में श्री पं० समर सिंह जी वेदालङ्कार अपनी भजनोपदेशक मण्डली समेत पहुँचे। गुरुकुल भैंसवाल से आप तथा चौ० नौनन्द सिंह जी भजनोपदेशक पधारे। वहां पहुँच कर सबसे पहले शहर में जलूस निकालने का आयोजन किया गया। आपने कहा—"अभी जलूस न निकालो। यहां तो जलसा होना ही कठिन था। मेरे समझाने पर कहीं नवाब ने बड़ी कठिनता से जलसा होने की स्वीकृति दी है।" जलसे में यदि जलूस भी होगा तो नवाब बिड़ जायगा उससे बना बनाया काम बिगड़ जायगा।" किन्तु आपकी इस नीतियुक्त बात को उत्साही आर्य नवयुवक न समझ सके और उन्होंने जलूस निकालने का निश्चय कर लिया। तब आप चुप रहे। जलूस निकाला गया 'जब जलूस शहर के अन्दर पहुँचा तो वहां पहले से ही लड़ने के लिये तैयार खड़े हुए नवाब की पुलिस के सिपाहियों ने लाठियों से हमला कर दिया।

जलूस में सब से आगे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के साथ आप ही थे। मुसलमान सिपाहियों ने स्वामी जी के साथ आपको लक्ष्य बनाकर लाठियों की वर्षा शुरु करदी। यह देख चौ० नौनन्द सिंह जी और लुहारु निवासी चौ० गाडसिंह जी जो आपके साथ पीछे बौडीगार्ड के रूप में खड़े थे उन से न रहा गया। उन्होंने भी आपके प्राणों की रक्षा के लिये यवनों पर उलटा प्रहार किया। तब तो यवन सिपाहियों ने क्रोध में आकर विशेषरूप से स्वामी जी चौ० नौनन्दसिंह जी और चौ० गाडसिंह जी के साथ आप पर लाठियां ही लाठियां बिछा दीं। जिस से आप बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़े। बेहोशी की हालत में आपको स्थानीय हस्पताल में ले जाया गया। वहां २४ घण्टे बाद होश में आने पर आपने देखा कि चौ० नौनन्द सिंह जी आखों में आंसू भरे आप की ओर देख रहे हैं। आपने चौ० नौनन्द सिंह जी से पूछा कि भाई! हम कहां हैं? तब चौधरी जी ने सारी घटना याद दिलाई। धीरे २ स्मृति होने पर आपने चौधरी जी से कहा कि भाई! पानी लाओ। चौधरी जी पानी लाये आपने पानी से अपना मुख धोया।

उधर 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' के अनुसार

नवाब स्वयं अपराधी होकर भी अपनी रियासत के घमंड में आप सबको अपराधी बना रहा था। जब इस घटना का पता गुरुकुल मैंसवाल में लगा तो वहां से हिसार के डिप्टी कमिश्नर महोदय का पत्र लेकर दादा घासीराम जी, आचार्य हरिश्चन्द्र जी चौ० स्वरूपलाल जी और श्री कविराज योगेन्द्र सिंह जी बी. ए. लुहारु पहुंचे। वहां नवाब से मिल कर आप सब को मुक्त कराया। उन्होंने आपकी दयनीय अवस्था जो देखी तो आंखों में पानी आ गया। आखिर सब महानुभाव आपको लेकर देहली इरविन हस्पताल में आये वहां आपका इलाज हुआ। आपके स्वस्थ होने में लगभग दो महीने लग गये। इस बीच में आपसे मिलने के लिये अनेक प्रेमी सज्जन आते रहे। सबने आपकी वीरता धीरता एवं निर्भयता की भूरि २ प्रशंसा की उस समय आपकी सेवा में देहली और रोहतक की आर्य समाजों की ओर से अनेक अभिनन्दन पत्र भेंट किये गये।

पञ्चम अध्याय

सन् १६४२ ई.

किञ्चित्परिहाणि अथवा बलिदान

पाठक ! आपने हमारे चरित्रनायक का अब तक व्यवहार दशा में प्रवृत्तिमार्ग देखा । अब परमार्थदशा में निवृत्तिमार्ग का सिंहावलोकन भी कीजिये । देहेन्द्रिय संघात के अन्तर्निहित आत्मतत्व की स्वरूप प्रतिष्ठा भी देखिये । व्युथित संसारदशा में चित्तवृत्ति सारूप्य होने पर भी जिस कटूस्थ चितिशक्ति ने अपने अव्याहत अविकारी स्वरूप का सदैव ध्यान रखा अब वही निरुद्धावस्था में केवल आनन्दानुगत हुआ अपने प्रति अकिंचित्कर त्रिगुणात्मक संघात की अदृश्य उदासीनता को कैसे स्पष्ट करता है यह भी अनुभव कीजिये । स्थूल शरीर की जड़ता और सूक्ष्म आत्मा की चेतनता दोनों विरुद्ध होती हुई भी अब तक कैसे मिल कर काम करती रहीं यह आपने देखा । अब सब तर्क, वितर्क विकल्प रहित केवल आत्मचैतन्य ही प्रतिभासित होता हुआ देखें उससे आपको

मालूम हो जायगा कि जीवन ही मृत्यु है और मृत्यु ही जीवन है। दोनों अवस्थाओं में अद्वैत आत्मतत्व ही काम करता है। केवल देहेन्द्रिय संयोग ही बीच में रुकावट है। जिसने इस संयोग को पाकर भी आत्मतत्व को नहीं पहचाना उसका जीवन जीवन नहीं रहता। और जिसने संयोग रहित होकर भी आत्मतत्व का दर्शन करा दिया अथवा जो आत्मदर्शन कर संयोग रहित हो गया उसकी मृत्यु, मृत्यु नहीं रहती। इस लिये आइये किञ्चित्परिहाणि द्वारा अपने चरित्रनायक के औपाधिक चिदाभास के विनाश से परम सूक्ष्म आत्मतत्व का निरीक्षण करें और जीवन्मुक्त बनें। क्योंकिवेद में लिखा है—

कुर्वन्तेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

भस्मान्तं शरीरम् ॥ यजुः

मनुष्य को कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा रखनी चाहिये। अन्त में देहनाश आवश्यक होने से शरीर भस्म होने पर देह यहीं रह जाता है और देही अपने कर्मानुसार समय पर दूसरा देह धारण करता है। अनादिकाल से यही सिलसिला चलता रहता है।

सन् १६३६ के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में हुए तीव्र लाठी प्रहार से, मोठ में किये कठोर उपवास से,

और लुहारु रियासत में लगी सख्त चोटों से लगातार पिसता हुआ आपका स्वाभाविक मृदुल शरीर अति निर्बल हो चुका था। उसमें अब इतनी शक्ति नहीं रह गई थी जो और अधिक आघातों को सह सके। फिर भी भोग अविशिष्ट होने से शरीर का ढांचा चल रहा था। जीवन के अन्तिम दिनों में आपको कन्या गुरुकुल खानपुर के कार्य की अपूर्णता अखर रही थी। आप भगवदिच्छा का सहारा लिये दिन रात उसके हित में लगे हुए थे। शनैः शनैः आपको यह भी प्रतीत होने लगा था कि अब यह शरीर काम नहीं देगा। इसे छोड़ना पड़ेगा। इस के अतिरिक्त आपके विरोधी मुसलमान आपको मारने की घात में लगे रहते थे, यह भी आपको मालूम था। फिर भी आप अपने काम में यथाशक्ति प्रयत्नशील थे। शरीर छूटने से कुछ समय पूर्व आपने अपने प्रेमियों से कई बार कहा भी था कि "भाइयो! अब मेरी प्रतीक्षा मत किया करो।" अपना काम अपने आप करो। मैं कब तक बैठा रहूँगा।" एक दिन आवली निवासी चौ० गणेशीराम जी से आपने कहा कि भाई! कभी तुम मेरी दाढ़ी झाड़ों में पड़ी पाओगे। मुझे मारनेवाले मेरे पीछे लग चुके हैं इस लिये

तुम अपने सहारे रहो। हर एक बात में मेरा सहारा लेना छोड़ दो। अस्तु, अन्त में वह दिन भी आ गया जिस की कल्पना से दिल दहल उठता है। 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' के अनुसार आपका मृत्युकाल आ पहुँचा। १४ अगस्त सन् १६४२ तदनुसार श्रावण वदि द्वितीया संवत १६६६ को सायंकाल के ६ बज चुके थे। बादलों की काली घटायें रात के अन्धकार को द्विगुणित करती हुई आने वाले भय की सूचना दे रही थीं मानो आपके वियोग से होने वाले अन्धकार का पूर्वरूप थीं। कभी २ एक आध बूंद भी गिर रही थी मानो हरियाणा प्रान्त को रुलाने की तैयारी हो रही थी। पश्चिम से आने वाली हवा सांय सांय करती हुई आगे लगनेवाली गोली का अव्यक्त संदेश दे रही थी। उस समय कन्या गुरुकुल खानपुर में तालाब के समीपस्थ वटवृक्ष के नीचे चबूतरे पर बैठे आप श्रद्धालु श्रोताओं को कुछ धार्मिक उपदेश दे रहे थे। साथ ही वैराग्यपूर्ण मधुर गान भी हो रहा था। उस रात आप का उपदेश वैराग्यपूर्ण कर्म प्रधान था। आपके गान में भक्त कबीरदास का यह दोहा—

आत्मसाक्षात्कार से पूर्णानन्द की प्राप्ति

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सब तेरा।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागे है मेरा॥

बड़ा उत्तम उपयुक्त प्रतीत हो रहा था। ऐसा मालूम होता है उस समय भविष्यद्दर्शी आपको आने वाली मृत्यु स्पष्ट दीख रही थी और आत्मसाक्षात्कार से पूर्णानन्द की प्राप्ति हो रही थी। उस मधुर गान के पश्चात् लगभग ५ मिनट तक आप चुप रहे। अन्दर ही अंदर किसी ध्यान में लीन हो गये। समीपस्थ श्रोतागण भी उस काल में आपकी चुप्पी से निस्तब्ध बन गये।

पांच हत्यारों का अज्ञात रूप में प्रवेश तथा प्रश्नोत्तर

एकाएक पूर्व की ओर से बहुत तेज बैट्री का सफेद प्रकाश दिखाई दिया। आपके समीप बैठे श्रद्धालु लोग आपकी शान्तिभङ्ग के डर से कुछ न बोले और आने वाले प्रकाश की ओर चुपचाप देखते रहे। उनमें से एक सज्जन मूत्रविसर्जन केलिये चले परन्तु बीच में ही वापिस लौटकर अपनी जगह पर आ बैठे। बैट्रीवाले आगन्तुक व्यक्ति घातक थे जो सैनिकवेष धारण किये हुए थे। जिनके हाथ में एक बैट्री एक बन्दूक और दो पिस्तौलें थीं। वे संख्या में ५ थे। उन्होंने आते ही ज़ोर से कहा कि "तुम यहां पर फौजी भगोड़ों को रखते हो। हमने सुना है तुम सरकार से गद्दारी करते हो।" यह सुनकर मुहाना निवासी चौ० अभयराम जो आपके पास बैठे थे बोले—"आप तसल्ली

करलें, यहां कोई फौजी भगोड़ा नहीं है। यह स्थान लड़कियों के पढ़ने का है।" तब तो वे आगन्तुक गुण्डे जिनके मन में प्रतिहिंसा के भाव थे धमका कर बोले-चुप रहो, नहीं तो ठीक न होगा। चौ० अभयराम जी ने और कोई उपाय न देख आप की ओर मुख करके कहा कि भक्त जी ! आपने इनकी बातें सुनीं। यह क्या कह रहे हैं ? अभयराम जी की बात सुन कर आपने शनैः शनैः आंखें खोलीं मानो योगी योगनिद्रा से जगा हो। आंखों पर हाथ रख कर शान्तियुक्त मधुर शब्दों में कहा कि "भाई ! यहां कोई भगोड़ा नहीं रहता है। आप विश्वास करें।"

नृशंसवध — आप इतना ही वाक्य कह पाये थे कि उन्होंने आप की दाढ़ी पहचान ली। एक ने बैट्री का प्रकाश डाला दूसरे ने दनादन पिस्तौल के तीन फायर किये। गोली लगी। आप का सिर खाट के नीचे लटक गया मानों मारनेवाले शत्रु को भी प्रणाम कर रहा हो। मुख से ओ३म् शब्द निकला। पास बैठे बूढ़े लोगों के मुखसे आह निकली। हरयाणा प्रान्त को सूना बना आप भी सदा के लिये परमप्रभु की गोद में जा विराजे। किन्तु धन्य है वीर जीवन के साथ आपकी मृत्यु भी वीरता-

पूर्ण हुई।

जब गोलियों की आवाज़ कन्याओं के आश्रम में पहुँची तो कन्यायें विविध कल्पनायें करने लगीं। थोड़ी देर में घातक गुण्डों के चले जाने पर एक आदमी कन्याओं के पास आया। उसने दिल दहलाने वाली आप की मृत्यु की सूचना कन्याओं को दी। सब से पहले आपकी छोटी पुत्री गुणवती जी ने इस दारुण घटना को सुना। वह बिचारी रोती चिल्लाती विलपती 'हाय पिता जी! हाय पिता जी!' की रट लगाती गिरती पड़ती अर्ध-चेतन अवस्था में आपके शव के पास जा गिरी। कुछ देर में होश आने पर फिर भावावेश में विलाप करने लगी—पिता जी! अभी तो मैं आपको दूध पिला कर गई थी। बोलते क्यों नहीं? क्या आप अपनी पुत्री से प्रेम नहीं करते? एक बार तो बोलिये। इस प्रकार करुणारस परिपूर्ण मर्मस्पर्शी उस बालिका के विलाप ने वहां पर खड़े सबको रुला दिया। फिर तो आप की बड़ी पुत्री सुभाषिणी तथा धर्मपत्नी माता धूपादेवी जी समेत कन्या गुरुकुल की सब कन्यायें वहां आ पहुँचीं और धाड़ मार कर रोने लगीं। चिरकाल तक रुलानेवाले उस करुण क्रन्दन के बाद एक पुरुष खानपुर गांव में भेजा गया

जिसने सारी घटना गांव में कह सुनाई। सुनते ही गांव के लगभग २०० आदमी कन्या गुरुकुल में जा पहुँचे। वहां जाकर आपका शव देखा तो कोई रोने लगा कोई चिन्ता करने लगा। कोई घातक को मारने के लिये दांत कटकटाने लगा।

तदनन्तर कन्या गुरुकुल खानपुर से पांच आदमी गुरुकुल भैंसवाल में आपके बलिदान की सूचना देने के लिये भेजे गये। वे लगभग रात के एक बजे गुरुकुल में पहुँचे। गुरुकुल के द्वार पर आते ही उन्होंने दुःख से भर्राई हुई आवाज़ में जोर से 'स्वरूप लाल जी ! स्वरूप लाल जी ! पुकारा। आवाज़ सुन कर चौ० स्वरूप लाल जी और उनके समीप सोने वाले अध्यापकगण भी जाग उठे। पूछा क्या बात है ? तब खानपुर निवासी श्री हरिसिंह जी ने किसी प्रकार धैर्य बांधकर आंखों में आंसू भर कर आप की मृत्यु का समाचार सुनाया। यह शोकप्रद समाचार सुनते ही चौ० स्वरूपलाल जी तो अवाक् रह गये। हक्के बक्के से हुए कुछ न बोल सके फिर कुछ संभल कर पूछा—हैं !! क्या कह रहे हो ? अभी कल तो हमें उनकी कुशलता का संदेश मिला है। सच कहो कैसे हुआ ? क्या हुआ ? तब क्रम से चौ० हरिसिंह जी ने वह सब दुखद घटना कह सुनाई।

ांत का शोक सागर में डूबना— थोड़ी ही देर में यह खबर बिजली की तरह सारे गुरुकुल में फैल गई कर्मचारी और ब्रह्मचारी सब एकदम इकट्ठे हो कर बैठ गए। अपने कुलपति की अचानक मृत्यु से अनाथ एवं किंकर्तव्यविमूढ़ बन गए। रात ही रात में गुरुकुल के समीपस्थ आवली, रिवाड़ा, भैंसवाल, बिलान, गुमाना, तिहाड़ आदि गांवों में आपके बलिदान की सूचना कर दी गई। जिसको भी यह समाचार मिला वही बालकों की तरह रोने लगा। प्रायः सभी हाय भक्त जी ! आपके बिना हम अनाथ हो गये। हमारा सब कुछ लुट गया। कौन हमारी संभाल करेगा। अब हम किस की छत्र छाया में रहेंगे। कौन हमारे झगड़े निपटायेगा इत्यादि विलाप करते हुए गुरुकुल भूमि में आ पहुँचे। जो आते जाते थे वे निर्जीव से बने चुप हो बैठ जाते थे। कुछ घातकों का संहार करने के लिये क्रोध प्रकट कर रहे थे। किसी का चेहरा शोक से एक दम पीला फिर क्रोध से एक दम लाल हो रहा था। इस प्रकार कहीं भावोदय, कहीं भाव शान्ति कहीं भाव संधि और कहीं भाव शबलता दृष्टिगोचर हो रही थी।

प्रातः काल होने पर यह जन समुदाय खानपुर की

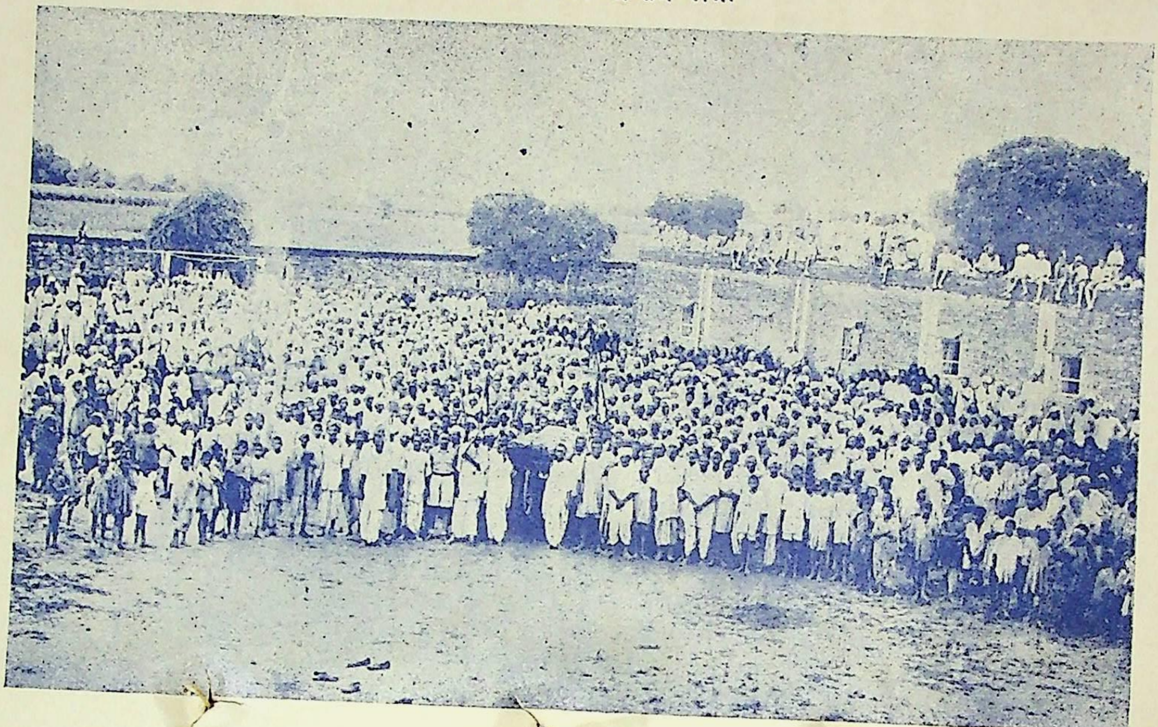
ओर रवाना हुआ। रास्ते में जिस को भी आपकी मृत्यु का समाचार मिलता वही अपने आवश्यक से आवश्यक काम को छोड़ कर जनसमुदाय के साथ हो लेता। इस तरह कई हज़ार की संख्या में यह जनसमुदाय कन्या गुरुकुल खानपुर में जहां आपकी निर्मम हत्या की गई थी उस स्थान पर पहुँचा। इससे कुछ पहले गुरुकुल के अधिकारी अध्यापक तथा ब्रह्मचारिगण पहुँच चुके थे। जिस समय यह जनसमूह खानपुर पहुँच रहा था उस समय श्री माता जी (भक्त जी की धर्मपत्नी) सहित कन्या गुरुकुल की छात्राओं एवं अन्य स्थानीय लोगों की आंखों से अविश्रान्त अश्रुधारा बह रही थी। उस दृश्य को देख उपस्थित जनसमुदाय भी अपने ऊपर काबू न पा सका। श्रीमाता जी आपके पावों की ओर बैठी हुई थीं। उन्होंने गुरुकुल के अध्यापकों और ब्रह्मचारियों की ओर मुख करके भर्राई हुई आवाज़ में कहा—पुत्रो! अपने पिता के अन्तिम दर्शन करलो। ये सदा के लिये तुम्हारे बीच से उठ गये हैं।" अन्य आगन्तुक प्रेमियों की ओर भी मुख करके वे बोलीं—"महाराज! तुम्हारे सेवक भक्त जी अब तुम्हारे बीच में नहीं रहे।" उस समय कतिपय भक्त लोग कपड़े से ढके हुए आपके मुखको खोलकर पागल हुए से कह रहे थे कि भक्त जी! आप हमको छोड़ कर कहां जा

रहे हैं। आपके बिना हमारी रक्षा कौन करेगा ? अगर आप ने हमको इस तरह छोड़ कर जाना था तो पहले ही क्यों नहीं बतला दिया था। कुछ सज्जन शव को देख भगवान् को पुकार रहे थे हे भगवान् ! हे ईश्वर ! हे परमात्मन् ! तूने यह क्या किया ? हमतो बिना मारे ही मार दिये। इस तरह लोगों की भिन्न २ बातों से करुण हुआ भी वह वीभत्स दृश्य हो रहा था। हरियाणा प्रांत पर तो अनुभ्रवज्रपात सा हो गया था। खानपुर का वह जगल जहां पर ऋषिकल्प आपके प्रभाव से हर समय मंगलमय आनन्द की वर्षा होती थी अब मनुष्यों को काटने दौड़ता था। वहां न आनन्द था, न सुख था। और न किसी प्रकार की मनोहरता ही शेष रह गई थी। उस समय तो वहां दुःख क्रोध एवं असौन्दर्यपूर्ण निःसारता ही प्रकट हो रही थी।

जब सब जनसमुदाय एकत्र हो गया तो आपकी लाश निरीक्षण के लिये रोहतक ले जाई गई। जिस के साथ गुरुकुल के जीवनदानी श्री चौ० स्वरूपलाल जी तथा वैद्य कविराज योगेन्द्रसिंह जी गये। सब को सूचित किया गया कि १६ अगस्त को गुरुकुल भूमि में आपका दाह संस्कार किया जायगा। उपस्थित जनसमुदाय इस घोषणा

के सुनते ही गुरुकुल भैंसवाल की ओर चल पड़ा। जब १६ अगस्त को प्रातः काल आप का शव रोहतक से लाया जा रहा था तब रास्ते में आनेवाले गांवों के लोग आपके शव का निरीक्षण करते, पूजा भेंट चढ़ाते और चार आंसू बहाये बिना न रहते। रिवाड़ा से जब शव भैंसवाल लाया गया तो गांव के आबालवृद्ध सब स्त्री पुरुष गांवसे बाहर आगये आपकी लाशको देख बालकों की तरह रोनेलगे। कोई किसी को धैर्य देनेवाला न था। फिर शव को गुरुकुल भूमि में लाकर वहां आपका अन्तिम फोटो लिया गया। दाह संस्कार के लिये ८९ मन घी, कई मन सामग्री भिन्न २ गांवों से इकट्ठी हो गई। तदनन्तर आपका अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। अग्नि की हू हू करती हुई ज्वालायें धूएं के साथ सब जगह फैल गईं मानों आपके भौतिक देह का नाश होने पर भी अक्षय पुण्यराशि को सर्वत्र सूचित कर रही थीं सुन्दर गन्धयुक्त आज्य की आहुतियां आपको हुतात्मा प्रकट कर रही थीं। उस दिन 'क्रव्यात्' बनी हुई यज्ञवेदि में आपका देवयजन हो रहा था। संस्कार के बाद श्री पं० समरसिंह जी वेदालंकार के साथ अन्य सब उपस्थित सज्जनों ने आप की आत्मा की सद्गति तथा परिवार की शान्ति के लिये भगवान् से प्रार्थना की। मौन होकर

श्री भक्त जी की अन्तिम यात्रा



आपके प्रारम्भ किये हुए महान् कार्यों पर गम्भीर विचार किया तथा तदनुसार आचरण करने का यथा शक्ति संकल्प किया।

ओं क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतं स्मर ॥

इस प्रकार लगभग ६० वर्ष के जीवनकाल में हमारे चरित्रनायक ने शरीर की बाल्य यौवन सम्पूर्णता इन तीन अवस्थाओं का संविभाग कर के क्रमशः धर्म अर्थ काम रूप त्रिवर्ग का साधन किया। ब्रह्मचर्य द्वारा देवऋण से, गृहस्थ द्वारा पितृऋण से और वानप्रस्थ द्वारा ऋषिऋण से निर्मुक्त हुए। तत्पश्चात् ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत् के अनुसार नश्वर भौतिक शरीर का बलिदान कर निर्वाण को प्राप्त हुए।

—×✻×✻×✻×—



भक्त जी के जीवन की संक्षिप्त झांकी

प्रिय पाठकगण ! आपने भक्त जी महाराज का विस्तृत जीवन चरित्र पढ़ लिया। अब आपको स्वभावतः जिज्ञासा उत्पन्न हुई होगी कि हम उसमें से क्या चीज़ ग्रहण करें तो आप के लिये उनके जीवन का यह सारभूत संग्रह प्रस्तुत किया जाता है। आप इसे ध्यान पूर्वक पढ़ कर मनन कीजिये और लाभ उठाइये।

१—भक्त जी महाराज आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के पक्के शिष्य थे। ऋषि दयानन्द ने अपने व्यवहार भानु ग्रन्थ में पहली बात लिखी है—'जो कम विद्यावाला भी मनुष्य विद्वानों के संग से धर्मात्मा सुशील होता है उसका कोई कार्य नहीं बिगड़ता'। आगे प्रश्नोत्तर रूप में दूसरी बात लिखी है—'जो मनुष्य विद्वान् हो परन्तु उसमें धार्मिकता न हो तो उसे विद्या का फल होगा वा नहीं ? उत्तर दिया है, कभी नहीं। क्योंकि विद्वान् होने का यही फल है कि मनुष्य धर्मात्मा हो'। तीसरी बात

लिखी है—'धर्मात्मा निर्बल से भी डरना और पापी बलवान् से भी न डरना यही मनुष्य जाति का निजगुण है। बलवान् से डरना और निर्बल को डराना यह तो पशुता है'।

भक्त जी ने अपने जीवन में इन तीनों शिक्षाओं के अनुकूल आचरण किया। वे बहुत बड़े विद्वान न होते हुए भी सच्चे धर्मात्मा थे। उनमें सत्य न्याय दया प्रेम सेवा त्याग तपस्या आदि श्रेष्ठ गुण कूट २ कर भरे हुए थे। इसी लिये वे बहुत अधिक पढ़े लिखे न होने पर भी विद्वानों से आगे बढ़ गये। अपने महान् उद्देश्य में सफल हुए। वास्तव में मनुष्य कहलाये। उनका कोई काम नहीं बिगड़ा बल्कि उन्होंने लोगों के बिगड़े हुए काम सुधारे।

२—शक्ति और शांति इन दोनों सद्गुणों में भक्त जी को शान्ति अधिक प्रिय थी। शक्ति शाली होते हुए भी वे शान्ति के परम उपासक थे। दूसरे शब्दों में कहें तो वे क्षत्रियकुल में उत्पन्न होकर भी क्षत्रबल की अपेक्षा ब्रह्मबल को अधिक महत्व देते थे। धिग्बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजोबल बलम्' के अनुसार वे शान्ति के मार्ग को चिरस्थायी प्रभाववाला मानते थे। कैसा ही विकट मामला हो उसे वे महात्मा गान्धी की तरह अनशन आदि सरल सत्याग्रह

के उपायों से ही हल करते थे।

३–जो कुछ वे कहते थे वह सच्ची अन्तरात्मा से कहते थे। इसी लिये उनके उपदेश का ऐसा गहरा असर होता था कि प्रबल से प्रबल विरोधी भी सामने आते ही पिघल जाता था उसमें विरुद्ध बोलने की शक्ति ही नष्ट हो जाता थी। विवश हो उसे आपकी बात माननी पड़ती थी।

४–उनको ईश्वर पर पूर्ण विश्वास था। वे सच्चे आस्तिक थे प्रत्येक काम को प्रभु के सहारे छोड़ देते थे। प्रभु ही उन्हें शक्ति देकर पार करते थे।

५–उन्हें मृत्यु से भय नहीं था। वे कर्म करते हुए जीवन मरण को एक समझते थे। जीवन से कोई राग नहीं और मृत्यु से कोई द्वेष नहीं। यदि मृत्यु आती है तो आने दो परन्तु कर्तव्य न छोड़ो यही उनका सिद्धान्त था।

६–वे प्रत्येक काम को निष्काम भाव से करते थे। उस में उनका कोई स्वार्थ नहीं होता था। यदि अपनी प्रिय भोग्य वस्तु दूसरे को मिल जाती थी तो उसका वे मन से भी बुरा न मानते थे। वे सर्वथा समबुद्धि रहते थे।

७–उनमें सब गुणों का शिरोमणि 'सेवा धर्म' बहुत प्रबल था वे धर्म देश जाति एवं समाज के सच्चे सेवक थे।

८–बहुत से लोग उनका जीवन चरित्र पढ़कर या उनके

संपर्क में आकर उनमें लोकैषणा (अर्थात् दुनियां में बड़ी प्रतिष्ठा पाने की इच्छा) की गन्ध देखते हैं पर मेरे विचार में वे लोकैषणा से दूर एक सीधे सादे सन्त थे। बुद्धू न थे, पूरे नीतिज्ञ थे फिर भी सरलस्वभाव के थे। ये दोनों विरोधी गुण विशेष रूप से महात्मा गांधी की तरह उनमें विद्यमान थे।

९—वे बुराई का साक्षात् विरोध करने वाले थे। प्रायः लोग बुराई देखकर भी चुप कर जाते हैं। पर वे ऐसे न थे। चाहे बड़ा हो या छोटा, जिसमें भी कोई बुराई देखते उसी से उलझ जाते। झगड़ा मोल लेते। पर बुराई दूर करके छोड़ते। यह बहुत बड़ा गुण है जो समाज को ठीक करने के लिये सर्वदा आवश्यक है। इसको वही धारण कर सकता है जिसका स्वयं आचरण ठीक है। यदि आचरण ठीक है, तो हो नहीं सकता कि मनुष्य बुराईका विरोध न करे। अबजो देशमें बुराई दूर नहीं होती उसका कारण यही है कि कोई बुराई दूर करने वाला या उसका विरोध करने वाला ही नहीं, जो कोई है भी, उसमें खुद बुराइयां हैं इस लिये सुधार नहीं होता। संसार के इतिहास में अभी तक ऐसा उदाहरण नहीं मिला कि किसी चरित्रवान् पुरुष ने बुराई को रोकने की उपेक्षा की हो अथवा अपना असामर्थ्य प्रकट किया हो। यदि असामर्थ्य है तो वह

चरित्रवान् नहीं है। यही एक ऐसा विलक्षण गुण है जो मनुष्य को महापुरुष बनाता है। इस में भक्त जी महाराज पूर्ण उत्तीर्ण हुए।

१०–उनकी वक्तृत्वशक्ति भी बड़ी कमाल की थी। थोड़ा पढ़े होने पर भी बात को ऐसे प्रभावशाली ढग से जोर देकर कहते थे कि साधारण मनुष्य तो उनका भाषण सुन कर भयभीत हो जाते थे। वे बोलने में पूरा जोर लगा देते थे इसी लिये लोगों से जो चाहते थे, मनवा लेते थे।

ये १० गुण हैं जिनमें भक्त जी का स्थूलरूप से परिचय हो जाता है। अन्य सब बातें गौण हैं। इन्हीं गुणों के धारण करने से आप भी भक्त जी के समान महान् बन सकते हैं। ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

केचिद्वदन्ति धनहीनजनो जघन्यः
केचिद्वदन्ति जनहीनजनो जघन्यः।
विष्णुर्वदत्यखिलवेद पुराण विज्ञः
श्रीफूलसिंह गुणहीन जनो जघन्यः॥

इति.

ओ३म्

मोठ व्रत के दिनों में लिखे

श्री भक्त जी महाराज के शिक्षाप्रद पत्र

ये पत्र आपके हृदय की पवित्रता, देश धर्म प्रेम, समाज सुधार, तथा दलित जातियों की विशेष उन्नति की उच्च अभिलाषा को प्रकट करते हैं। इनके पढ़ने से आपको विशालता तथा महापुरुषता स्पष्ट होती है। अगर एक २ पत्र को ध्यान से पढ़ कर तदनुसार अपने जीवन को बनाया जावे तो प्रत्येक पुरुष महान् बन सकता है। परम पिता परमात्मा हमें वह शक्ति प्रदान करें कि जिससे हम भी इन पत्रों से अपने जीवन का सुन्दर निर्माण करसकें।

लेखक—

॥ ओ३म् ॥

८ सितम्बर सन् १९४०

पंचों के नाम भक्त जी का ब्रत के दिनों का लिखा हुआ प्रथम पत्र

नारनौंद
५ बजे सायं काल

आज मोरखा ८ सितम्बर १९४० को ब वक्त ५ बजे सायंकाल मौजा नारनौन्द की बड़ी चौपाल पाना मीलनवाली में आया। अपनी जिन्दगी को बचाने और हरिजनों को पीने का मन चाहा पानी कूंए व जोहड़ वगैरह का दिलाने के लिए यह शुभ स्थान भगवान की दया से नजर आया। भगवान् इस ग्राम के नर नारियों में और गिरदो नवाह के पञ्चों के दिलों में ऐसा धर्म भाव पैदा करें, और बल प्रदान करें कि जिसके ज़रिये मेरी शुभ कामना पूरी हो।

शुभ कामना हस्बे जैल हैं—

(१) श्रीमान् हरियाणा प्रान्त के दानी वीर और जाट कौम के भूषण सर चौधरी छाजूराम के गांव मोठ में चमारों का बनता हुआ कूंआ मुसलमान रांघड़ों ने हिन्दू

जाटों की प्रेरणा से कुछ आंट दिया और सामान ईंट, चूना, लकड़ी बरबाद करदी और नींवचक कूंए से बाहिर निकाल फैंक दिया। जिसको करीब अरसे तीन माह हो चुका। मैं यकम सितम्बर सन् १९४० को मोठ में गया। और पांच सितम्बर १९४० से भूख हड़ताल करके यथा शक्ति कोशिश करता हुआ चौपाल में से मुसलमान रांघड़ों की नासमझी खुद गर्जी ज़ालमाना हरकतों से बमय चौधरी मनसाराम जी बहवलपुर एम. एल. ए. कौंसिल रियासत जींद रात के ११ बजे निकाला गया। और मौजा ढानी में रात गुजारकर सुबह मौजा माढ़ा में श्री चौधरी सेवगानी के पास पहुँचा। श्रीमान् चौ० सेवगानी की सेवा से दिल कुछ धीरज देकर पूर्ण इच्छा प्राप्ति के लिए आप बुजुर्गों का शरण लिया आप बुजुर्गों की गोद में बैठ कर परमेश्वर की कृपा से पूर्ण विश्वास है कि आप मेरे इस व्रत को अवश्य पूरा करोगे कि जब तक कूंआ बनकर जमीन से ऊपर न आजाये और चमार वगैरह इस कूंए का पानी न भरने लग जावें, भोजन नहीं करूंगा। अगर आप साहबान की कमी या अपनी कमजोरी से मेरी शुभ कामना पूरी न कर सकें तो भगवान् से यह प्रार्थना है कि इस चौपाल में मेरा शरीर पूरा

करें। और अगला जन्म मौजा मोठ में चमार पिता के घर में देवें ताकि अपनी इच्छा पूर्ण कर सकूं।

(२) मौजा माढा का बैल (साण्ड) मारे जाने पर मौजा मोठ के मुसलमान रांघड़ों व आप लोगों में जो दिली रंजिश है। और आत्मा पर घाव है उसको पंचायती तरीके से अपनी जुम्मेवारी को समझते हुए जमा हल करें क्योंकि वे आपके भाई हैं और मौजूदह वख्त में नागा-हनी आफ़तों से बचने के लिए हिन्दू मुसलमानों में प्रेम और संगठन की निहायत ज़रूरत है। भगवान आप साहबान को बलदेवें कि आपके प्रेम और भाई चारा की कशिश उन मुसलमान रांघड़ों को सच्चा भाई बना देवें ताकि सारे गिरदो नवाह में शान्ति की लहर पैदा होवे और एक दूसरे की खुशी और ग़मी में शामिल होना अपना परम धर्म समझें।

(३) हरियाणा प्रांत की हिन्दू जाति के दानवीर जाट कौम के भूषण और दुःखी आत्मा के सच्चे यथाशक्ति सहायक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की आज्ञा अनु-सार रोज़ाना पांच महायज्ञ करने वाले श्रीमान् सम्मान के योग्य पूज्य सर चौ० छाजूराम जी के गांव मोठ में बल्कि घर के पास बैल (सांड) गौ माताओं को रोजाना जिबह होते देख इस प्रान्त का कोई हिन्दुभाई या श्रीमान् सेठ

जी महाराज अपने को जिन्दा कहलाने के हकदार नहीं हैं। हर्गिज नहीं, हर्गिज नहीं, हर्गिज नहीं।

बस प्यारे बुजुर्गो ! वैदिक धर्म की रुह से "जुल्म करना पाप है, जुल्म सहकर जीना महापाप है" इस वास्ते अगर आप साहबान की कमजोरी से या श्रीमान् सेठ जी महाराज अपनी कमजोरी से मेरी यह शुभ कामना पूरी न करा सकें तो भगवान से हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि मेरा शरीर इस चौपाल में पूरा करें और अगला जन्म मौज़ा मोठ में गौओं को ज़िबह करने वाले कसाई पिता के घर में, या गरीब हिन्दू पिता के घर में देवें ताकि अपनी शुभ इच्छा पूर्ण कर सकूं। श्रीमान् प्यारे बुजुर्गो ! मेरी शुभ कामना पूरी कराने में हस्बेजैल तरीका इस्तेमाल करें।

(१) हर प्रकार के दुःखियाओं के लिये सच्चा सहारा भगवान से दूसरे दर्जे पर पंचायत की शक्ति है। कुछ अरसा पहले इस तरीके से बड़े से बड़े घोर दुःख संकट को देखकर या सुनकर जिम्मेवार पच साहबान अपना खाना पीना व काम करना छोड़ दिया करते थे। जब तक वह क्लेश दूर न हो जावे तब तक खुद बगैर बुलावे के अपना फर्ज व धर्म समझ कर जाते थे इस वास्ते गृहस्था-

श्रम सुख धाम था और अब नरक धाम बना हुआ है। बस प्यारे बुजुर्गो ! खुशी में बुलाने पर और ग़मी में नागहानी जुल्म होने पर खुद जाया करो ताकि आपका मनुष्य जन्म सफल होने में किसी क़िसम की रुकावट न आवे। आज भी रौब खौफ़ और शर्म पंचायत का है और इन्साफ भी पंचायत के ज़रिये से है थाना तहसील ज़िला वगैरह के अन्दर इन्साफ नहीं है क्योंकि वे सब असल वाक़यात से बहुत दूर रहते हैं और अपना इन्साफ गवाहान के बयानात और गवर्नमेंट के बनाये हुए क़ानूनों के आधार पर करते हैं और कुछ अपनी खुदगर्ज़ी से धर्म की कमी में रिश्वत वगैरह लेकर या सिफ़ारिश मानकर सचाई के साथ इन्साफ करने में अपनी पूरी जिम्मेवारी नहीं समझते और गवाहान भी अपनी खुदगर्ज़ी से धर्म की कमी में रिश्वत वगैरह लेकर या सिफारश मानकर अपने प्यारे धर्म को गवांकर झूठी गवाही देते हैं जिससे इन्साफ होना क़तई नामुमकिन हो गया है। बल्कि रात दिन हज़ारों लाखों करोड़ों मनुष्यों में इन्साफ का खून होता देख कर दुःखी हो रहे हैं। जिन्दगी बसर करने का रास्ता कठिन हो गया है इस वास्ते आजकल निर्बल मनुष्य पशु पत्ती वगैरह ज़ाल्मों और खुदगर्ज़ों के शिकार हो रहे हैं। बस

प्यारे बुजुर्गों में इस पुराने तरीके के आधार पर व्रत कर रहा हूँ। और आप साहबान को अपना सच्चा धर्म का साथी समझकर परमेश्वर से दूसरे दर्जे पर दुःखों का निवारण करने वाला समझ सलाह देताहूँ कि आप साहबान भी ऐसा ही करने में अपना व दूसरे प्राणियों का कल्याण समझें और मुझे अपना धर्म सेवक समझ कर जल्दी से जल्दी मेरी शुभ कामना पूरी कराके प्राण बचावें। ताकि कुछ दिन और इस ज़िन्दगी में आप बुजुर्गों के आशीर्वाद से सेवा कर सकूं। मैं ने अपनी जिन्दगी में आपे को मार कर अनेक बड़े २ मामले सुलझाये हैं और भगवान् की कृपा से पूर्ण विश्वास हो गया है कि ऐसे २ ख्याल वाले ज्यादह धर्म सेवक बनते जावेंगे उसी दिन जुल्म होने कम होते जावेंगे। और बेइन्साफी भी जुम्मेवार आदमी हर्गिज़ नहीं कर सकेंगे। कहावत भी है:— पंच जहां परमेश्वर, आपा मारे स्वर्ग और दूसरे को मारे नरक।

(२) पंचायती शक्ति को रिश्वत खोरों और उनके दलालों ने अवश्य कमज़ोर कर दिया है और खुदगर्ज भी पंचायत को छिन्न भिन्न करके अपनी कामयाबी समझते हैं। दर असल खुद रिश्वत खोरों और खुदगर्जों ने भी गांव में ऐसी धड़ा बन्दी करदी है कि एक दूसरे के नुकसान

व नाश में, धर्म की कमी से अपनी आत्मा की शान्ति समझने लगे हैं। बस प्यारे बुजुर्गो ! यह शान्वि ऐसी है जैसे ओस के मोती या सुपने में बहुत धन व राज्य का मिलना ! मनुष्य चोला ईश्वर से दूसरे दर्जे में सुख देने वाला है इस वास्ते मनुष्य चोले का फ़र्ज व परमधर्म है कि अपने मन वाणी काया से और तन मन धन से दूसरे प्राणियों की सेवा करें, सुख पहुँचावें। मेरे धर्म के पिताओ ! अपनी जिम्मेवारी को समझ कर आपस के वैर विरोध व धड़ाबन्दी को मिटाकर अपने पुरुषाओं की लाज को रखें। और मुझे अपना पुत्र और धर्म सेवक समझ कर साथ देवें। भगवान की कृपा से अवश्य धर्म की जय होगी।

(३) जो पंच साहबान धर्म सेवक मेरी आत्मा के दर्द को समझ जावें और अपना फ़र्ज और धर्म समझ लेवें वे कृपा कर इस चौपाल में आकर बैठते जावें और भगवान से प्रार्थना करते हुए यथा शक्ति पुरुषार्थ करें और जब तक यह शुभ कामना पूरी न हो भोजन दूध वगैरह न खावें न पीवें। सिर्फ प्राणरक्षार्थ जौ का सत्तू गुड़ या शक्कर शर्बत में मिला के पीवें। जो भाई इधर उधर जाने का कार्य करें वे अपनी पूरी खुराक खाते रहें।

(४) जब इस ग्राम व गिरदोनवाह के पंचों के दिलों में मेरी आत्मा का दर्द सही जच जावे तथा मौज़ा मोठ में रहने वाले हिन्दू मुसलमानों के दिलों में धर्मानुकूल बात प्रेम पूर्वक जचावें और मेरी शुभकामना पूरी करावें। जब तक वे भाई मेरी आत्मा के दर्द को न समझें और कलंक अपने मस्तक पर न समझें और हम सबके अन्दर अपनी खुशी व गमी में शरीक रहकर भाई चारे के लिहाज़ से अपनी जिम्मेवारी न समझें सारे भाई इस चौपाल व मन्दिर में बैठकर भगवान से प्रार्थना करते रहें और एक दो भाई बोलनेवाला हो बाकी सब भाई मौनव्रत करके भोजन व दूध छोड़कर बैठे रहें। बोलने वाले भाई जिस कदर हो भोजन करते रहें और मौन व्रत करने वाले जौ का सत्तू गुड़ या शक्कर में मिलाकर पीते रहें। भगवान की कृपा से वह भाई आप साहबान को अपना सच्चा भाई अवश्य समझेंगे और आपके ज़रिये से मुझे भी अपना सच्चा धर्म सेवक खयाल करेंगे। मेरी शुभ कामनायें पूर्ण करके मुझे दुबारह जिन्दगी देकर सेवा करने का मौका देवेंगे और जिस जगह से रात को बेवक्त बड़ी बेदर्दी के साथ तीन दिन के भूखे को निकाल कर अपना धर्म व अपनी शान व अपना मर्दान और गांव की भलाई

समझी थी उस पर पश्चाताप करके उसही बिचली चौपाल में अपने हृदय से मुझे अपनी इज्जत का, दुःख का, साथी समझ कर भोजन खिलायेंगे।

और पंचायत को भी बिरादरी के तरीके से भोजन करायेंगे जिससे आप साहबान का ग्राम मोठ भगवान की कृपा से फले फूले।

(५) भगवान की कृपा से आज राज नियम के आधार पर गवर्नमेंट के जिम्मेवार अफसरान व अहलकार भी मेरे प्राण बचाने में और हरियाणा प्रान्त के पंचों की लाज रखने में और कुल प्रान्त की आत्माओं में शक्ति देने में कुल प्रान्त या हिन्दू मुसलमानों के मिल जुलकर रहने की शकल को अपने लिये हितकारी समझकर वक्त जरूरत पर पूरी २ मदद करेंगे।

शक्ति और शान्ति भक्तों की रीति में है।
भूतल के वासियों की मुक्ति प्रीति में है॥

(६) भगवान की कृपा से पांच दिन के भूखे को अपने और तुम्हारे कल्याण के लिये जो बातें सूझी वे लिखदीं इनको पढ़कर और खुद सोच कर जो आप साहबान की राय में आवे सो करें।

(७) मुझे आप साहबान की दया पर पूर्ण विश्वास है

कि आप मेरी कमजोरी को देखकर और समझकर सवाल जवाब करने का मौका न देंगे। मुझे मौनव्रत में सुख से रहने का मौका देंगे।

आपका धर्म सेवक व दुःखिया पुत्र
फूलसिंह वान प्रस्थी
सेवक भैंसवाल कलां गोहाना जि० रोहतक।

॥ ओ३म् ॥

१३ सितम्बर सन् १९४०
समय ६।

श्रीमान् सम्मान के योग्य मेरे धर्म के पिता, इस प्रान्त के पंच साहबान से हाथ जोड़कर प्रार्थना।

मुझे यह देख कर और सुनकर कि आप मेरे प्राण रक्षा के लिये हिन्दू मुसलमान मिलकर बड़ी कोशिश कर रहे हैं इसके वास्ते आप सबको धन्यवाद देता हूँ। मगर मेरे दुर्भाग्यवश आप अब तक मेरी शुभ कामना पूरी करने में असमर्थ रहे हैं और साथ में मुझसे चौ० माडूसिंह जी ने कहा है कि मुसलमान रांघड़ कहते हैं कि हम भक्त जी से हर प्रकार से मांफी मांगलेवें और वे खुद कूआ तैयार करदें और धर्मशाला भी। चमार देह

अब कूंआ नहीं बनाना चाहते, तीन बार इन्कार कर चुके हैं। इसमें कोई शक नहीं चमार अपनी कमजोरी से और आइन्दा आने वाले दुःखों से घबराकर मुझ से भी लोगों के सताये हुए और भेजे हुए बिचली चौपाल में दोबार यही कहने आये थे और तीसरी बार कुल ग्राम की पंचायत के सामने रात के नौ दस बजे कहने आये थे। इन सब हालात को देख कर और सुनकर मैंने दृढ़ प्रतिज्ञा करली थी कि अब चमारों को कूंआ नहीं चाहता तो भगवान की कृपा से कुल हरिजनों के लिये यह कूंआ बनवाया जावे। सबके पत्थर पर नाम खोदकर ज़मीन से नीचे कोठी में पत्थर चिना जावे और ऊपर जो चार पाड़छे होते हैं उनपर चमारों का चूहड़ों का तथा धानकों का पाड़छा खोदा जावे। और एक पाड़छा मुश्तर्का नहाने वालों के लिये हो और ऊपर पत्थर हरिजनों का लिखा जावे। गर्ज, चार पत्थर लगवाये जावें और मैं अपनी आंखों से पहिले चमारों को देखूं तब भगवान की कृपा से चमारों की ब्रादरी अपने से छोटे भाइयों को भगवान के सच्चे पुत्र और अपने सच्चे भाई समझ लेवें। बाद में कहीं सारे ही हरिजन भाई इस कूंए पर अपने शरीर व आत्मा की प्यास बुझावें। मुझ से चमारों के दो चार आदमियों ने यहां तक कह दिया था कि हमने सरकार

में अरज़ी देकर बाट देखी मगर अब तक कोई सुनाई नहीं हुई।

हिसार में एक साधुने कहा था कि हम जल्द आवेंगे तदनन्तर एक पण्डित व साधु आये थे, बाद में उन्होंने भी कोई ख़बर नहीं ली। अगर अब आपसे भी नहीं बना तो हम कुल चमार गांव छोड़ देवेंगे। श्रीमान् प्यारे बुज़ुर्गों! मैं अपनी आंखों व कानों इन बातों को नहीं देख सकता तथा सुन सकता मैं ने अपने धर्म की कमी व कमज़ोरी में १९०७ से अब तक ऐसे २ ज़ुल्मों को देखा सुना तथा सहा है। अब अपनी कमजोरी को देखकर और आप साहबान की खुदगर्ज़ी व बेदर्दी को देखकर इस जन्म में जीने से तो मरना बेहतर समझ आप साहबान की तजवीज़ को सुनने और मानने से बिल्कुल मजबूर हूँ। आप भगवान की शक्ति में तथा अपने पुरुषार्थ में पूर्ण विश्वास रक्खें। मुसलमान रांघड़ मुझे अपना सच्चापुत्र तथा सेवक समझकर अपने हाथ से निकाले हुए नीमचक को ज़रूर ही कूंए में डालकर अपने सदाके सच्चे सेवक और आगे सेवक रहने वालों के हाथ से इस कूंए को बनवावेंगे। और अपनी भूल पर ईश्वर की दया से पश्चाताप करके मुझ दुखिया अपने सच्चे सेवक की आत्मा को शान्ति देवेंगे। और मुझे अपनी चौपाल में बिठाकर

ज़रूर भोजन करायेंगे। और आइन्दा मुझे अपना सच्चा सेवक समझेंगे।

मौज़ा मोठ के मुसलमान रांघड़ों से खास कर और दूसरे भाइयों से आखिरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि आप मुझे इस प्रान्त का सेवक समझकर और अपना पुत्र समझ इस जन्म में दुबारह सेवा करने का मौका देवें। मैं अपने मरने से नहीं डरता बल्कि आप सबके मस्तक पर कलंक का टीका लगने से डरता हूं। आप मेरी हालत पर और मेरे हरिजन भाइयों की हालत पर भगवान के वास्ते रहम करें, रहम करें रहम करें।

आपका सच्चा धर्म सेवक व सच्ची इज्जत चाहने वाला।

फूलसिंह सेवक गुरुकुल भैंसवाल

चौपाल बड़ी १३ सितम्बर १९४०

॥ ओ३म् ॥

समय ३॥। सायं काल
१३ सितम्बर १९४०

"श्रीमान् स्वामी ब्रह्मानन्द जी के नाम पत्र"

श्रीमान् पूज्य गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज!

हाथ जोड़कर नमस्ते।

मुझे बड़ी खुशी हुई कि भगवान ने पंचायती तरीके से मेरी शुभ कामना पूरी कराने के लिये श्रीमान् इन्सपैक्टर पोलिस की जबानी ऐसा कहलवाया कि आप मौज़ा मोठ में चलें और खुद बुनियादी पत्थर रक्खें लेकिन मैं पापी अपने मनमें ऐसा व्रत कर चुका था कि मैं मोठ गांव में कूंआ बनने पर अपने धर्म के पिता मुसलमान रांघड़ों व दूसरे पिताओं के दर्शन करूं और इसी कूंएका पानी पीकर बिचली चौपाल में बैठकर भोजन करूं।

मुझे ईश्वर की कृपा से ऐसा पूर्ण विश्वास हो गया था। और इस वास्ते मैंने बार २ उन अपने धर्म के पिताओं से कहा था कि आप मुझ पर रहम करें। मैं आपके मस्तक पर से कलंक का टीका उतारने के लिए आया हूं आपका सच्चा सेवक हूँ आप मुझ पर इतबार करें खैर जो कुछ हुआ मेरी धर्म की कमी और मेरे पापों का फल था वह मैं ने पा लिया।

अब मैं आप सबका हृदय से गुणगान करता हुआ आपकी शरण में प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे व्रत को हूबहू पूरा कराने में साथ दें तथा वह बुनियादी पत्थर आपके द्वारा रखा जावे और जल्दी उस बने हुए कूए पर मुझे ले चलें। आप सबने मुझे दुबारा जीवन दान दिया। इस पर दुबारा धन्यवाद देता हूँ इससे आगे मैं

कुछ नहीं सुनूंगा और न कर सकूंगा, मैं अपने दृढ़ व्रत के आधार पर लाचार हूँ।

आपका दुःखी पुत्र, जीने का अभिलाषी
फूलसिंह गुरुकुल सेवक

॥ ओ३म् ॥

१३ सितम्बर
समय ७॥ सांय

"उपस्थित मोठ निवासी"

तथा अन्य उपस्थित सज्जनों के नाम पत्र"

श्रीमान् सम्मान के योग्य बुजुर्गो !

मुझ दुखिया को परमेश्वर की कृपा से और मौज़ा मोठ की पंचायत व गिरदोनवाह के पंचायत के व श्रीमान् सब इन्सपैक्टर साहब थाना नारनौन्द की मेहनत से और श्रीमान् पूज्य गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज के तप से यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि मुझ नाचीज़ दुखिया की दिली भूख को समझा और पूरा करने का विश्वास दिलाया। इसलिये में आप सब बुजुर्गों को दिल से धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूं कि आप आईन्दा अपनी जिन्दगी में किसी अनजान से अनजान

आदमी को बगैर किसी कसूर के ऐसा कष्ट न देवेंगे।

आपने मुझे अपना पुत्र समझ कर दोबारा जिन्दगी देकर सदा के लिये मुझ जैसे गरीब दुःखी सेवकों पर बड़ा रहम किया है। भगवान आपको इसका फल देवेंगे। और मैं माफ़ी क्या दूं बल्कि आप सबने मुझे सेवा करने का जो मौक़ा दिया इसके लिये दोबारा धन्यवाद देता हूं।

मैं दिल में परमेश्वर को हाज़िर नाज़िर मानकर प्रार्थना करता हूँ कि मेरे दिल पर आप साहबान की तरफ से कोई रंज नहीं रहा। लेकिन मेरे व्रत को जो कि मेरे सात सितम्बर की रात को आपका दुःखी धर्म सेवक मौज़ा मोठ में किया था उसको पूरा कराने में आप मेरे धर्म पिता बनकर साथ देवें क्योंकि यह व्रत मैंने अपने और आपके सच्चे पिता और रक्षक के सामने मैंने मुसीबत की घड़ी में किया था।

इस के बारे में अगर आप कुछ कहेंगे तो मेरे वास्ते लाचारी है। यह व्रत मेरी मजबूरी में हुआ था इस लिये आप सब भी मेरे धर्म के साथी होते हुए उस परमपिता परमात्मा के खौफ़ को खाते हुए कूंए की कोठी को निकाल कर ही भोजन के लिए यानी व्रत तोड़ने के लिये कहेंगे। आप सब रहम करके बैठ जावें मुझे गर्मी होने से घबराहट होती है। आप सब गीता पढ़ें मैं सोचकर

जवाब दूंगा और सब बाहिर चले जावें, इस जगह पर कोई न रहे। स्वामी जी महाराज आपभी सन्ध्या करें और मुझ से कोई बात न करे। मैं लिख कर आध घण्टे तक जवाब दूंगा।

फूल सिंह

सेवक गुरुकुल भैंसवाल

॥ ओ३म् ॥

"पंजाब के मन्त्री माननीय चौ. छोटूराम जी की सेवा में पत्र"

१३ सितम्बर १९४०
समय १२ बजे दिन
चौपाल नारनौंद

श्रीमान् सम्मान के योग्य मेरे बहुत पुराने मित्र,

चौधरी छोटूराम जी साहब सादर नमस्ते।

मैं ५ सितम्बर सन् १९४० से दो वक्त पानी के सिवाय कुछ नहीं ले रहा हूं और सात सितम्बर सन् १९४० की रात बिचली चौपाल में ग्राम मोंठ के पंचायती मुसलमान रांघड़ों ने और उनके कहने पर चन्द मुसलमानों ने चौपाल से लेकर गांव से बाहिर एक मील या आध कोस

मौज़ा ढानी के रास्ते पर जो सलूक किया है इसको श्रीमान् चौ० मनसाराम जी साहिब बहवलपुर निवासी ने ही कुछ देखा है और सारा सलूक तो भगवान ने या गांव के बहुत से आदमियों ने ही देखा है। इसके बारे में आप से कुछ नहीं कहना चाहता अलबत्ता अपना हक समझकर अपनी जिन्दगी बचाने के खातिर और अपनी आत्मा की शान्ति के लिये और हरियाणा प्रान्त के कुल हरिजनों (चमार चूहड़े धानक वगैरह) को मन चाहा पानी पीने व नहाने के लिये दिलाने की गर्ज से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं कि आप सूबे पंजाब के कागज़ात माल में जो नम्बर खसरा आबादी देह की मिलकियत का है उसमें कुल हरिजनों के बगैर किसी रोक टोक के कूंआ बनवाने की इजाज़त दिलवावें।

अगर आबादी देह के नम्बर में खारी पानी निकले तो दूसरी जगह पर जहां मीठा पानी निकलने की आशा हो उस अराज़ी को सरकार खुद मुआवज़ा देकर या हरिजनों से दिलाकर हासिल करे और श्रीमान् तहसीलदार हलके की मार्फत करावे। जल्दी से जल्दी कूंआ बनाने का कानून बनवावें ताकि मुझे अपनी ज़िन्दगी में ऐसा नागहानी जुल्म सुनना व देखना न पड़े। और हरिजन भाई आपके सच्चे सेवक तथा साथी बनें रहें और सूबे के

नरनारी अपने खुदगर्ज़ी व नासमझी से घोर पाप न कमावें और सूबे पंजाब की गवर्नमेंट के मस्तक पर कलंक का टीका न रहे।

आपका दुखिया प्यारा
फूलसिंह—
सेवक गुरुकुल भैंसवाल

॥ ओ३म् ॥

"श्रीमान् स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज की सेवा में पत्र"

१५ सितम्बर सन् १६४०
समय ८ बजे प्रातः

श्रीमान् पूज्य गुरु स्वामी जी महाराज !

हाथ जोड़कर नमस्ते।

आपसे प्रार्थना है कि आप कृपा करके मेरे प्राण बचाने की गर्ज से और हरिजन भाइयों की प्यास बुझाने की खातिर मेरी सलाह को हितकारी समझकर पूरी करने व करवाने में लाभ समझेंगे। और परमेश्वर की भक्ति द्वारा मेरी शुभकामना पूरी करने में अपनी और इस प्रांत की सच्ची भलाई समझेंगे।

१—मुझे यह पता चला है कि अब तक जो २ कार्यवाही

हुई है वह सिर्फ मुझे रोटी खिलाने की गर्ज से हुई है। हरिजनों को मनचाहा पानी पिलाने की पंच साहिबान ने अपनी जुम्मेदारी नहीं समझी है। मेरा व्रत भगवान के सामने रात के ग्यारह बजे यह हुआ था कि मेरे हरियाणा प्रान्त के पंच अपने सच्चे सेवकों व धर्म के साथी हरिजनों के सच्चे आत्मिक दुःख को समझें और अपनी जुम्मेदारी को समझकर जल्दी से जल्दी इस घोर पाप से बचें ताकि भगवान के पदार्थ हम सब प्राणियों को मन चाहे वक्त पर मिलते रहें।

भगवान का घर सब प्रकार के सुखों से भरपूर है। मगर हम अपने धर्म के अभाव से अपनी खुदगर्जी से अन्धे होकर वह पाप कर्म कर रहे हैं कि आज भगवान के सम्पूर्ण पदार्थ तो कहां समय पर मिलें बल्कि पानी भी मनुष्य पशु पक्षी आदि को मन चाहा पानी पीने और नहाने को नहीं मिलता। इस वास्ते इस चौपाल में जो मेरे धर्म के प्रेमी व हरिजनों के सच्चे दुःख को अनुभव करने वाले व दर्शन देने व दुःख मिटाने के लिये आवें वे कृपा कर सिर्फ ज्यादह से ज्यादह इस चौपाल में या ग्राम में पांच घण्टे से ज्यादह हर्गिज़ न ठहरें।

अगर मेरी मुहब्बत में कोई ठहरेंगे तो मुझे बहुत

ज्यादह दुःख होगा। हां मेरे सच्चे दुःखी, हरिजनों के दुःख को बटाने की गर्ज से इस चौपाल में ठहर सकते हैं उनको चौबीस घण्टे मौनव्रत रखना पड़ेगा और सिर्फ एक बार मन चाहा सत्तू शक्कर में मिलाकर पीना पड़ेगा और प्रातः से सोने के समय तक भगवान को जपते रहें। और मेरी शुभ कामना पूरी कराने के लिये प्रार्थना करते रहें। अगर किसी कारण से अपनी कमजोरी से या जरूरत में जाना चाहे तो जा सकते हैं।

इस व्रत में सभी हिन्दू व मुसलमान ईसाई आदि नरनारी शामिल हो सकते हैं मगर रहें इस चौपाल में। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरे धर्म के पिता मुसलमान रांघड़ मोठ वाले व दूसरे मुसलमान पिता या बाहिर से आने वाले मुझे अपना धर्म पुत्र समझकर दुबारा जन्म देवेंगे। और इसी बिचली चौपाल में बिठाकर मेरे धर्म पिता आशीर्वाद देंगे और नौजवान भाई मेरी सेवा करेंगे और आगे के लिये मुझे अपनी और दूसरों की सेवा करने का मौका देवेंगे और अपने घर से भोजन करायेंगे तथा साथ ही यह भी पूर्ण विश्वास है कि भगवान को मेरे इस तुच्छ शरीर से मुझ जैसे दुःखिया आदमी की सेवा करानी अभी मंजूर है।

२—बाहर से आने वालों को जाने की मेरी तरफ से

आज्ञा देवें क्योंकि इनका बहुत हर्ज़ हो रहा होगा। जिन भाईयों का हर्ज न होवे और मेरे तरीके के अनुसार चौपाल में ठहर सकते हैं वे बेशक रहें।

३—आप अपने पास से अच्छा सत्तू व शक्कर मंगवावें और अपने हाथ से खुद व श्रीमान् स्वामी फूलानन्द जी महाराज के हाथ से दिलवावें तथा २४ घण्टे में एक बार ही देवें।

४—जिन २ धर्म के प्रेमियों ने मेरा व्रत पूरा कराने की खातिर बात चीत करनी है या दूसरी कोई सेवा करनी है या धर्म उपदेश करना है या इसके सम्बन्ध में दूसरे स्थान पर आना जाना है वे सत्तू वाले व्रत से बाहर हैं। भोजन खाते पीते रहें ताकि मेरी शुभ कामना अपने पुरुषार्थ से जल्दी पूरा करासकें।

५—जबतक मेरे धर्म पिता मुसलमान रांघड़ व दूसरे हिन्दू पिता मोठ निवासी अपना धर्म व फ़र्ज़ समझ कर अपने मस्तक पर से इस कलंक के टीके को उतारने की गर्ज़ से चमारों को मिलाकर और अपने प्रेमका सबूत देकर उसी कूंए को बनाने की इजाज़त न देवें और उस बनेहुए कूंए पर पानी भरने की खुशी से इजाज़त न देवें उस समय तक मुझे कुछ न कहें क्योंकि लिखकर देने अथवा ज़बानी

कहने से मुझे बहुत कष्ट होता है। मुझे आप सबकी दयालुता पर पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे अपना सच्चा धर्म पुत्र और सेवक समझ कर मेरी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे और दोबारा जन्म देकर मेरी आत्मा को शान्ति देंगे।

६—मैं ग्राम नारनौंद कुल नर नारियों को और ख़ास कर इसी पाना मेलान के माता पिताओं को जिन्होंने पूरी सेवा कर के मुझे आठ सितम्बर सन् १६४० से लेकर आज तक अपनी प्रेम भरी गोद में बैठाकर रोने का और अपनी शुभ कामना पंचायती शक्ति द्वारा पूरी कराने का अवसर प्रदान किया है इन सबको हृदय से धन्यवाद देता हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि इस सेवा और प्रेम भरे व्यवहार का फल देवें।

मैं आप सब पर भार चढ़ाने नहीं आया हूँ परन्तु इस प्रान्त में जो जो जुल्म सुने और अपनी आंखों देखे इन सबको यथा शक्ति पंचायती शक्ति द्वारा दूर करने की शुभ इच्छा लेकर बैठा हूँ। आप सब को और ख़ास कर ग्राम नारनौंद की पंचायत को भगवान इस पुण्य कर्म का फल देंगे और उनको यश मिलेगा। और मेरे ना समझ भाई अपनी खुदगर्ज़ी से जो पाप कर्म कर रहे हैं। वे

बेचारे आपकी शक्ति से भय खाकर पाप कर्म व जुल्म न करें ।

ग्राम मोठ पुराने रस्म व रिवाज़ के लिहाज़ से आपका माजरा है । और आपके सुख व दुःख में सदा साथ देने वाले हैं । आपका धर्म व फर्ज है कि आप पूर्ण प्रेम से अनेक कष्ट सहकर भी इनको अपनी प्यारी गोद में रक्खें । किसी हालात में भी अपने से दूर न होने देंगे ।

आपका दुःखिया पुत्र

फूलसिंह सेवक

॥ ओ३म् ॥

चौपाल में उपस्थित लोगों की सेवामें सन्देश तथा प्रार्थना

१६ सितम्बर सन् १९४०
समय ५॥ प्रातः

श्रीमान् सम्मान के योग्य मेरे धर्म के प्यारे, प्राणों को बचाने वाले, सच्चे प्रेमी व पुरुषार्थी, रोहतक से आने वाले हिन्दू मुसलमानों को कल सायंकाल देखकर मुझे बड़ी शान्ति हुई और आशा बंधी कि जिस तरह से रोहतक वाले अपना पुत्र व सेवक समझ कर अपना

ज़रूरी काम छोड़ कर मेरी ज़िन्दगी को बचाने के लिये आये हैं और मेरी ज़िन्दगी से अपना कुछ लाभ समझ रहे हैं। उसी तरह मेरे धर्म के पिता मुसलमान रांघड़ दूसरे हिन्दू भाई मोठ निवासी मेरी आत्मा के प्रेम भाव को भी भगवान की प्रेरणा से ज़रूर कुछ दिन में समझेंगे। अलबत्ता मेरे पापकर्मों से मुझे कुछ कष्ट मिलने का हिसाब भगवान की तरफ से और बाकी होगा वह ख़तम होने पर मुझे अपना पुत्र समझ कर फौरन उसी मेरी शुभ कामना को पूर्ण कराने में अपना व प्रान्त का सच्चा भला समझेंगे और बड़ा पश्चाताप करके मुझे दुबारा जीवन देने का यश लेंगे और अपने हरिजन भाइयों को अपना पुत्र व सच्चा सेवक समझ कर हर प्रकार से मन चाहा पानी देने में अपना हर तरह से भला समझेंगे कम से कम नुकसान हर्गिज़ नहीं।

इसमें कोई शक नहीं कि अब मारे खौफ़ के चमार भाई अपनी असली प्यास को भूल गये और जो पचायत कहलवाती है उसी में अपनी ज़िन्दगी और भलाई समझ कर कहते नहीं हैं। जैसे बिल्ली के भय से चूहा बिल में मरजावे मगर बिल से बाहर नहीं आसकता यही हाल आज उन गरीबों का है। और उनही का क्या दोष है

आज सारे संसार में धर्म की कमी से हर जगह ऐसा ही हो रहा है। जहां पहले बलवान हर तरह की शक्ति वाले अपने बल से निर्बलों की सेवा करने में अपने खानदान की भलाई समझा करते थे वही बल आज अपनी खुदगर्जी की बिना पर निर्बलों को अपना शिकार समझ कर बहुत बेरहमी से हड़प कर रहे हैं और अपना दुनियावी भला और शान्ति समझ रहे हैं।

इस घोर पाप कर्म के कारण आज सारा संसार तड़प रहा है जैसे बिना पानी मछली तड़पती है यह मुझे आर्य समाज की शरण में आकर ऐसा मालूम हुआ। इस लिये सन् १६०७ से लेके आज तक अपनी यथाशक्ति दुःखियाओं की हर प्रकार से रात दिन अनेक कष्ट पाकर सेवा कर रहा हूँ।

और इस सेवा भाव ने आज मुझे इस चौपाल में बिस्तरे मर्ग पर डाल रक्खा है। मेरा आम सिद्धान्त हमेशा ऐसा रहा है कि "खुशी में बुलाने पर जावें गमी में बिना बुलाये जावें तथा पूर्ण पुरुषार्थ करके उस दर्द को घटावें।" मेरे पास इसके सिवाय और धन नहीं था जिसके प्रताप से आप मेरे साथ पुत्र समान प्रेम करते हैं तथा भाग भाग कर मेरे प्राण बचाने आते हैं। आप कई

बार ग्राम मोठ में जाकर पूरी कोशिश कर चुके और ख़ास कर श्रीमान् चौधरी साफे अली खां जी महाराज व श्रीमान् चौधरी जान मुहम्मद साहिब ने तो अपना हक समझ कर उन मुसलमान भाइयों को मेरी तरफ़ का खूब विश्वास दिलाया जो कुछ कह सकते थे कहा। पर मेरे दुर्भाग्य से वे मुझे अपना पुत्र व सच्चा सेवक नहीं समझ सके बल्कि अपनी शान व भलाई उस ज़िद के पूरा करने में समझ रहे हैं, मेरे मरने का अपने ऊपर कोई बोझ नहीं समझ रहे हैं। मुझे श्रीमान् कप्तान टोडर सिंह साहब से रात को मोठ से पता चला है तथा कप्तान साहब ने मुझे सारा आगा पीछा दिखा कर अपनी सलाह दी है कि आप बड़े हैं बुजुर्ग हैं खुद ही अब सोचलें तथा प्रातः चलते समय मुझे फिर अपना निश्चय बतलाना।

श्रीमान् मेरे धर्म के पिताओ, ज़िन्दगी चाहने वाले सच्चे प्रेमियो! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि तभी से मैं सारी रात यही सोचता रहा कि क्या करूं। लेकिन जो व्रत मैं ने सबसे बड़े परमपिता के सामने सात सितम्बर को रात के ग्यारह बजे किया था उसीके पूरा होने में या मेरे मरने में सब दुःखी प्राणियों का सच्चा भला है। इसमें मेरी ज़िद न समझें बल्कि भगवान को यह मंज़ूर है कि इस हरियाणा प्रांत के अन्दर जो खुदगर्ज़ी की

मेहरबानी से वैर विरोध व पार्टी बाज़ी होकर एक दूसरे के नाश में अपना भला समझ रहे हैं इन बातों को आज कल के हालात को देख कर बिल्कुल भूलजावें तथा पुराने भाई चारे के लिहाज़ से हिन्दू मुसलमान वगैरह सभी भाई प्रेम व संगठन के ज़रिये से धर्म धन व लाज को बचावें और एक दूसरे के दुःख दर्द को समान समझकर कुछ सुख से ज़िन्दगी बसर होने का मुझे यही रास्ता नज़र आ रहा है क्योंकि निर्बलों पर जुल्म करने वाले तभी जुल्म किया करते हैं जब उनको अपनी आंखों के चारों तरफ़ अन्धेरा ही अन्धेरा नजर आवे और उनका मुकाबला करने वाला नज़र न आवे। चुनाचे आज इस प्रान्त में ऐसा ही अन्धेरा हो रहा है। आप सब भी इन हालात को खूब जानते हैं, देखते हैं, अपने घरों में रहना मुश्किल होरहा है। मुझे तो जुल्म करने वालों का भी इसी तरीके में भला मालूम होता है। भगवान के प्रकाश में मुझे तो साफ़ नज़र आता है कि "जुल्म करना पाप है जुल्म सहकर जीना महा पाप है। ऐसे जुल्मों को पचायती शक्ति ही रोक सकती है। इस वास्ते आप सब मुझे अपना दुःखी पुत्र समझ कर भगवान के सामने किये हुए व्रत को पूरा करने में मेरी और आप सब की व इस प्रान्त के दुःखी प्राणियों की सच्ची भलाई समझें।

भगवान को अभी मेरी ज़िन्दगी गरीबों की सेवा कराने के लिये मंजूर है, मेरी शुभ कामना ज़रूर पूरी करायेंगे।

आप साहिबान बिल्कुल चिन्ता न करें आप अपना आशीर्वाद देकर वापिस जावें यहां पर न रहें।

मैं आप सब बुजुर्गों को हृदय से धन्यवाद देता हूँ और पूर्ण आशा करता हूं कि आप मुझ पर रहम करेंगे। तथा मेरी नीयत को धर्मभरी समझ कर मेरी ग़लतियों को दिल से मुआफ़ करेंगे। मैं फिर विश्वास दिलाता हूं कि इस प्रान्त में आप साहिबान के मस्तक पर अपने कारण कभी बुराई का टीका नहीं लगने दूंगा।

आपका सेवक—
फूलसिंह वान प्रस्थी

॥ ओ३म् ॥

❀ श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज की ❀ सेवा में लिखा हुआ पत्र

१७ सितम्बर सन् १६४०
समय ६॥।

श्रीमान् सम्मान के योग्य गुरु जी महाराज !

हाथ जोड़कर सादर नमस्ते।

१६ सितम्बर १९४० की रात को ग्राम मोठ से पंचायत के निराश आने पर और पंचायत ज़िला रोहतक के पंच साहिबान के वापिस जाने पर भगवान की दया से जो भाव मेरे अन्दर आए हैं उसको लिखता हूँ। कृपा करके मुझे सच्चे आर्यों में बचाने व दुःखी हरिजनों के दुःखों को निवारण करने व इस प्रान्त में हिन्दू मुसलमानों का प्रेम पूर्वक एक दूसरे के दर्द में शरीक रह के बसने के खयाल से ऐसा अमल करें जिससे भगवान हम सबकी जल्दी से जल्दी शुभ कामना पूरी करावें। और पंचायत मोठ हिन्दू मुसलमानों की मुझे अपना धर्म पुत्र और सच्चा सेवक समझें। आज कल हम सब दुःखी क्यों हैं? अव्वल तो भगवान के पदार्थों को प्राप्त करने व भोगने का पूर्ण ज्ञान नहीं, बल नहीं, तरीका नहीं, अगर कुछ है भी तो हम सब अपने धर्म की कमी व नासमझी व खुदगर्ज़ी से किसी समझदार आदमी के बताये हुए रास्ते पर चलने में पूर्ण एक दिल होकर पुरुषार्थ नहीं करते।

बस मेरे धर्म के पिताओ! तथा मेरी ज़िन्दगी चाहने वालो! आप सब मुझ दुःखिया, बिस्तरे मर्ग पर लेटे हुए की हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि जो कुछ मेरे गुरु श्रीमान् पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज कहें उस पर यथा शक्ति चलें। ताकि हम सब दुःखी प्राणियों के लिये

सुख तथा शान्ति से ज़िन्दगी बसर करने का रास्ता भगवान की कृपा से निकल आवे।

२—मेरे पास आने वाले, इस चौपाल में कहने सुनने वाले, ग्राम मोठ में जाकर पुरुषार्थ करने वाले, ऐसे शब्द कहें कि जिसको सुनकर सब मुसलमान भाई आप सबको अपना भाई व इज्जत का साथी समझें और आपके ज़रिये मुझे सच्चा सेवक समझें।

वे भाई ख़ाह मुझको कुछ कहें आप सब उनको अपना भाई समझ कर बरदाश्त करें और हाथ जोड़कर यह कहें कि भाई और कहले, जूता मारले, सिर उतारले आप बड़े भाई हैं हम छोटे हैं। हमको तथा आपको इस जगह पर न मालूम कितने दिन तक बसना है, भाई! समय की बात होती है, कभी आप कहें हम सुनें, कभी हम कहें आप सुनें। बसे घरों में न मालूम किस समय ऐसी नागहानी आफ़त पड़जावे कि आप साहबान की मदद से हमारी मुसीबत टले और और कभी हमारी मदद से आपकी मुसीबत टले। अब तो भगवान के वास्ते अपने सच्चे सेवक के प्राण बचावें। अगर वह इस ही हालत में मरगया तो हम सबके चेहरों से यह कलंक का दाग नहीं उतरेगा। और न मालूम आगे इसके क्या २

नतीजे पैदा होंगे ।

यह हमारा बुलाया नहीं, तुम्हारा बुलाया नहीं, पता नहीं भगवान को यही मंजूर हो कि हमारे तुम्हारे दरम्यान कुछ ना समझ खुदगर्ज आदमियों की कृपा से कुछ दिनों से बाहमी रंजिश व मन मुटाव है उसको दूर करने का समय आगया है । भाई हम सबका रोटी खाना हराम हो रहा है । चौपाल में देखा नहीं जाता, किसी तरह से रहम करो, हमारी सारी गलतियों को मुआफ़ करके अपने इस प्यारे बेटे के प्राण बचाओ, भाई ! आपके हाथ इसकी ज़िन्दगी है ।

३—मोठ में जाने वाले भाई लाठी वगैरह बिल्कुल न ले जावें तथा वर्ष से बड़ी उम्र के जावें, क्रोधी स्वभाव के हर्गिज़ न जावें, छोटे बालक न जावें और भूख को बर-दाश्त करने वाले जावें । श्रीमान् पूज्य स्वामी जी महाराज की आज्ञा लेकर और अपने कहने वाले वचन बतलाकर सभा में बोलें । जब स्वामी जी महाराज बोलने से रोकें उसी समय चुप हो जावें । इस तरीके से आप मुझे बचा सकते हैं दूसरा कोई उपाय मुझे नज़र नहीं आया है ।

अगर आप अपनी कमज़ोरी और अपनी ना समझी से ऐसा न कर सकेंगे, या इसके बरखिलाफ़ अपनी ताकत

के आधार पर जोश भरे शब्द कहदेंगे, या कोई लड़ाई झगड़ा पैदा करने वाले शब्द कह दोगे तो आप अपनी ना समझी से मुझे खुद ही अपने हाथों से मारदोगे, बस मुझे अपना पुत्र समझ कर बचावें, मेरी लिखी हुई शुभ कामनायें पूरी करायें।

सब बूढ़े मेरे धर्म के पिता भगवान की कृपा से मुझ को अपना पुत्र और सेवक समझ कर पूर्ण विश्वास करें। आपकी मेहनत निष्फल नहीं जावेगी और आगे के लिये सुख शान्ति से ज़िन्दगी बसर होने की ज़रूर शकल पैदा हो जावेगी। आप मेरी ज़िन्दगी से न घबरावें भगवान को मेरी तुच्छ जिन्दगी से दुःखी आत्माओं की सेवा करानी अभी और मंजूर है। भगवान पर विश्वास करें और अपने दिलों को शान्ति देकर पुरुषार्थ करें।

आपका दुःखिया पुत्र

फूल सिंह

॥ ओ३म् ॥

"गुरुकुल में अध्यापकों के नाम पत्र"

११ सितम्बर सन् १९४०
समय १० प्रातः

आज प्रातः भगवान की दया से जो मन में तरंग आई वह नीचे दर्ज है।

१—श्रीमान् प्यारे पुत्रो! हरिश्चन्द्र जी, विष्णु मित्र जी, धर्मभानु जी, महामुनि जी, धर्मदत्त जी, सत्यप्रिय जी, मुंशी प्रभुदयाल जी, कविराज योगेन्द्र सिंह जी! अपने हृदय के दुःखों को दूर कराने के लिये पटवार में अनेक जुल्मों को देखकर सहकर और सुनकर गुरुकुल के ज़रिये सच्चे धर्म सेवक व सच्चे ब्राह्मण व सच्चे साधु बनाने में अपनी आत्मा की शान्ति समझी थी। और अपने जैसी दुःखी आत्माओं के लिये जीने का महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के बताये हुए प्रोग्राम पर रास्ता नज़र आया था। चुनाचे इस विश्वास पर मैंने भगवान की कृपा से यथा शक्ति इस प्रान्त में कार्य किया। मगर मैं अपनी कमी में इस जन्म में अपनी आखों ऐसा नहीं देख सका। बल्कि पटवार के समय से भी ज्यादह जुल्म अपनी आखों कानों देख व सुन रहा हूँ।

और अपने साथ बमय चौ० मनसाराम जी मौज़ा मोठ तहसील हांसी जि० हिसार में सात सितम्बर सन् १९४० की रात ग्यारह बजे मुसलमान रांघड़ों से देख

चुका हूँ। अब अपने से भी ज्यादह बेगुना तड़पते हुए मनुष्य व पशु पत्ती वगैरह की तड़प को मिटाने की गर्ज से अपना हक समझ कर आखिरी प्रार्थना करता हूँ कि आप सब अपने प्यारे गुरुकुल में सेवा करते २ ऐसे धर्मात्मा भगवान सेवक आर्य समाज के छठे नियम को पूरा करने वाले बनावें जिससे आप सबकी जिन्दगी सफल हो और मुझे अगले जन्म में कुछ सुख शान्ति के आसार नज़र में आवें और भगवान से प्रार्थना है कि अगला जन्म मुझे मौज़ा मोठ के कसाई व चमार के घर देवें। उनके दिल में ऐसा धर्मभाव पैदा करें कि आपके प्यारे गुरुकुल भैंसवाल कलां में सच्चा ब्रह्मचारी व धर्मात्मा बलवान बनवाने की खातिर दाखिल करें ताकि अपनी प्रेम की शक्ति से अपने ना समझ हिन्दू मुसलमान भाइयों के दिलों में गौमाताओं के गुण व हरिजनों (चूहड़े चमार धानक) के पानी वगैरह के घोर दुःख को दरसा सकूं। और आप सबकी मदद से गौरक्षा करासकूं और हरिजनों के पानी वगैरह कष्ट को दूर करा सकूं।

आपका शुभ चिन्तक और आप सब पर
पूर्ण आशा रखने वाला
फूलसिंह सेवक
गुरुकुल भैंसवाल

ओ३म्

"श्री पं. अभिमन्यु जी तथा श्री बहिन सुभाषिणी के नाम लिखा हुआ पत्र"

११ सितम्बर १९४०
१० बजे प्रातः

श्रीमान् प्यारे पुत्र अभिमन्यु जी ! व प्यारी पुत्री सुभाषिणी जी मेरी नीचे लिखी हुई बातों को पूरा कराने में आप अपना व सारे देश का पूर्ण कल्याण समझ कर लगा रहने में मेरी आत्मा की शान्ति समझें।

प्यारी पुत्री ! गुणवती, गार्गी, विद्या कुन्ती को सारी उमर ब्रह्मचारिणी रहने में और मेरे भावों को पूरा कराने में और उनकी जिन्दगी को वैसा बनाने में मेरी आत्मा की सच्ची शान्ति समझें। या इनमें ऐसी गुन्जायश न हो तो कम से कम प्यारी धर्म की पुत्री अवश्य बनावें ! बाकी लड़कियों को सच्ची माता बनने के योग्य बनावें। भगवान दयानन्द जी महाराज का पूर्ण प्रोग्राम लड़कियों से ही पूरा होगा। आप अपनी ज़रूरीयात में किसी से पैसे की चाह न करें। ऐसी कोई दस्तकारी खुद करें।

अगर किसी कारण से ऐसा न कर सकें तो अपनी ज़रूरीयात पांच रुपये में पूरी करें। और कपड़े फटने पर भगवान आपको किसी न किसी धर्म पिता से ज़रूर ढकावेंगे।

नंगा हर्गिज न रहने देवेंगे। प्यारी पुत्री कमलो अपनी जिन्दगी के पीछे काम संभाल लेने के योग्य ऐसी ही बनावें।

मेरे क़र्जे को मेरे धर्म प्रेमियों से उतरवाने में मेरी शान्ति है। मैं आपके सामने कुछ सुझाव रखता हूँ जो कि आपके लिये फायदे मन्द होंगे।

१–देश में नरनारी धर्मात्मा कैसे हों। और ज़ुल्म होना किस प्रकार बन्द हो।

२–जब तक सच्चे त्यागी, पूर्ण पुरुषार्थी, और दुःखी दिलों के लिये जननी समान हृदयवाले, धर्म सेवक पंच, ब्राह्मण व साधु पैदा न होंगे तब तक कल्याण न होगा।

३–जब तक भैंसों के दूध घी से नफ़रत न होगी। बल्कि भैंसों के घी दूध में अपने खान्दान का हर प्रकार से नाश न समझेंगे। क्योंकि भैंस के घी दूध में वैरभाव बीमारी, आलस्य, कठोरता, ज़र्रे ज़र्रे में समाई हुई है।

४–जब तक मातायें वैदिक धर्म की शिक्षा के अनुकूल

धमवती न होंगी और लड़कियों के पैदा होने में लड़कों जैसी ही खुशी न मनायेंगे ।

५—जब तक गायों की रक्षा और सेवा में और घी दूध में अपना पूर्ण कल्याण न समझेंगे । और घर में गोधन को ही सबसे बड़ा धन न समझेंगे ।

६—जब तक आर्य समाज के दस असूलों के अनुकूल अपने जीवन का प्रोग्राम बनाकर न चलोगे ।

आपका कल्याण चाहने वाला
फूलसिंह सेवक

॥ ओ३म् ॥

"D. C. हिसार की सेवा में लिखा पत्र"

१९ सितम्बर
समय २ बजे रात्रि

श्रीमान् सम्मान योग्य डिप्टी कमिश्नर साहब !

जि० हिसार सादर नमस्ते ।

मैं आपके जि० हिसार व मुकाम नारनौंद की बड़ी चौपाल में पाना मेलन वाली में सात सितम्बर सन् १९४० से भूखा पड़ा हुआ हूं । सिवाय दो समय पानी के दूसरी

वस्तु कुछ नहीं खाता इसका कारण नीचे लिखता हूँ।

आपको मालूम रहे कि ग्राम मोठ थाना नारनौंद तहसील हांसी जि० हिसार में अरसा चार माह का हुआ। चमारान देह ने श्रीमान् सेठ सर चौ० छाजूराम जी के कारिन्दों की इजाज़त से अपनी हद से ज्यादह ज़रूरत में कूंआ खोदा जो कि भगवान की दया से मिठा निकल आया फिर नीम चक डालकर बनाना शुरु कर दिया।

इसमें चन्द जाट अपनी ख़ानगी वजूहात से श्रीमान् सेठ जी महाराज के कारिन्दों की नाराज़गी में चमारों के कूंआ बनने में सख्त नाराज़ होगये। और अपने दिल की शान्ति इसी में समझी कि कूंए को हर्गिज़ न बनने देवें।

चुनाचे उन्होंने अपनी ज़ुल्म भरी ज़िद को पूरा करने की ख़ातिर मुसलमान रांघड़ों से कूंए को न बनने देने के लिये कहा। इस पर कुल मुसलमान रांघड़ों ने और कुछ जाटों ने अपनी खुदगर्ज़ी व ना समझी व घमंड में उन बेचारों के बनते हुए कूंए को रोक दिया और नीम चक कूंए से बाहिर निकाल कर फेंक दिया। और सामान ईंट चूना वगैरह भी इधर उधर डाल दिया। यह चमार बेचारे इस नागहानी ज़ुल्म को देख कर थाने में

गए वहां पर सुनाई न होने पर आपकी दूसरी बड़ी अदालत में गये। गरज़ जहां से अपना कूंआ बनने की आशा दिखाई दी उसी जगह पर गये। और चन्द अफसरान व पब्लिक की सेवा करने वाले कूंआ बनवाने की गरज से वहां मौके पर गये मगर मुसलमान रांघड़ों व कुछ जाटों ने अपनी खुदगर्ज़ी व ना समझी से कूंए को नहीं बनने दिया। यह खबर मैंने भी श्रीमान् पूज्य गुरु स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज व श्रीमान् सेठ जुगकिशोर बिड़ला जी महाराज की ज़बानी देहली में सुनी। जिसको सुनकर मैंने निश्चय किया कि भगवान मुझे बल देवें कि मैं मौके पर पहुँच कर अपने हरिजन भाइयों के जखम को भरने की कोशिश करूं लेकिन अपने प्रोग्रामों के आधार पर मोरखा पहली सितम्बर की शाम को बमय श्रीमान् चौ० सोहबत जी रिवाड़ा निवासी व चौ० राजमल जी ईक्कस निवासी ग्राम मोठ में पहुँचा। ईत्तफ़ाक से मेरे पहुँचने से पहिले ग्राम मोठ में आपस में फ़िसाद होगया था। जिसके कारण मैं पचायत नहीं कर सका। अलबत्ता अलग २ मुसलमान रांघड़ों व जाटों से कूंआ बनवाने के बारे में कहता सुनता रहा। कोई शकल इस तरह से कूंए की बनती न देखकर पांच सितम्बर को दस बजे दिन के

बिचली चौपाल में कुल ग्राम की पंचायत करली और अपनी दर्द भरी कहानी सुनाकर कूंआ बनवाने की प्रार्थना की और दरशाया कि इन बेचारे गरीबों के कूंए को न बनने देने में आप साहिबान की कोई शान व मर्दानगी नहीं है बल्कि आपके ग्राम के कुल मस्तक पर कलंक का टीका है और भगवान के सामने महापाप है। गरज़ बहुत देर तक समझाया। मगर उन्होंने अपनी ताकत के घमण्ड में न मेरी प्रार्थना पर ध्यान दिया और न ही गरीब चमारों की हालत पर तरस खाया। ऐसी हालत देखकर मैं इस नागहानी जुल्म को बरदाश्त नहीं करसका और भगवान भरोसे पर दृढ़ प्रतिज्ञा करली कि अब कूंआ ही बनने पर रोटी खाऊंगा।

श्रीमान् जी ! अब आप ही सोचें कि मेरे पास इसके सिवाय कौनसा ज़रिया ऐसा था कि जिसके ज़रिये कूंआ बनवा सकूं। आखिर इस बात के आधार पर ही मैं और श्रीमान् चौ० मनसाराम जी बहवलपुर निवासी बिचली चौपाल ग्राम मोठ में सात सितम्बर की रात के दस बजे तक बैठे रहे।

इस पर सात सितम्बर सन् १९४० की शाम को कुल ग्राम की पंचायत बिचली चौपाल में जमा हुई और

चमारों को खौफ़ दिखाकर कहलवाया कि हमें पानी की कोई ज़रूरत नहीं है। अब कूंए की कोई ज़रूरत नहीं है आप भोजन कर लेवें। यह बात सुन कर मेरे दिल पर बहुत बड़ा सदमा पहुँचा। क्योंकि मैं अपनी आखों यह देख चुका था कि जिस जगह कूंए के पारछे के मोरियों में से वह पानी भरते हैं मैं उस पानी से हर्गिज़ स्नान नहीं कर सकता था और ये बेचारे मेरे व्रत को ही देखकर ऐसा कहते हैं कि अब पानी के लिये कूंए की ज़रूरत ही नहीं रही। ये केवल मारे खौफ़ के कहते हैं। मैंने इस पर खूब सोचा व देखा। अन्दर से यही आवाज़ आई कि ए फूलसिंह! कि जैसे बिल्ली के खौफ़ से चूहा बिल पर भूखा मर जावे, सड़ जावे मगर सामने अपनी खुराक देखता हुआ बिल से बाहिर बिल्ली की मौजूदगी में हर्गिज नहीं निकल सकता यही हालत इन चमारों की है। बस इस हालत को देखकर मैंने बिचली चौपाल में पड़े रहना ही अपनी आत्मा की शान्ति समझी और पूर्ण विश्वास कर लिया कि मेरे धर्म के पिता मुसलमान रांघड़ अपने बल से कूंए के बनने को रोक सकते हैं और नीम चक्र बाहिर फेंक सकते हैं वहां पर अपने बल से बनवा भी सकते हैं। इस वास्ते जब मैं पुत्र बनकर और सच्चा सेवक बन

उनकी शरण में पड़ा हुआ हूँ तो मेरे धर्म पिता मेरी हालत पर तरस खाकर ज़रूर अपनी गलती समझेंगे और कूंआ बनवाने की इज़ाज़त देंगे। इसके बरअक्स मेरी बदकिस्मती से मेरे धर्म पिताओं ने अपने नौजवान पुत्रों को हुक्म दिया कि इसको चौपाल से नीचे उतार दो और ग्राम से दूर छोड़ आओ।

इसके सुनते ही मेरे नौजवान भाइयों ने मेरे साथ रात के ग्यारह बजे तक जो सलूक किया उसको मैं बताना नहीं चाहता और नहीं उसका मुझे कुछ रंज है। लेकिन इस नज़ारे को देखकर मैंने अपना न जीना फ़र्ज व धर्म समझकर जहां आज संसारमें चारों तरफ़ से पूर्ण आज़ादी की इच्छा पूरा करने के लिये करोड़ों मनुष्यों व दूसरे प्राणियों का खून बहाया जा रहा है। वहां पर इस मौजूदह तरक्की के ज़माने में उन करोड़ों हरिजन भाइयों को मन चाहा पानी भी नहीं मिलता इससे तो मरजाना ही बेहतर है। यह जुल्म केवल ग्राम मोठ में ही नहीं देख रहा हूं बल्कि सन् १६०७ से अपनी कमजोरी व ना समझी व धर्म की कमी से देखता तथा सुनता आ रहा हूँ।

लेकिन सात सितम्बर की रात के ग्यारह बजे भगवान का ऐसा प्रकाश आत्मा पर आया जिससे पूर्ण विश्वास हो गया कि ऐसे २ हज़ारों साल के होते हुए

जुल्म बगैर जान की बाज़ी लगाये किसी तरह भी दूर नहीं हो सकते ।" रे पापी फूलसिंह ! अपनी उम्र में बहुत से काम करलिये और दूसरे प्रकार के दुःखियाओं की सेवा करली । लेकिन आज की रात के सिवाय तूने भी तो कभी अपने हरिजन भाइयों की प्यास को नहीं समझा था । खैर अब जान की बाज़ी लगाकर भगवान के पुत्रों व राजा व प्रजा के सच्चे सेवकों को मन चाहा पानी दिला दो । इस वास्ते मैं अपनी शुभ कामना पूरी करने की गरज से चौपाल पाना मेलन ग्राम नारनौंद में बिस्तरे मर्ग पर लेटा हुआ आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आपको भगवान ने बड़ी शक्ति दी है, बुद्धि दी है । आप अपनी जिम्मेवारी को समझ कर अपने तजुर्बे व पानी से अपनी रोज़ाना ज़रूरीयात पूरी होते देखकर यह ज़रूर महसूस करेंगे कि वास्तव में बेचारे हरिजनों पर हद से ज्यादह जुल्म हो रहा है और उसका मिटाना हम सब के लिये पाप से बचने की खातिर निहायत जरूरी फ़र्ज व परम धर्म है । मैं दिल से तो यही चाहता था कि ग्राम मोठ की पंचायत अपने कलक व हरिजनों की प्यास को खुद समझे ।

मगर ऐसा न होने पर मैं इस प्रान्त व रोहतक ज़िले के बारसूख हिन्दू मुसलमान बुज़ुर्गों की मदद से अपने

धर्म पिता मुसलमान रांघड़ों को अच्छी तरह समझा चुका हूं। अब तक मेरे प्राण बचाने का उनको कोई रहम नहीं आया अब २० सितम्बर को ग्राम मोठ में बाद दोपहर इसी गिरदोनवाह की पंचायत है जिसमें मेरे प्राण बचाने की खातिर हरिजनों को कूंआ बनाने की आज्ञा दिलाने की कोशिश करेंगे। मुझे अन्देशा है कि २० सितम्बर को बद किस्मती से प्रेम पूर्वक पंचायती तरीके से न बने।

इस वास्ते आपसे प्रार्थना है कि कृपा मुझे अपना पुत्र और सच्चा सेवक समझ कर मेरे प्राण बचाने की खातिर आप यहीं ग्राम मोठ की पंचायत में ज़रूर शरीक हों और अपने रसूख से चमारों को कूंआ बनवाने की गांव से इज़ाज़त दिलवावें।

मैंने कूंए को बना हुआ देखकर और चमारों को पानी भरता देखकर बिचली चौपाल मोठ वाली में भोजन करने का व्रत किया है। मुझे आपकी दयालुता व जिम्मेवारी पर पूर्ण विश्वास है कि भगवान की कृपा से आप ज़रूर कामयाब होंगे। और इस पचायत के फैसले से सारे आस पास में शान्ति की लहर फैलेगी। और इस प्रान्त के हिन्दू मुसलमान भाई एक दूसरे के सुख दुःख में शामिल रह कर बुराईयों को करते हुए ज़रूर खौफ़ खायेंगे और इस प्रान्त के हरिजन भाई आपका गुण गायेंगे।

और मैं आपके पुरुषार्थ से बचकर जो आगे सेवा करूंगा उसका भगवान आपको फल देवेंगे। अगर आप मेरे दुर्भाग्यवश ज़रूरी काम की वजह से खुद न आसकें आप कृपा कर श्रीमान् पुलिस कप्तान या किसी जिम्मेवार अफसर को जरूर व ज़रूर ग्राम मोठ में भेजें ताकि पंचायती कार्यवाही द्वारा मेरी शुभ कामना पूरी हो।

आपका सच्चा सेवक—

फूलसिंह वान प्रस्थी

॥ ओ३म् ॥

"उपवास रोकने के लिये सेठ छाजूराम के दो तार प्राप्त होने पर उनकी सेवा में भक्त जी के उपवास समाप्ति पर पत्र"

नारनौंद
१५-६-४०

श्रीमान् सम्मान के योग्य पूज्य सेठ सर छाजूराम जी

सादर नमस्ते।

सेवा में निवेदन है कि आपके दो तार मिले जिनको पढ़कर मेरे दिल को तथा पंचों को बड़ी खुशी हुई। आप

का तार मिलने के समय कूंए की हालत बहुत कुछ आशा जनक हो चुकी थी। और फिर तार मिलने से दूसरे ही दिन कूंआ बनना आरम्भ हो गया। इस कारण आप को आपके तार के अनुसार कष्ट देना पंचों ने उचित नहीं समझा।

मुझे ऐसा सुनने में आया है कि बहुत से भाई इस कूंए के पूरे २ इतिहास से नावाकिफ होने के कारण यह अफ़वाह उड़ा रहे हैं कि कूंए का प्रश्न श्रीपूज्य सेठ छाजूराम जी को परेशान करने के उद्देश्य से उठाया गया है। और शायद आप भी मुझसे इस कूंआ आन्दोलन से अप्रसन्न हों। इस लिये मैं आप से वास्तविक इस आन्दोलन का कारण बतादूं और वह यह है कि मुझे अगस्त १९४० में कई स्थानों पर सुनने में आया कि गांव मोठ जिला हिसार तहसील हांसी में जाटों की आपस की फूट से एक पार्टी जाटों की और सब मुसलमान रांघड़ों ने मिलकर चमारों का कूंआ बनवाना रोक दिया। चमारों से परसन्ना वाली जाट पार्टी ने कूंआ खुदवाया था। परन्तु जाटों की दूसरी पार्टी तथा रांघड़ों ने मिल कर खुदा हुआ कूंआ बनने से रोकदिया और नीमचक भी बाहिर निकाल कर फेंक दिया। चमारों ने कूंआ बनाने के वास्ते बहुत प्रयत्न किये, अदालत का

दरवाजा खटखटाया, हरिजनों की सहायक दूसरी संस्थाओं से भी अपना कष्ट सुनाया। परन्तु चमारों का कूंआ बनवाने में मोठ गांव सहमत न हुआ। जब यह वृत्तान्त मुझे मालूम हुआ तो मैंने सोचा कि मुझे भी गांव मोठ की पंचायत से इन गरीबों पर दया लाने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये। उन्हें अपनी शुभ सम्मति देकर उनके माथे यह कलंक का टीका लगने से बचाना चाहिये।

इसी विचार को लेकर मैं मोठ गांव में १-९-४० को पहुंचा। कई दिन तक उनसे कूंआ खोदने देने की प्रार्थना करता रहा, कई बार गांव की पंचायत इकट्ठी हुई। परन्तु हरबार कूंआ बनने देने से इन्कार कर दिया, यहां तक कि ७-९-४० को मेरे भाई रांघड़ों ने मुझे अपनी कम समझी से रात के ग्यारह बजे के करीब मेरे साथ निर्दयता का बर्ताव करते हुए गांव से बहुत दूर गांवों में लाकर छोड़ दिया। मुझे इन भाइयों के इस व्यवहार का तनिक भी रंज नहीं था और न हुआ और न है और न होगा। उपरोक्त लेख का सारांश यह है कि मैंने १-९-४० से ७-९-४० तक वहां रहने से यह अनुभव किया कि यहां मेरे रांघड़ भाई दूसरे निर्बल भाइयों के दुःखको अनुभव नहीं कर रहे हैं। इनकी इस निर्दयवृत्ति के कारण इन्होंने आस पास के गांवों की पंचायतों को भी नाराज़ किया हुआ है।

जिससे मोठ गांव के समीप के गांव इनसे दुःखी हैं। इस लिये भाई चारे के आधार पर गांघड़ भाई मेरी कूंए वाली बात स्वीकार नहीं कर सकते हैं। इस वास्ते मुझे इनके विरुद्ध भूख हड़ताल करनी पड़ी।

मुझे पहिले आशा थी कि गांव मोठ की पंचायत अपने नजदीकी गांवों की पंचायती प्रार्थना को नहीं ठुकरायेगी। इस लिये मैं कूंए का प्रश्न लेकर यहां आया था और इसी आशा में आपको इस विषय में जमीन लेने का कष्ट देना उचित न समझा जब मेरी यह आशा पूरी न हुई तो फिर यदि आपकी जमीन लेकर मोठ गांव में कूंआ बनवा देते तो दूसरे बनने का प्रश्न हल नहीं होता था।

मेरे दिल में बहुत दिनों से हरिजनों को गांवों में मनचाहा पानी न मिलने के कारण बहुत दुःख बना हुआ था। मैंने यह व्रत केवल मोठ गांव वास्ते ही नहीं किया है वरन् मेरा यह व्रत इस प्रान्त के हरिजनों के कूंओं की रुकावट दूर करने के वास्ते था। जिसका पता आपको यह दूसरा पत्र पढ़ने से चलेगा। इस लिये आप मुझ से अप्रसन्न न होना वरन् अपना आशीर्वाद देना कि मैं हरियाणा प्रान्त में हरिजनों के कूंओं के प्रश्न को पूर्ण करने

में सफल हो सकूं । आपने मेरे कष्ट को दूर करने के वास्ते जो तार भेजे उनके लिये हृदय से धन्यवाद करता हूं । देश के प्रसिद्ध २ सज्जनों के प्रयत्न से मोठ में २३-६-४० को कूआ बन गया था । इस लिये मैंने १६ दिन के बाद २३-६-४० को यह पहिला व्रत भंग कर दिया है । ईश्वर कृपा से इस कष्ट मय समय में कोई रोग नहीं हुआ और शीघ्र ही काम करने योग्य बल शरीर में आ जावेगा ।

आपके आशीर्वाद का अभिलाषी

फूल सिंह वान प्रस्थी

॥ ओ३म् ॥

हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री वियोगी हरि जी की सेवा में लिखित भक्त जी का पत्र

श्रीमान् सम्मान के योग्य श्री वियोगी हरि जी !

सादर नमस्ते ।

सेवामें निवेदन है कि श्रीमान् मान्यवर स्वामी ब्रह्मा-

नन्द जी महाराज के नाम आपने महाशय रणवीर सिंह जी के द्वारा पत्र में उन तारों की नकल भेजी जो आपने तथा पूज्य बापू (महात्मा गांधी) जी ने भिन्न २ स्थानों पर मेरे प्राण रक्षा के यत्न स्वरूप भेजे थे।

इन तारों द्वारा यत्न करने के अतिरिक्त आपने मेरे प्राण रक्षार्थ समाचार पत्रों में भी जो वक्तव्य भेज कर प्रोपेगण्डा किया है। वे भी मेरी दृष्टि के सामने गुजरे हैं। आपने यह जो मेरी प्राण रक्षार्थ कार्य किया है मैं इसे जन्म भर नहीं भूल सकता हूं। और मेरे पास शब्द नहीं जिनके द्वारा आपका धन्यवाद कर सकूं। भगवान ही आपको इस पवित्र कार्य का फल देंगे।

मुझे शोक है कि जिस समय आप नारनौंद में मेरे पास आये तब मैंने अपने इस अनशन सम्बन्धी दूसरे भाग का ज़िक्र नहीं किया। इस अनशन के दो भाग थे जिनकी नकल मैं दूसरे पत्र में साथ ही भेज रहा हूँ इसे आप पढ़ लेवें।

दूसरे पत्र में लिखित यह निश्चय है कि "अवसर पड़ने पर फिर अनशन आरम्भ करदूंगा" इस लिये किया था कि क्यों कि इसी एक मोठ ग्राम के हरिजनों के कूंए से तमाम हरियाणा प्रान्त के हरिजनों के

कूंए का कष्ट दूर नहीं हो सकता। और इस हरियाणा प्रान्त में हरिजनों को पानी के बिना जो जो कष्ट मिलते थे उन्हें मैं अपने ३५ वर्ष के अनुभव से जानता हूं। मुझे अब कुछ समय से असह्य होने लगे हैं क्योंकि इस प्रांत में हरिजनों के कूंओं के लिये स्थान २ पर रुकावटें उपस्थित होती हैं जैसे ज़िला हिसार। इस कूंए की भांति कई कूंए बनने बन्द करदिये थे जो अभी तक नहीं बने हैं ऐसी रुकावटों को दूर करने के लिये वार २ अनशन करना उचित नहीं समझा। इस लिये मैंने यह दूसरा निश्चय किया था। क्योंकि इस प्रान्त में हरिजन कूंए बनने की रुकावटें कानून के बनने से ही दूर सदा के लिये हो सकती हैं। और इससे भिन्न दूसरा सुगम उपाय मुझे नहीं सूझ पड़ा। इस लिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ जिस भांति आपने मेरे इस अनशन के समय प्रशंसनीय यत्न किया है। इसी भांति आप अपने प्रयत्न को बराबर जारी रखकर ऐसा वायु मण्डल तैयार करें तथा ऐसे साधन प्रयोग में लावें जिससे मुझे फिर अनशन करने का अवसर ही न मिले और पंजाब गवर्नमेंट शीघ्र ही इस कानून को तैयार करके हरिजन भाइयों का कष्ट दूर कर देवे।

मेरे विचार में बापू जी यदि इस विषय में प्रयत्न

करने का कष्ट उठावें तो यह कार्य और भी शीघ्र हो सकता है। इस लिये कृपा कर आप पूज्य बापू जी को भी मेरे इस आगामी सूचना दे देवें। मेरे योग्य सेवा लिखें। पत्रोत्तर शीघ्र देने की कृपा करें।

आपका सेवक—

फूलसिंह वान प्रस्थी

॥ ओ३म् ॥

व्रत समाप्ति पर जनता की सेवा में लिखित पत्र

२५ सितम्बर सन् १९४०

समय साय चार बजे

धर्म के प्रेमियो! आपको मालूम हो कि भगवान की अपार कृपा से अनशन व्रत २३-९-४० को समाप्त हो गया। इन १९ दिनों के व्रत से मेरा शरीर तो बेशक बहुत कमजोर हो गया है लेकिन रोग कोई नहीं हुआ। उम्मीद है अनुकूल भोजन से शरीर शीघ्र काम करने योग्य हो जावेगा। आप चिन्ता बिल्कुल न करें। यह कूंआ तैयार होगया अब केवल कोठी गालना बाकी है। कूंआ २३-९-४० को तैयार हुआ था। मैंने उसी दिन

सन्तरे का रस पीकर अपना व्रत समाप्त कर दिया था। जिसके कारण बहुत सज्जनों को जो तकलीफ़ पहुँच रही थी वह दूर होगई। यह आप जैसे सज्जनों की मेरे सुख की कामना का फल है जो यह व्रत निर्विघ्न समाप्त हो गया। गो यह काम पूरा हो गया और इसे सुनकर आप जैसे मेरे हितैषी खुश होंगे। लेकिन मेरे दिल में उस दिन का दुःख बराबर बना हुआ है जिस दिन आप मेरे पास से निराश लौटे और मैं आप लोगों की बात स्वीकार न कर सका। मेरे दिल से यह दुःख तभी दूर होगा जब आप मेरे इस अपराध को क्षमा करदेंगे। मेरे पास से जब आप सज्जन मेरे प्राण बचाने तथा भूख के कष्ट से छुड़ाने की इच्छा में निराश लौटे तो मैं भी आपकी जुदाई के बाद रात भर चारपाई में बेचैन करवटें बदलता रहा। और सोचता रहा कि ऐ पापी फूलसिंह ! तेरे कारण कैसे२ सुखी मनुष्य अपने आराम तथा अमूल्य समय को छोड़ कर दुःख की जगह धूल फांकते फिरते हैं और तू फिर भी शुभ आकांक्षा को पूरी नहीं कर रहा है। ऐसे हितैषियों को कष्ट देने से भगवान की अदालत में तेरी क्या गति होगी।

प्यारे भाइयो ! मैं उस समय लाचार था। एक तरफ़ मेरी प्रतिज्ञा थी दूसरी ओर आप लोगों की मेरे

लिये शुभ कामना। ये दोनों रास्ते मेरे लिये उस समय यही प्रश्न पैदा कर रहे थे जो अर्जुन के सामने दो रास्ते मेरे लिये उस समय यही प्रश्न पैदा कर रहे थे कि आया अपने पूज्य गुरुओं आचार्यों सम्बन्धियों का हनन करूं या युद्ध से मुखमोड़ कर भाग जाऊं। ऐसे दो विरुद्ध प्रश्न इसी प्रकार के उलझन के समय सदा खड़े हुआ करते हैं कि कौनसा रास्ता ग्रहण करूं आप यह न समझ लेना कि मैं आप लोगों की बात आसानी से अस्वीकार कर रहा था बल्कि उस समय आप की नेक सलाह के हिमालय जैसे बोझ के नीचे दबा हुआ था। वह बोझ अब भी हलका नहीं हुआ है जब तक आप मुझे अपने सच्चे दिल से अपना सच्चा सेवक न समझलें।

भाइयो! उस समय मैं सर्वथा लाचार था क्योंकि सात सितम्बर १९४० की रात के ग्यारह बजे जब मुझे यह दिखाई दिया कि पता नहीं इन लोगों (मुसलमान रांघड़ों) से आज जान बचे या न बचे। तब मैंने यह व्रत किया था कि यदि आज भगवान ने जान बचा दी तो यह जीवन हरिजनों के कूंए बनवाने में लगादूंगा।

यह प्रतिज्ञा मुझे उस समय अपने जीवन से भी प्यारी लग रही थी इस कारण मैं अपनी प्रतिज्ञा को भंग करने में समर्थ न था। आप लोगों की इच्छा पूर्ण करने

का विचार दिल में होते हुए भी मैं प्रतिज्ञा भंग क्यों न कर सका इस भेद को भगवान ही जानें। बस अधिक न लिखता हुआ उस समय आपको जो कष्ट पहुँचा था उसे क्षमा करें।

आपका सेवक—
फूलसिंह वान प्रस्थी

॥ ओ३म् ॥

व्रत समाप्ति पर दूसरा लिखित पत्र

१७-३-५०

१—मेरे प्राण बचाकर ज़िन्दगी देने वाले साहिबान! मेरे धर्म के पिता ग्राम मोठ के हिन्दू मुसलमान व ख़ास कर मुसलमान राजपूतों ने अपना पुत्र व सच्चा सेवक समझ कर मेरी शुभ कामना पूरी करके मुझे आगे सेवा करने का जो अवसर दिया है। उसके लिये हृदय से धन्यवाद देता हूँ। और जो कष्ट मुझ अजनबी से आप साहिबान को पहुँचा है उसको दिल से भुला कर क्षमा करेंगे और अपने सच्चे पुत्रों व सेवकों(चमारों)की तरह का रंज भी मेरी ख़ातिर और ख़ुदा के वास्ते दिल से भुलाकर क्षमा करेंगे।

२—भगवान की महान कृपा और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पूर्ण तप श्री पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के आशीर्वाद, महाशय तुलसीराम जी महाजन मोठ, महाशय छोटूराम जी मुसलमान लुहार के इन्सानी प्रेम, पंचायत नारनौंद व उसके माजरे के पूर्ण पुरुषार्थ व भाई चारे की कोशिश, श्रीमान् सब इन्स्पैक्टर मुंशी विलायत अली खां साहिब थाना नारनौंद की रात दिन की कूंए पर खड़े होकर काम करने की मेहनत, श्रीमान् सर चौधरी छोटूराम वज़ीर पंजाब, श्रीमान् साहिब डिप्टी कमिश्नर बहादुर हिसार, श्रीमान् मोहत्तमीम साहिब बहादुर खजाना, चौधरी टीकाराम जी पार्लिमेंट्री सेक्रेटरी पंजाब गवर्नमेंट, श्रीमान् चौ० सुन्दर सिंह जी तहसीलदार हांसी, श्रीमान् चौ० सूरजमल जी साहिब एम. एल. ए. हिसार, श्रीमान् निवाज़ मोहम्मद खां बहादुर रईस हांसी, मुक़ामी अफ़सरान, अहलकारान की दिली हमदर्दी, जिला हिसार जिला रोहतक रियासत जींद, जि० करनाल के पंच साहिबान व हरिजनों को मन चाहा पानी न मिलने के सच्चे दुःख को समझने वाले धर्म प्रेमियों की दिली इच्छा, रात दिन की दौड़ धूप से ग्राम नारनौंद के पुरुषों तथा स्त्रियों की माता समान हृदय से की हुई सेवा, पटेवाड़ के पंचों की हृदय की तड़प, श्रीमान्

सेठ सूरजभान जी बांस निवासी धर्म सेवक के प्रबन्ध, हरिजन सेवा संघ देहली के मन्त्री श्री वियोगी हरि जी सम्पादक हरिजन सेवक देहली, श्री बाबा राघवानन्द जी गोरखपुर, गुरुकुल विद्यापीठ हरियाणा भैंसवाल जिला रोहतक के अध्यापकगण तथा ब्रह्मचारिगण, श्रीमान् चौ० गोपाल जी अलखपुरा, श्रीमान् चौ० छाजूराम जी सब जज देहली, चौ० प्रभुदयाल जी ए. डी. आई रोहतक, श्रीमान् कप्तान टोडर सिंह जी जसराना, चौ० श्रीचन्द जी वकील रोहतक,श्रीमान् चौ० शाफेअलीखां जी गोहाना श्रीमान् जान मोहम्मद खां प्रेजीडेन्ट म्युनिसिपल कमैटी रोहतक, श्रीमान् चौ० माडूसिंह जी वकील रोहतक श्रीमान् करमअली खां की हृदय की तड़प, श्रीमान् चौ० मनसा-रामजी बहवलपुर निवासी, श्रीमान् चौ० स्वरूपलाल जी खजाञ्ची गुरुकुल भैंसवाल की मन की मजबूती, श्रीमान् सेठ जुगलकिशोर जी तथा सेठ छाजूराम जी कलकत्ता की दिली चाह श्रीमान् दादा घासीराम जी की दौड़ धूप, श्रीमान् पं० समरसिंह वेदालंकार रोहतक, श्रीमान् चौ० छोटूराम जी एडिटर जाट गज़ट, चौ० कल्लू सिंह जी व फतहसिंह जी ठेकेदारान ने व्रत के सुनते ही नारनौंद में पहुँचने की कोशिश ने आज बिस्तरे मर्ग पर से उठाकर ग्राम मोठ में सात सितम्बर १६४० की रात को किए

हुए कठिन व्रत को पूरा करके जो मुझ दुखिया को शांति दी है और इस जन्म में दुबारा सेवा करने का अवसर दिया है इसके लिये सबको हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

३—ग्राम मोठ के चमार भाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि वे अपने गांव के चूहड़ों तथा धानकों को नफरत की निगाह से न देखें और उन्हें अपनी बिरादरी के पास करा कर इस कूए पर पानी भरने की स्वीकृति दें।

४—हरियाणा प्रान्त के हिन्दू मुसलमान साहिबान से मेरी प्रार्थना है कि हरिजनों के वास्ते मनचाहा पानी मिलने की पूरी २ आज़ादी दें।

५—इस धर्म यज्ञ में शामिल होने वाले सभी बिरादरी के महानुभावों की सेवा में हाथ जोड़कर नमस्ते।

फूलसिंह

सेवक गुरुकुल २३-६-४०



भक्त जी के कुछ मन्तव्य तथा उनका विश्वास

१—रिश्वतखोर- चोर, डाकू, शेर, सांप, संखिया तथा आग से ज्यादह खतरनाक है।

२—पंचायती शक्ति दो प्रकार के दुःखियाओं के लिये भगवान से दूसरे नम्बर पर सच्चा सहारा है।

३—पंचायत की शक्ति रिश्वतखोरों ने छिन्न भिन्न करदी।

४—बुरे आदमी की कामयाबी पंचायत के छिन्न भिन्न होने में है।

५—पंचायती शक्ति जुल्मों का निवारण करने वाली है।

६—पंचायत के फैसले से ही घायल आत्मा शान्त हो सकती है।

७—दुःख में बिना बुलाये सुखमें जाओ बुलाने पर।

८—मरने के डर से कभी भी पाप कर्म को नहीं सहन करना चाहिये।

९—औरों की बुराई न देखो, अपनी ही बुराई देखने में भला है।

१०—तेरा वैरी कोई नहीं तेरे वैरी फैल।
अपने फैल को छोड़कर कर गली २ की सैर॥

११—अपने से निर्बलों पर जुल्म करके भगवान को रुठाना है।

१२ रिश्वतखोर, चोर डाकू की आत्मा पत्थर से भी सख्त होती जाती है।

१३—जुल्म करना पाप है जुल्म सहकर जीना महा पाप है।

॥ ओ३म् ॥

"श्री वियोगी हरि जी का पत्र"

हरिजन निवास
दिल्ली २७-६-४०

श्रद्धेय भक्त जी,

सादर प्रणाम । पत्र मिला । कल मैंने पूज्य बापू (महात्मा जी) को सब हाल सुना दिया था । यह बड़ा सुन्दर संयोग होगा कि आपका और बापू जी का मिलन हो जाये ।

आप हर हालत में कल २८ तारीख को ज़रूर आजाइये । मेरा यह भी आग्रह है कि "हरिजन निवास" में ही पूज्य बापू जी की कुटी में आप तथा स्वामी जी महाराज ठहरने की कृपा करें । बापू जी से मिलकर सब मामला ठीक पूरा हो जावेगा । अवश्य आने की कृपा करें ।

आपका—
वियोगी हरि



* ओ३म् *

हरिजन सेवक—
१९-१०-४०

एक पवित्र अनशन

दिल्ली और लाहौर के कुछ दैनिक पत्रों में हिसार ज़िले के हरिजनों के एक कूंए के सम्बन्ध में हरियाणा इलाके के एक प्रसिद्ध कार्य कर्ता भक्त फूलसिंह जी के चिंता कारक अनशन का समाचार लोगों ने पढ़ा होगा। हरिजन सेवक संघ की तरफ से इस मामले के सम्बन्ध में मेरा तीन बार जाना हुआ हरिजन सेवक के पाठकों के लिए इस सुखांत प्रसङ्ग का वर्णन मैं न दूं यह कैसे हो सकता है। शुरु में उक्त कूंए तथा मोठ ग्राम का संक्षिप्त में परिचय दे दूं। मोठ गांव हिसार ज़िले की हांसी तहसील में है गांव का रकबा २७००० कच्चा बीघा है। जिसमें २३००० बीघा तो सर छाजूराम की जमींदारी का है और बाकी ४००० बीघा ज़मीन रांघड़ों व जाटों की है। रांघड़ों के लग भग तीन सौ घर तथा दो सौ घर अन्य कौमों के हैं। चार मास का अर्सा हुआ मोठ के चमारों ने कलकत्ते के प्रसिद्ध व्यापारी सर छाजूराम साहब के एक कारिन्दे की आज्ञा से वहां एक कूंआ खोदना शुरु किया। हरिजनों को पीने के पानी का यहां भारी कष्ट रहता था

भिश्ती या कहार उनके घड़ों में दूर से पानी डाल दिया करते थे। और जैसा कि इस इलाके में रिवाज है उन्हें हर रोज़ पाव सेर से लेकर आध सेर तक अनाज किसी भिश्ती या कहार के लिए देना पड़ता था। शामलात की ज़मीन में उन्होंने कारिन्दे की आज्ञा से कूंआ खोदा और भाग्य से पानी भी उसका मीठा निकला नीमचक डाल कर कूंए की चिनवाई शुरु करदी गई मगर निजी ईर्षा के कारण रांघड़ों (मुसलमान राजपूतों) और चन्द जाटों को इस कूंए का बनना सहन न हुआ और दोनों ने मिल कर उसका बनना रोक दिया। उनका नीमचक कूंए से बाहर निकाल कर फेंक दिया चमार रपट लिखाने गये तो थाने में उन गरीबों की कोई सुनाई न हुई। रांघड़ों और चन्द जाटों की सम्मिलित शक्ति के आगे हरिजन दब गये। और कूंआ उसी तरह महीनों झमेले में पड़ा रहा। संघ की तरफ से एक सज्जन को मोठ भेजा गया और उन्होंने रांघड़ों और जाटों को हरिजनों के साथ न्याय करने को समझाया। पर मामला कुछ सुलझा नहीं। चमार बिचारे हताश होकर घर बैठ गये। गत १ सितम्बर की सायंकाल भक्त फूलसिंह जी जिनका सङ्क्षिप्त परिचय मैं आगे दूंगा। इस विपदा को सुन कर मोठ पहुँचे। रांघड़ों और जाटों को उन्होंने कूंए के बारे में

दो तीन दिन काफी समझाया । पर उनके उपदेश का उन लोगों पर कोई असर न पड़ा । आखिर कोई शकल कूंए की बनती न देख कर भक्त जी ने ५ सितम्बर सन् १६४० को सारे गांव की एक पंचायत बुलाई और जल कष्ट पीड़ित हरिजनों की खातिर कूंआ बनवा देने की उन सब से प्रार्थना की । लेकिन उनकी हालत पर किसी को भी रहम नहीं आया । भक्त जी को यह पानी का दारुण कष्ट असह्य लगा । उनका हृदय रो उठा । उन्होंने पंचायत के आगे यह प्रतिज्ञा की कि जब तक यह कूंआ नहीं बन जाता और हमारे हरिजन भाई इसका पानी अपने हाथ से खींच नहीं पी लेते तब तक मैं भोजन ग्रहण नहीं करूंगा । ७ तारीख की रात को गांव के कुछ अज्ञानी लोगों ने भक्त जी को बल पूर्वक मोठ से निकाल कर बाहर कर दिया व्रत का वह चौथा दिन था और रात को उन्हें ज़ालिमाना तरीके से गांव के बाहर छोड़ दिया गया । ६ तारीख को वे मोठ से चार मील दूर नारनौंद गांव पहुँचे यह गांव काफी बड़ा है । यहां पुलिस का थाना भी है । गांव की चौपाल में लोगों ने उन्हें बड़े प्रेम से आश्रय दिया । चौपाल दो तीन दिन के भीतर ही एक महान तीर्थ स्थान बन गया । दर्शनार्थियों की संख्या रोज बढ़ने लगी । देश के चारों तरफ के लोगों के हृदय

में हरिजन भाईयों के प्रति प्रेम और उदारता की भावना जागृत होने लगी। पंजाब सरकार के पारलियामेंट्री सैक्रेटरी चौ० टीकाराम, चौ० सूरजमल एम. एल. ए तथा अन्य अनेक जाट व कुछ मुसलमान मुखिया गांव वालों को समझाने के लिए १२ तारीख को मोठ गये। पचायत भी हुई कुछ आशा भी दिखाई दी कि मामला शायद कुछ सुलझ जाय, पर अन्त में कोई रास्ता न निकला। पंचायत विफल रही। मैंने श्री भक्त जी का पहली बार जब दर्शन किया उस दिन उनको अनशन करते हुए पन्दरह दिन होगये थे। चेहरा प्रफुल्लित था और हृदय प्रेम और धर्म श्रद्धा से परिपूर्ण था। मुझे उनका अनशन केवल धर्म बुद्धि से प्रेरित मालूम हुआ क्रोध या द्वेष देखने में न था। उस दिन उन्होंने जो वक्तव्य लिखा था उसमें कहा कि मौजूदा वक्त में नागहानी आफतों से बचाने के लिए हिन्दू मुसलमानों को संगठन की सख्त ज़रूरत है। भगवान आप साहिबान को बल देवे। कि आपके प्रेम और भाई चारे की ताकत मुसल-मान रांघड़ों को आपका सच्चा भाई बना दे ताकि सारे गिरदोनवाह में शान्ति की लहर पैदा हो जाय और एक दूसरे की खुशी व ग़मी में शरीक होना सब अपना परम धर्म समझें। इस लिए मोठ गांव में जाने वाले भाई लाठी

वगैरा बिल्कुल न ले जावें। ५० साल से बड़ी उमर के ही वहां जावें क्रोधी स्वभाव के हरगिज न जावें जो जावें वह अपनी जबान पर पूरा संयम रखें। आप लोग मुझे उसी ढंग से बचा सकते हैं। इस के बरखिलाफ अपनी ताक़त के आधार पर वहां आप लोग कोई जोशीले या लड़ाई झगड़ा पैदा करने वाले शब्द कहेंगे तो आप अपनी ना समझी से मुझे खुद ही अपने हाथों मार देंगे। गद् गद् वाणी से मुझे बोले "मुझे भरोसा है कि भगवान मेरी टेक निभावेंगे। आप लोग मेरी कोई चिन्ता न करें। मैं तो केवल आपकी शुभ कामना और आशीर्वाद चाहता हूँ। भक्त वत्सल भगवान ने अपने जन की टेक निभादी भक्त जी का प्रण पूरा हुआ। जनता का प्रेम पूर्ण सहयोग तो रहा ही। पंजाब सरकार ने भी अपना ठीक ठीक प्रभाव डाला। परिणाम स्वरूप २३ सितम्बर सन् १९४० को उन्होंने अपना अनशन खोल दिया। भक्त जी के गुरु श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी के पत्र में अनशन भग के चिर स्मरणीय समय का सुन्दर अंश नीचे उद्धृत करता हूँ। श्री भक्त जी को डोली में बैठा कर लगभग दो सौ आदमी २३ तारीख को सायं चार बजे के करीब दिन के समय मोठ ले गये। वहां भक्त जी ने हरिजनों के लिए बने कूंए का अवलोकन कर उसके जल से आचमन किया और

फिर उन का वक्तव्य पढ़ कर सबको सुनाया गया। तदनन्तर उनकी डोली मुसलमान भाईयों की उस चौपाल पर पहुँचाई गई जहां से वे निकाल दिये गये थे। वहां उस मुसलमान भाई ने सन्तरे का रस निकाल कर भक्त जी को पिलाने से पहले गले लगाया और उस जवान की आंखों से प्रेमाश्रु बह निकले। उसे अपने कृत्य पर जो पश्चाताप हुआ वह दर्शन से ही अनुभव की चीज़ थी उसका वर्णन लेखनी की शक्ति से बाहर है। फिर उस जवान ने रस पिलाया। और करनाल के मुसलमान सज्जन ने हिन्दू मुस्लिम एकता पर व्याख्यान दिया। बाद को भक्त जी की डोली उनके साथियों सहित मोठ से नारनौंद के लिए रवाना हुई। भक्त जी निर्बल अधिक हो गये थे कितना सुन्दर और पुनीत दृश्य रहा होगा वह, और कैसा कंचन बरस रहा होगा मोठ गांव में जब अक्रोधेन जयेत् क्रोध" का ज्वलन्त उदाहरण भक्तजी ने उसदिन उपस्थित किया। अज्ञान वश जिन मुसलमानों ने उनको अपनी चौपाल से अनशन करते हुए निकाला था उसी चौपाल में उन में से एक मुसलमान भाई ने ही प्रेम और तप से द्रवीभूत होकर

उन्हें अपने हाथ से सन्तरे का रस पिलाया। हरियाणा इलाके के सब हिन्दू मुसलमान भाईयों से प्रार्थना करते हुए भक्त जी ने कहा अगर आप भगवान से घी दूध वगैरा की बारिश अपने घरों में होती देखना चाहते हैं तो प्रभु के प्यारे पुत्रों को सच्चा सेवक समझ कर अपने कूंओं से मन चाहा पानी लेने की सहूलियत जल्दी से जल्दी दें।

वियोगी हरि



॥ ओ३म् ॥

महात्मा गांधी का पवित्र अनशन पर धन्यवाद

हरिजन सेवक
२६-१०-१९४०

मुझे श्री वियोगी हरि जी के पत्रों से भक्त फूलसिंह जी के पवित्र अनशन व्रत का सब समाचार मिला। भक्त जी के हृदय में हरिजनों प्रति किये गये अन्याय का गहरा दुःख था। उनकी दोनों पक्षों के प्रति शुभ कामना थी। हरिजनों को पीने के पानी का बड़ा कष्ट था इसे दूर करने के लिए उन्हें अनशन व्रत करना पड़ा।

इनका अनशन व्रत मोठ के मुसलमान रांघड़ों तथा जाटों को, अपने पवित्र प्रेम से उन्हें सच्चा रास्ता दिखाने का था। यह व्रत केवल धर्म बुद्धि से तथा सच्चे ईश्वर विश्वास पर किया गया था। व्रत काल में अनेकों बार असफलता के बादल मंडलाए परन्तु भक्त जी का धैर्य और ईश्वर विश्वास प्रबल था। भगवान की ज्योति में वे अपनी सफलता देखते थे। समय आया, वे अपने व्रत में सफल हुए। मेरे राजकोट के अनशन व्रत में विश्वास की कमी थी। प्रतिकूल स्थिति ने मेरे मन को हिला दिया जिससे मैं अपने व्रत में असफल रहा।

एम. के. गान्धी

॥ ओ३म् ॥

पूज्य महात्मा गांधी जी की सेवामें लिखित पत्र

गुरुकुल मैंसवाल
१७-३-५०

श्री पूज्य महात्मा जी !

सादर नमस्ते ।

जब मैं मोठ गांव में हरिजनों के कूंए के निमित्त मरण अनशन व्रत किये हुए था उस समय बात चीतों तथा पत्रों द्वारा मेरे व्रत को अनुचित बतलाया गया उनकी ये युक्तियां हैं।

१-इससे अपने प्रतिद्वन्दी पर अनुचित दबाव डाला जाता है।

२-इस प्रकार कार्य सिद्धि में शास्त्रों में प्रमाण नहीं है।

३-आपका जीवन समाज तथा देश का है इस प्रकार इसको नष्ट करना आपका अधिकार नहीं है।

४-कार्य सिद्धि का यह उपाय ग़लत है।

परन्तु मुझे इस उपाय में शान्ति प्राप्त होती है जब२ मैंने इस व्रत को कि... त सफलता मिली है।

इस विषय में अ... उसे लिखें उसके बाद मैं भी लोगों को ठीक२ उत्तर देना चाहता हूं।

आपका सेवक
फूलसिंह वान प्रस्थी